लूका

1 बहुत से लोगों ने हमारे बीच घटी बातों का ब्यौरा
लिखने का प्रयत्न किया। 2वे ही बातें हमें उन लोगों
द्वारा बतायी गयीं, जिन्होंने उन्हें प्रारम्भ से ही घटते देखा
था और जो सुसमाचार के प्रचारक रहे थे। 3हे मान्यवर
थियुफिलुस! क्योंकि मैंने प्रारम्भ से ही सब कुछ का
बड़ी सावधानी से अध्ययन किया है इसलिए मुझे यह
उचित जान पड़ा कि मैं भी तुम्हारे लिये इसका एक
क्रमानुसार विवरण लिखूँ। 4जिससे तुम उन बातों की
निश्चिंतता को जान लो जो तुम्हें सिखाई गयी हैं।

जकरयाह और इलीशिबा

5उन दिनों जब यहूदिया पर हेरोदेस का राज था वहाँ
जकरयाह नाम का एक यहूदी याजक हुआ करता था।
जो उपासकों के अबिय्याह समुदाय* का था उसकी
पत्नी का नाम इलीशिबा था और वह हारुन के परिवार
से थी। 6वे दोनों ही धर्मी थे। वे बिना किसी दोष के प्रभु
के सभी आदेशों और नियमों का पालन करते थे।
7किन्तु उनके कोई संतान नहीं थी, क्योंकि इलीशिबा
बाँझ थी और वे दोनों ही बहुत बूढ़े हो चले थे।

8जब जकरयाह के समुदाय के मंदिर में याजक के
काम की बारी थी, और वह परमेश्वर के सामने
उपासना के लिये उपस्थित था। 9तो याजकों में चली आ
रही परम्परा के अनुसार पर्ची डालकर उसे चुना गया
कि वह प्रभु के मंदिर में जाकर धूप जलाये। 10जब धूप
जलाने का समय आया तो बाहर इकट्ठे हुए लोग प्रार्थना
कर रहे थे।

11उसी समय जकरयाह के सामने प्रभु का एक दूत
प्रकट हुआ। वह धूप की वेदी के दाहिनी ओर खड़ा
था। 12जब जकरयाह ने उस दूत को देखा तो वह घबरा
गया और भय ने जैसे उसे जकड़ लिया हो। 13फिर प्रभु
के दूत ने उससे कहा, "जकरयाह डर मत, तेरी प्रार्थना
सुन ली गयी है। इसलिये तेरी पत्नी इलीशिबा एक पुत्र
को जन्म देगी, तू उसका नाम यूहन्ना रखना। 14वह
तुम्हें आनन्द और प्रसन्नता देगा ही, साथ ही उसके
जन्म से और भी बहुत से लोग प्रसन्न होंगे। 15क्योंकि
वह प्रभु की दृष्टि में महान होगा। वह कभी भी किसी
दाखरस या किसी भी मदिरा का सेवन नहीं करेगा।
अपने जन्म काल से ही वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण
होगा। 16वह इस्राएल के बहुत से लोगों को उनके प्रभु
परमेश्वर की ओर लौटने को प्रेरित करेगा। 17वह
एलिय्याह की शक्ति और आत्मा में स्थित हो प्रभु के
आगे आगे चलेगा। वह पिताओं का हृदय उनकी
संतानों की ओर वापस मोड़ देगा और वह आज्ञा ना
मानने वालों को ऐसे विचारों की ओर प्रेरित करेगा
जिससे वे धर्मियों के जैसे विचार रखें। यह सब, वह
लोगों को प्रभु की खातिर तैयार करने के लिए करेगा।"

18तब जकरयाह ने प्रभु के दूत से कहा, "मैं यह कैसे
जानूँ कि यह सच है? क्योंकि मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ
और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो चली है।"

19तब प्रभु के दूत ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "मैं
जिब्राईल हूँ। मैं वह हूँ जो परमेश्वर के सामने खड़ा
रहता हूँ। मुझे तुझ से बात करने और इस सुसमाचार
को बताने को भेजा गया है। 20किन्तु देख! क्योंकि तूने
मेरे शब्दों पर, जो निश्चित समय आने पर सत्य सिद्ध
होंगे, विश्वास नहीं किया, इसलिये तू गूँगा हो जायेगा
और उस दिन तक नहीं बोल पायेगा जब तक यह पूरा
न हो ले।"

21उधर बाहर लोग जकरयाह की प्रतीक्षा कर रहे
थे। उन्हें अचरज हो रहा था कि वह इतनी देर मन्दिर
में क्यों रुका हुआ है। 22फिर जब वह बाहर आया तो
उनसे बोल नहीं पा रहा था। उन्हें लगा जैसे मन्दिर के
भीतर उसे कोई दर्शन हुआ है। वह गूँगा हो गया था
और केवल संकेत कर रहा था। 23और फिर ऐसा हुआ
कि जब उसका उपासना का समय पूरा हो गया तो वह
वापस अपने घर लौट गया। 24थोड़े दिनों बाद उसकी
पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई। पाँच महीने तक वह सबसे
अलग थलग रही। उसने कहा,

25"अब अन्त में जाकर इस प्रकार प्रभु ने मेरी सहायता
की है। लोगों के बीच मेरी लाज रखने को उसने मेरी
सुधि ली।"

कुँवारी मरियम

26इलीशिबा को जब छठा महीना चल रहा था, गलील
के एक नगर नासरत में परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूत जिब्राईल

समुदाय यहूदी याजकों को 24 समुदायों में बाँटा गया था। देखें 1 इति. 24:7-18

को 27एक कुँवारी के पास भेजा गया जिसकी यूसुफ़ नाम के एक व्यक्ति से सगाई हो चुकी थी। वह दाऊद का वंशज था। और उस कुँवारी का नाम मरियम था। 28जिब्राईल उसके पास आया और बोला, "तुझ पर अनुग्रह हुआ है, तेरी जय हो। प्रभु तेरे साथ हैं।"

29यह वचन सुन कर वह बहुत घबरा गयी, वह सोच में पड़ गयी कि इस अभिवादन का अर्थ क्या हो सकता है?

30तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मरियम, डर मत, तुझ से परमेश्वर प्रसन्न है। 31सुन! तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम यीशु रखेगी। 32वह महान, होगा और वह परम परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा। और प्रभु परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन प्रदान करेगें। 33वह अनन्त काल तक याकूब के घराने पर राज करेगा तथा उसके राज्य का अंत कभी नहींहोगा।"

34इस पर मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह सत्य कैसे हो सकता है? क्योंकि मैं तो अभी कुँवारी हूँ!"

35उत्तर में स्वर्गदूत ने उससे कहा, "तेरे पास पवित्र आत्मा आयेगा और परम प्रधान (परमेश्वर) की शक्ति तुझे अपनी छाया में ले लेगी। इस प्रकार वह जन्म लेने वाला पवित्र बालक परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा। 36और यह भी सुन कि तेरे ही कुनबे की इलीशिबा के गर्भ में भी बुढ़ापे में एक पुत्र है और उसके गर्भ का यह छठा महीना है। लोग कहते थे कि वह बाँझ है। 37किन्तु परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।"

38मरियम ने कहा, "मैं प्रभु की दासी हूँ। जैसा तूने मेरे लिये कहा है, वैसा ही हो!" और तब वह स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

जकरयाह और इलीशिबा के पास मरियम का जाना

39उन्हीं दिनों मरियम तैयार होकर तुरन्त यहूदिया के पहाड़ी प्रदेश में स्थित एक नगर को चल दी। 40फिर वह जकरयाह के घर पहुँची और उसने इलीशिबा को अभिवादन किया। 41हुआ यह कि जब इलीशिबा ने मरियम का अभिवादन सुना तो जो बच्चा उसके पेट में था, उछल पड़ा और इलीशिबा पवित्र आत्मा से अभिभूत हो उठी। 42ऊँची आवाज में पुकारते हुए वह बोली, "तू सभी स्त्रियों में सबसे अधिक भाग्यशाली है और जिस बच्चे को तू जन्म देगी, वह धन्य है। 43किन्तु यह इतनी बड़ी बात मेरे साथ क्यों घटी कि मेरे प्रभु की माँ मेरे पास आयी! 44क्योंकि तेरे अभिवादन का शब्द जैसे ही मेरे कानों में पहुँचा, मेरे पेट का बच्चा खुशी से उछल पड़ा। 45तू धन्य है, जिसने यह विश्वास किया कि प्रभु ने जो कुछ कहा है वह हो कर रहेगा।"

मरियम द्वारा परमेश्वर की स्तुति

46 तब मरियम ने कहा,

47"मेरी आत्मा प्रभु (परमेश्वर) की स्तुति करती है;
मेरी आत्मा मेरे रखवाले परमेश्वर में आनन्दित है।
48उसने अपनी दीन दासी की सुधि ली, हाँ आज के
बाद सभी मुझे धन्य कहेंगे।
49क्योंकि उस शक्तिशाली ने मेरे लिये महान कार्य
किये। उसका नाम पवित्र है।
50जो उससे डरते हैं वह उन पर पीढ़ी दर पीढ़ी दया
करता है। 51उसने अपने हाथों की शक्ति दिखाई। उसने
अहंकारी लोगों को उनके अभिमानपूर्ण विचारों के
साथ तितर-बितर कर दिया।
52उसने सम्राटों को उनके सिंहासनों से नीचे उतार
दिया। और उसने विनम्र लोगों को ऊँचा उठाया।
53उसने भूखे लोगों को अच्छी वस्तुओं से भरपूर
कर दिया और धनी लोगों को खाली हाथों लौटा दिया।
54वह अपने दास इस्राएल की सहायता करने आया
हमारे पुरखों को दिये वचन के अनुसार
55उसे इब्राहीम और उसके वंशजों पर सदा सदा दया
दिखाने की याद रही।"

56मरियम कोई तीन महीने तक इलीशिबा के साथ ठहरी और फिर अपने घर लौट आयी।

यूहन्ना का जन्म

57फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का समय आया और उसके घर एक पुत्र पैदा हुआ। 58जब उसके पड़ोसियों और उसके परिवार के लोगों ने सुना कि प्रभु ने उस पर दया दर्शायी है तो सबने उसके साथ मिल कर हर्ष मनाया।

59और फिर ऐसा हुआ कि आठवें दिन बालक का ख़तना करने के लिए लोग वहाँ आये। वे उसके पिता के नाम के अनुसार उसका नाम जकरयाह रखने जा रहे थे, 60तभी उसकी माँ बोल उठी, "नहीं, इसका नाम तो यूहन्ना रखा जाना है।"

61तब वे उससे बोले, "तुम्हारे किसी भी सम्बन्धी का यह नाम नहीं है।" 62और फिर उन्होंने संकेतों में उसके पिता से पूछा कि वह उसे क्या नाम देना चाहता है?

63इस पर जकरयाह ने उनसे लिखने के लिये एक तख्ती माँगी और लिखा, "इसका नाम है यूहन्ना।" इस पर वे सब अचरज में पड़ गये। 64तभी तत्काल उसका मुँह खुल गया और उसकी वाणी फूट पड़ी। वह बोलने लगा और परमेश्वर की स्तुति करने लगा। 65इससे सभी पड़ोसी डर गये और यहूदिया के सारे पहाड़ी क्षेत्र में लोगों में इन सब बातों की चर्चा होने लगी। 66जिस किसी ने भी यह बात सुनी, अचरज में पड़कर कहने लगा, "यह बालक क्या बनेगा?" क्योंकि प्रभु का हाथ उस पर है।

जकरयाह की स्तुति

67तब उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से अभिभूत
हो उठा और उसने भविष्यवाणी की:
68"इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की जय हो क्योंकि
वह अपने लोगों की सहायता के लिए आया और उन्हें
स्वतन्त्र कराया।
69उसने हमारे लिये अपने सेवक दाऊद के परिवार
से एक रक्षक प्रदान किया।
70जैसा कि उसने बहुत पहले अपने पवित्र
भविष्यवक्ताओं के द्वारा वचन दिया था।
71उसने हमें हमारे शत्रुओं से और उन सब के हाथों
से, जो हमें घृणा करते थे, हमारे छुटकारे का वचन
दिया था।
72हमारे पुरखों पर दया दिखाने का और अपने पवित्र
वचन को याद रखने का।
73उसका वचन था एक वह शपथ जो हमारे पूर्वज
इब्राहीम के साथ ली गयी थी
74कि हमारे शत्रुओं के हाथों से हमारा छुटकारा हो
और बिना किसी डर के प्रभु की सेवा करने की
अनुमति मिले।
75और अपने जीवन भर हर दिन उसके सामने हम
पवित्र और धर्मी रह सकें।
76"हे बालक, अब तू परम प्रधान (परमेश्वर) का
नबी कहलायेगा क्योंकि तू प्रभु के आगे-आगे चल
कर उसके लिए राह तैयार करेगा।
77और उसके लोगों से कहेगा कि उनके पापों की
क्षमा द्वारा उनका उद्धार होगा।
78हमारे परमेश्वर के कोमल अनुग्रह से एक नये
दिन का प्रभात हम पर ऊपर से उतरेगा।
79उन पर चमकने के लिये जो मौत की गहन छाया
में जी रहे हैं ताकि हमारे चरणों को शांति के मार्ग की
दिशा मिले।"
80इस प्रकार वह बालक बढ़ने लगा और उसकी
आत्मा दृढ़ से दृढ़तर होने लगी। वह जनता में प्रकट
होने से पहले तक निर्जन स्थानों में रहता रहा।

यीशु का जन्म
(मत्ती 1:18-25)

2 उन्हीं दिनों औगुस्तुस कैसर की ओर से एक आज्ञा
निकली कि सारे रोमी जगत की जनगणना अंकित
की जाये। 2यह पहली जनगणना थी। यह उन दिनों हुई
थी जब सीरिया का राज्यपाल क्विरिनियुस था। 3सो
गणना के लिए हर कोई अपने अपने नगर गया।
4यूसुफ भी, क्योंकि वह दाऊद के परिवार एवं वंश
से था, इसलिये वह भी गलील के नासरत नगर से
यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया। 5वह वहाँ
अपनी मँगेतर मरियम के साथ, जो गर्भवती भी थी,
अपना नाम लिखवाने गया था। 6ऐसा हुआ कि अभी
जब वे वहीं थे, मरियम का बच्चा जनने का समय आ
गया। 7और उसने अपने पहले पुत्र को जन्म दिया।
क्योंकि वहाँ सराय के भीतर उन लोगों के लिये कोई
स्थान नहीं मिल पाया था इसलिए उसने उसे कपड़ों में
लपेट कर चरनी में लिटा दिया।

यीशु के जन्म की सूचना

8तभी वहाँ उस क्षेत्र में बाहर खेतों में कुछ गडरिये थे
जो रात के समय अपने रेवड़ों की रखवाली कर रहे
थे। 9उसी समय प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके सामने
प्रकट हुआ और उनके चारों ओर प्रभु का तेज प्रकाशित
हो उठा। वे सहम गए। 10तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा,
"डरो मत, मैं तुम्हारे लिये अच्छा समाचार लाया हूँ,
जिससे सभी लोगों को महान आनन्द होगा। 11क्योंकि
आज दाऊद के नगर में तुम्हारे उद्धारकर्ता प्रभु मसीह
का जन्म हुआ है। 12तुम्हें उसे पहचानने का चिह्न होगा
कि तुम एक बालक को कपड़ों में लिपटा, चरनी में
लेटा पाओगे।"
13उसी समय अचानक उस स्वर्गदूत के साथ बहुत से
और स्वर्गदूत वहाँ उपस्थित हुए। वे यह कहते हुए प्रभु
की स्तुति कर रहे थे,
14"स्वर्ग में परमेश्वर की जय हो और धरती पर
उन लोगों को शांति मिले जिनसे वह प्रसन्न है।"
15और जब स्वर्गदूत उन्हें छोड़कर स्वर्ग लौट गये तो
वे गड़ेरिये आपस में कहने लगे "आओ हम बैतलहम
चलें और जो घटना घटी है और जिसे प्रभु ने हमें बताया
है, उसे देखें।"
16सो वे शीघ्र ही चल दिये और वहाँ जाकर उन्होंने
मरियम और यूसुफ को पाया और देखा कि बालक
चरनी में लेटा हुआ है। 17गडरियों ने जब उसे देखा तो
इस बालक के विषय में जो संदेश उन्हें दिया गया था,
उसे उन्होंने सब को बता दिया। 18जिस किसी ने भी
उन्हें सुना, वे सभी गड़ेरियों की कही बातों पर आश्चर्य
करने लगे। 19किन्तु मरियम ने इन सब बातों को अपने
मन में बसा लिया और वह उन पर जब तब विचार
करने लगी। 20उधर वे गड़ेरिये जो कुछ उन्होंने सुना था
और देखा था, उस सब कुछ के लिए परमेश्वर की
महिमा और स्तुति करते हुए अपने अपने घरों को लौट
गये।
21और जब बालक के ख़तने का आठवाँ दिन आया
तो उस का नाम यीशु रखा गया। उसे यह नाम उसके
गर्भ में आने से भी पहले स्वर्गदूत द्वारा दे दिया गया था।

यीशु मन्दिर में अर्पित

22और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार सूतक के
दिन पूरे हुए और शुद्ध होने का समय आया तो वे यीशु

को प्रभु को समर्पित करने के लिये यरूशलेम ले गये।
23प्रभु की व्यवस्था में लिखे अनुसार, "हर पहली नर
सन्तान प्रभु को समर्पित मानी जाएगी।"* 24और प्रभु
की व्यवस्था कहती है, "एक जोड़ी कपोत या कबूतर
के दो बच्चे बलि चढ़ाने चाहिए", इसलिए वे व्यवस्था
के अनुसार बलि चढ़ाने ले गये।

शमौन को यीशु का दर्शन

25यरूशलेम में शमौन नाम का एक धर्मी और भक्त
व्यक्ति हुआ करता था। वह इस्राएल के सुख–चैन की
बाट जोहता रहता था। पवित्र आत्मा उसके साथ था।
26पवित्र आत्मा द्वारा उसे प्रकट किया गया था कि जब
तक वह प्रभु के मसीह के दर्शन नहीं कर लेगा, मरेगा
नहीं। 27वह आत्मा से प्रेरणा पाकर मंदिर में आया और
जब व्यवस्था के विधि के अनुसार कार्य के लिये बालक
यीशु को उसके माता–पिता मंदिर में लाये। 28तो शमौन
यीशु को अपनी गोद में उठा कर परमेश्वर की स्तुति
करते हुए बोला:

29"प्रभु, अब तू अपने वचन के अनुसार मुझ अपने
दास को शांति के साथ मुक्त कर। 30क्योंकि मैं अपनी
आँखों से तेरे उस उद्धार का दर्शन कर चुका हूँ।
31जिसे तूने सभी लोगों के सामने तैयार किया है।
32यह बालक ग़ैर यहूदियों के लिए तेरे मार्ग को
उजागर करने के हेतु प्रकाश का स्रोत है और तेरे
अपने इस्राएल के लोगों के लिये यह महिमा है।"

33उसके माता–पिता यीशु के लिए कही गयी इन
बातों से अचरज में पड़ गये। 34फिर शमौन ने उन्हें
आशीर्वाद दिया और उसकी माँ मरियम से कहा, "यह
बालक इस्राएल में बहुतों के पतन या उत्थान का कारण
बनने और एक ऐसा चिन्ह ठहराया जाने के लिए निर्धारित
किया गया है जिसका विरोध किया जायेगा। 35और
तलवार से यहां तक कि तेरा अपना प्राण भी छिद
जायेगा जिससे असंख्य हृदयों के भाव प्रकट हो जायें।"

हन्नाह द्वारा यीशु के दर्शन

36वहीं हन्नाह नाम की एक महिला नबी थी। वह
अशेर कबीले के फनूएल की पुत्री थी। वह बहुत बूढ़ी
थी। अपने विवाह के बस सात साल बाद तक ही वह
पति के साथ रही थी। 37और फिर चौरासी वर्ष तक
वह वैसे ही विधवा रही। उसने मंदिर कभी नहीं छोड़ा।
उपवास और प्रार्थना करते हुए वह रात–दिन उपासना
करती रहती थी। 38उसी समय वह उस बच्चे और
माता–पिता के पास आई। उसने परमेश्वर को धन्यवाद
दिया और जो लोग यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोह
रहे थे, उन सब को उस बालक के बारे में बताया।

यूसुफ और मरियम का घर लौटना

39प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सारा अपेक्षित विधि–
विधान पूरा करके वे गलील में अपने नगर नासरत
लौट आये। 40उधर वह बालक बढ़ता एवं हृष्ट–पुष्ट
होता गया। वह बहुत बुद्धिमान था और उस पर परमेश्वर
का अनुग्रह था।

बालक यीशु

41फ़सह पर्व पर हर वर्ष उसके माता–पिता यरूशलेम
जाया करते थे। 42जब वह बारह साल का हुआ तो सदा
की तरह वे पर्व पर गये। 43जब पर्व समाप्त हुआ और
वे घर लौट रहे थे तो यीशु वहीं यरूशलेम में रह गया
किन्तु माता–पिता को इसका पता नहीं चल पाया।
44यह सोचते हुए कि वह दल में कहीं होगा, वे दिन भर
यात्रा करते रहे। फिर वे उसे अपने संबन्धियों और
मित्रों के बीच खोजने लगे। 45और जब वह उन्हें नहीं
मिला तो उसे ढूँढते ढूँढते वे यरूशलेम लौट आये। 46और
फिर हुआ यह कि तीन दिन बाद वह उपदेशकों के
बीच बैठा, उन्हें सुनता और उनसे प्रश्न पूछता मंदिर में
उन्हें मिला। 47वे सभी जिन्होंने उसे सुना था, उसकी
सूझबूझ और उसके प्रश्नोत्तरों से आश्चर्यचकित थे।
48जब उसके माता–पिता ने उसे देखा तो वे दंग रह गये।
उसकी माता ने उससे पूछा, "बेटे, तुमने हमारे साथ ऐसा
क्यों किया? तेरे पिता और मैं तुझे ढूँढते हुए बुरी तरह
व्याकुल थे।"

49तब यीशु ने उनसे कहा, "आप मुझे क्यों ढूँढ रहे
थे? क्या तुम नहीं जानते कि मुझे मेरे पिता के घर में
ही होना चाहिये?"

50किन्तु यीशु ने उन्हें जो उत्तर दिया था, वे उसे
समझ नहीं पाये।

51फिर वह उनके साथ नासरत लौट आया और
उनकी आज्ञा का पालन करता रहा। उसकी माता इन
सब बातों को अपने मन में रखती जा रही थी। 52उधर
यीशु बुद्धि में, डील–डौल में और परमेश्वर तथा मनुष्यों
के प्रेम में बढ़ने लगा।

यूहन्ना का संदेश

(मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:1-8; यूहन्ना 1:19-28)

3 तिबिरियुस कैसर के शासन के पन्द्रहवें साल में
जब यहूदिया का राज्यपाल पुन्तियुस पिलातुस था
और उस प्रदेश के चौथाई भाग के राजाओं में हेरोदेस
गलील का, उसका भाई फिलिप्पुस इतूरैया और
त्रखोनीतिस का, तथा लिसानियास अबिलेने का अधीनस्थ
शासक था। 2और यूहन्ना तथा कैफा महायाजक थे,
तभी जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास जंगल में परेमश्वर
का वचन पहुँचा। 3सो यर्दन के आसपास के समूचे क्षेत्र
में घूम घूम कर वह पापों की क्षमा के लिये मन फिराव

"हर पहली ... मानी जाएगी" देखें निर्गमन 13:2, 2

के हेतु बपतिस्मा का प्रचार करने लगा। 4भविष्यवक्ता
यशायाह के वचनों की पुस्तक में जैसा लिखा है:
"किसी का जंगल में पुकारता हुआ शब्द: 'प्रभु के
लिये मार्ग तैयार करो और उसके लिये राहें सीधी करो।
5हर घाटी भर दी जायेगी और हर पहाड़ और पहाड़ी
सपाट हो जायेंगे टेढ़ी–मेढ़ी और ऊबड़–खाबड़ राहें
समतल कर दी जायेंगी
6और सभी लोग परमेश्वर के उद्धार का दर्शन करेंगे!"
यशायाह 40:3–5

7यूहन्ना उससे बपतिस्मा लेने आये अपार जन समूह
से कहता, "अरे साँप के बच्चो! तुम्हें किसने चेता दिया
है कि तुम आने वाले क्रोध से बच निकलो? 8परिणामों
द्वारा तुम्हें प्रमाण देना होगा कि वास्तव में तुम्हारा मन
फिरा है। और आपस में यह कहना तक आरंभ मत
करो कि 'इब्राहीम हमारा पिता है।' मैं तुमसे कहता हूँ
कि परमेश्वर इब्राहीम के लिये इन पत्थरों से भी बच्चे
पैदा करा सकता है। 9पेड़ों की जड़ों पर कुल्हाड़ा रखा
जा चुका है और हर उस पेड़ को जो उत्तम फल नहीं
देता, काट गिराया जायेगा और फिर उसे आग में झोंक
दिया जायेगा।"
10तब भीड़ ने उससे पूछा; "तो हमें क्या करना चाहिये?"
11उत्तर में उसने उनसे कहा, "जिस किसी के पास
दो कुर्ते हों, वह उन्हें, जिसके पास न हों, उनके साथ
बाँट लें। और जिसके पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही
करे।"
12फिर उन्होंने उससे पूछा, "हे गुरु, हमें क्या करना
चाहिये?"
13इस पर उसने उनसे कहा, "जितना चाहिये उससे
अधिक एकत्र मत करो।"
14कुछ सैनिकों ने उससे पूछा, "और हमें क्या करना
चाहिये?"
सो उसने उन्हें बताया, "बल पूर्वक किसी से धन मत
लो। किसी पर झूठा दोष मत लगाओ। अपने वेतन में
संतोष करो।"
15लोग जब बड़ी आशा के साथ बाट जोह रहे थे और
यूहन्ना के बारे में अपने मन में यह सोच रहे थे कि
कहीं यही तो मसीह नहीं है।
16तभी यूहन्ना ने यह कहते हुए उन सब को उत्तर
दिया: "मैं तो तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह
जो मुझ से अधिक सामर्थ्यवान है, आ रहा है। मैं उसके
जूतों की तनी खोलने योग्य भी नहीं हूँ। वह तुम्हें पवित्र
आत्मा और अग्नि द्वारा बपतिस्मा देगा। 17उसके हाथ
में फटकने की डाँगी है, जिससे वह अनाज को भूसे से
अलग कर अपने खलिहान में उठा कर रखता है।
किन्तु वह भूसे को ऐसी आग में झोंक देगा जो कभी
नहीं बुझने वाली।" 18इस प्रकार ऐसे ही और बहुत से
शब्दों से वह उन्हें समझाते हुए सुसमाचार सुनाया करता
था।

यूहन्ना के कार्य की समाप्ति

19(बाद में यूहन्ना ने उस चौथाई प्रदेश के अधीनस्थ
राजा हेरोदेस को उसके भाई की पत्नी हिरोदिआस के
साथ उसके बुरे सम्बन्धों और उसके दूसरे बुरे कर्मों के
लिए डाँटा फटकारा। 20इस पर हेरोदेस ने यूहन्ना को
बंदी बनाकर, जो कुछ कुकर्म उसने किये थे, उनमें
एक कुकर्म और जोड़ लिया।)

यूहन्ना द्वारा यीशु को बपतिस्मा
(मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11)

21ऐसा हुआ कि जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे थे तो
यीशु ने भी बपतिस्मा लिया। और जब यीशु प्रार्थना कर
रहा था, तभी आकाश खुल गया। 22और पवित्र आत्मा
एक कबूतर का देह धारण कर उस पर नीचे उतरा।
और आकाशवाणी हुई कि "तू, मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ
से बहुत प्रसन्न हूँ।"

यूसुफ की वंश परम्परा
(मत्ती 1:1-17)

23यीशु ने जब अपना सेवा कार्य आरम्भ किया तो
वह स्वयं लगभग तीस वर्ष का था। ऐसा सोचा गया कि
वह एली के बेटे यूसुफ का पुत्र था। 24एली जो मत्तात
का, मत्तात जो लेवी का, लेवी जो मलकी का, मलकी
जो यन्ना का, यन्ना जो यूसुफ का, 25यूसुफ जो मत्तित्याह
का, मत्तित्याह जो आमोस का, आमोस जो नहूम का,
नहूम जो असल्याह का, असल्याह जो नोगह का, 26नोगह
जो मात का, मात जो मत्तित्याह का, मत्तित्याह जो शिमी
का, शिमी जो योसेख का, योसेख जो योदाह का
27योदाह जो योनान का, योनान जो रेसा का, रेसा जो
जरुब्बाबिल का, जरुब्बाबिल जो शालतियेल का,
शालतियेल जो नेरी का, 28नेरी जो मलकी का, मलकी
जो अद्दी का, अद्दी जो कोसाम का, कोसाम जो इलमोदाम
का, इलमोदाम जो ऐर का, 29ऐर जो यहोशुआ का
यहोशुआ जो इलाज़ार का, इलाज़ार जो योरीम का,
योरीम जो मत्तात का, मत्तात जो लेवी का, 30लेवी जो
शमौन का, शमौन जो यहूदा का, यहूदा जो यूसुफ का,
यूसुफ जो योनान का, योनान जो इलियाकीम का,
31इलयाकीम जो मेलिया का, मेलिया जो मिन्ना का,
मिन्ना जो मत्तात का, मत्तात जो नातान का, नातान जो
दाऊद का, 32दाऊद जो यिशै का, यिशै जो ओबेद का,
ओबेद जो बोअज का, बोअज जो सलमोन का, सलमोन
जो नहशोन का, 33नहशोन जो अम्मीनादाब का,
अम्मीनादाब जो आदमीन का, आदमीन जो अरनी का,
अरनी जो हिस्रोन का, हिस्रोन जो फिरिस का, फिरिस

जो यहूदाह का, 34यहूदाह जो याकूब का, याकूब जो
इसहाक का, इसहाक जो इब्राहीम का, इब्राहीम जो
तिरह का, तिरह जो नाहोर का, 35नाहोर जो सरूग का,
सरुग जो रऊ का, रऊ जो फिलिग का, फिलिग जो
एबिर का, एबिर जो शिलह का,
36शिलह जो केनान का, केनान जो अरफक्षद का,
अरफक्षद जो शेम का, शेम जो नूह का, नूह जो लिमिक
का, 37लिमिक जो मथूशिलह का, मथूशिलह जो हनोक
का, हनोक जो यिरिद का, यिरिद जो महललेल का,
महललेल जो केनान का, 38केनान जो एनोश का,
एनोश जो शेत का, शेत जो आदम का और आदम जो
परमेश्वर का पुत्र था।

यीशु की परीक्षा

(मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12-13)

4 पवित्र आत्मा से भावित होकर यीशु यर्दन नदी से
लौट आया। आत्मा उसे वीराने में राह दिखाता
रहा। 2वहाँ शैतान ने चालीस दिन तक उसकी परीक्षा
ली। उन दिनों यीशु बिना कुछ खाये रहा। फिर जब वह
समय पूरा हुआ तो यीशु को बहुत भूख लगी।
3सो शैतान ने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र
है, तो इस पत्थर से रोटी बन जाने को कह।"
4इस पर यीशु ने उसे उत्तर दिया, "शास्त्र में लिखा है:
'मनुष्य केवल रोटी पर नहीं जीता।'"

व्यवस्था विवरण 8:3

5फिर शैतान उसे बहुत ऊँचाई पर ले गया और पल
भर में ही सारे संसार के राज्यों को उसे दिखाते हुए,
6शैतान ने उससे कहा, "मैं इन राज्यों का सारा वैभव
और अधिकार तुझे दे दूँगा क्योंकि वह मुझे दिया गया
है और मैं उसे जिसको चाहूँ दे सकता हूँ। 7सो यदि तू
मेरी उपासना करे तो यह सब तेरा हो जायेगा।"
8यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा, "शाख लिखा गया
है: 'तुझे बस अपने प्रभु परमेश्वर की ही उपासना
करनी चाहिये। तुझे केवल उसी की सेवा करनी चाहिए!'"

व्यवस्था विवरण 6:13

9तब वह उसे यरूशलेम ले गया और वहाँ मंदिर के
सबसे ऊँचे शिखर पर ले जाकर खड़ा कर दिया। और
उससे बोला, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो यहाँ से
अपने आप को नीचे गिरा दे! 10क्योंकि शाख लिखा है:
'वह अपने स्वर्गदूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा कि वे
तेरी रक्षा करें।'"

भजन संहिता 91:11

11और लिखा है: 'वे तुझे अपनी बाहों में ऐसे उठा लेंगे
कि तेरा पैर तक किसी पत्थर को न छुए।'"

भजन संहिता 91:12

12यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, "शास्त्र में यह भी
लिखा है:
'तुझे अपने प्रभु परमेश्वर को परीक्षा में नहीं डालना
चाहिये।'"

व्यवस्था विवरण 6:16

13सो जब शैतान उसकी सब तरह से परीक्षा ले चुका तो
उचित समय तक के लिये उसे छोड़ कर चला गया।

लोगों को यीशु का उपदेश

(मत्ती 4:12-17; मरकुस 1:14-15)

14फिर आत्मा की शक्ति से पूर्ण हो कर यीशु गलील
लौट आया और उस सारे प्रदेश में उसकी चर्चाएँ फैलने
लगी। 15वह उनकी धर्म-सभाओं में उपदेश देने लगा।
सभी उसकी प्रशंसा करते थे।
16फिर वह नासरत आया जहाँ वह पला-बढ़ा था।
और अपनी आदत के अनुसार सब्त के दिन वह यहूदी
धर्म सभागार में गया। जब वह पाठ पढ़ने खड़ा हुआ।
17तो यशायाह नबी की पुस्तक उसे दी गयी। उसने जब
पुस्तक खोली तो उसे वह स्थान मिला जहाँ लिखा था:
18"प्रभु का आत्मा मुझमें समाया है उसने मेरा
अभिषेक किया है ताकि मैं दीनों को सुसमाचार सुनाऊँ।
उसने मुझे बंदियों को यह घोषित करने के लिए कि वे
मुक्त है, अन्धों को यह सन्देश सुनाने को कि वे फिर
दृष्टि पायेंगे, दलितों को छुटकारा दिलाने को और
19प्रभु के अनुग्रह का समय बतलाने को भेजा है।"

यशायाह 61:1-2

20फिर उसने पुस्तक बंद करके सेवक को वापस दे
दी। और वह नीचे बैठ गया। प्रार्थना सभा में सब लोगों
की आँखें उसे ही निहार रही थीं। 21तब उसने उनसे
कहना आरम्भ किया, "आज तुम्हारे सुनते हुए शास्त्र
का यह वचन पूरा हुआ!"
22हर कोई उसकी बड़ाई कर रहा था। उसके मुख
से जो सुन्दर वचन निकल रहे थे, उन पर सब चकित
थे। वे बोले, "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?"
23फिर यीशु ने उनसे कहा, "निश्चय ही तुम मुझे यह
कहावत सुनाओगे, 'अरे वैद्य, स्वयं अपना इलाज कर।
कफ़रनहूम में तेरे जिन कर्मो के विषय में हमने सुना
है, उन कर्मो को यहाँ अपने स्वयं के नगर में भी
कर!'" 24यीशु ने तब उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता
हूँ कि अपने नगर में किसी नबी की मान्यता नहीं होती।
25मैं तुमसे सत्य कहता हूँ इस्राएल में एलिय्याह के काल
में जब आकाश जैसे मुँद गया था और साढ़े तीन साल
तक सारे देश में भयानक अकाल पड़ा था, तब वहाँ
अनगिनत विधवाएँ थीं। 26किन्तु सैदा प्रदेश के सारपत
नगर की एक विधवा को छोड़ कर एलिय्याह को
किसी और के पास नहीं भेजा गया था। 27और नबी

एलिशा के काल में इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे किन्तु उनमें से सीरिया के रहने वाले नामान के कोढ़ी को छोड़ कर और किसी को शुद्ध नहीं किया गया था।"

28सो जब यहूदी प्रार्थना सभा में लोगों ने यह सुना तो सभी को बहुत क्रोध आया। 29सो वे खड़े हुए और उन्होंने उसे नगर से बाहर धकेल दिया। वे उसे पहाड़ की उस चोटी पर ले गये जिस पर उनका नगर बसा था ताकि वे वहाँ चट्टान से उसे नीचे फेंक दें। 30किन्तु वह उनके बीच से निकल कर कहीं अपनी राह चला गया।

दुष्टात्मा से छुटकारा दिलाना
(मत्ती 1:21-28)

31फिर वह गलील के एक नगर कफरनहूम पहुँचा और सब्त के दिन लोगों को उपदेश देने लगा। 32लोग उसके उपदेश से आश्चर्यचकित थे क्योंकि उसका संदेश अधिकारपूर्ण होता था। 33वहीं उस प्रार्थना सभा में एक व्यक्ति था जिसमें दुष्टात्मा समायी थी। वह ऊँचे स्वर में चिल्लाया, 34"हे यीशु नासरी! तू हमसे क्या चाहता है? क्या तू हमारा नाश करने आया है? मैं जानता हूँ तू कौन है–तू परमेश्वर का पवित्र पुरुष है!" 35यीशु ने झिड़कते हुए उससे कहा, "चुप रह! इसमें से बाहर निकल आ!" इस पर दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति को लोगों के सामने एक पटकी दी और उसे बिना कोई हानि पहुँचाए उसमें से बाहर निकल आयी।

36सभी लोग चकित थे। वे एक दूसरे से बात करते हुए बोले, "यह कैसा वचन है? अधिकार और शक्ति के साथ यह दुष्टात्माओं को आज्ञा देता है और वे बाहर निकल आती हैं।" 37उस क्षेत्र में आसपास हर कहीं उसके बारे में समाचार फैलने लगा।

रोगी स्त्री का ठीक किया जाना
(मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:29-34)

38तब यीशु प्रार्थना सभागार को छोड़ कर शमौन के घर चला गया। शमौन की सास को बहुत ताप चढ़ा था। उन्होंने यीशु को उसकी सहायता करने के लिये विनती की। 39यीशु उसके सिरहाने खड़ा हुआ और उसने ताप को डाँटा। ताप ने उसे छोड़ दिया। वह तत्काल खड़ी हो गयी और उनकी सेवा करने लगी।

यीशु द्वारा बहुतों को चंगा किया जाना

40जब सूरज ढल रहा था तो जिन के यहाँ विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त रोगी थे, वे सभी उन्हें उसके पास लाये। और उसने अपना हाथ उनमें से हर एक के सिर पर रखते हुए उन्हें चंगा कर दिया। 41उनमें बहुतों में से दुष्टात्माएँ चिल्लाती हुई यह कहती बाहर निकल आयीं, "तू परमेश्वर का पुत्र है।" किन्तु उसने उन्हें बोलने नहीं दिया, क्योंकि वे जानती थी, "वह मसीह है।"

यीशु की अन्य नगरों को यात्रा
(मरकुस 1:35-39)

42जब पौ फटी तो वह वहाँ से किसी एकांत स्थान को चला गया। किन्तु भीड़ उसे खोजते खोजते वहीं जा पहुँची जहाँ वह था। उन्होंने प्रयत्न किया कि वह उन्हें छोड़ कर न जाये।

43किन्तु उसने उनसे कहा, "परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार मुझे दूसरे नगरों में भी पहुँचाना है क्योंकि मुझे इसी लिए भेजा गया है।"

44और इस प्रकार वह यहूदिया की प्रार्थना सभाओं में निरन्तर उपदेश करने लगा।

यीशु के प्रथम शिष्य
(मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20)

5 बात यूँ हुई कि भीड़ में लोग यीशु को चारों ओर से घेर कर जब परमेश्वर का वचन सुन रहे थे और वह गन्नेसरत नामक झील के किनारे खड़ा था। 2तभी उसने झील के किनारे दो नावें देखीं। उनमें से मछुआरे निकल कर अपने जाल साफ कर रहे थे। 3यीशु उनमें से एक नाव पर चढ़ गया जो कि शमौन की थी, और उसने नाव को किनारे से कुछ हटा लेने को कहा। फिर वह नाव पर बैठ गया और वहीं नाव पर से जन समूह को उपदेश देने लगा।

4जब वह उपदेश समाप्त कर चुका तो उसने शमौन से कहा, "गहरे पानी की तरफ बढ़ और मछली पकड़ने के लिए अपने जाल डालो।"

5शमौन बोला, "स्वामी, हमने सारी रात कठिन परिश्रम किया है, पर हमें कुछ नहीं मिल पाया, किन्तु तू कह रहा है इसलिए मैं जाल डाले देता हूँ।"

6जब उन्होंने जाल फेंके तो बड़ी संख्या में मछलियाँ पकड़ी गयी। उनके जाल जैसे फट रहे थे। 7सो उन्होंने दूसरी नावों में बैठे अपने साथियों को संकेत देकर सहायता के लिये बुलाया। वे आ गये और उन्होंने दोनों नावों पर इतनी मछलियाँ लाद दी कि वे मानों डूबने लगीं।

8जब शमौन पतरस ने यह देखा तो वह यीशु के चरणों में गिर कर बोला, "प्रभु मैं एक पापी मनुष्य हूँ। तू मुझसे दूर रह।"

9उसने यह इसलिये कहा था कि इतनी मछलियाँ बटोर पाने के कारण उसे और उसके सभी साथियों को बहुत अचरज हो रहा था। 10जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमौन के साथी थे, इस प्रकार बहुत आश्चर्य हुआ था। सो यीशु ने शमौन से कहा, "डर मत, क्योंकि अब से आगे तू मनुष्यों को बटोरा करेगा!"

11फिर वे अपनी नावें किनारे पर लाये और सब कुछ त्याग कर यीशु के पीछे हो लिये।

कोढ़ी का शुद्ध किया जाना

(मत्ती 8:1-4; मरकुस 1:40-45)

12सो ऐसा हुआ कि जब यीशु एक नगर में था तभी
वहाँ कोढ़ से पूरी तरह ग्रस्त एक कोढ़ी भी था। जब
उसने यीशु को देखा तो दण्डवत प्रणाम करके उससे
प्रार्थना की, "प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे ठीक कर
सकता है।"
13इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी को
यह कहते हुए छुआ, "मैं चाहता हूँ, ठीक हो जा!" और
तत्काल उसका कोढ़ जाता रहा। 14फिर यीशु ने उसे
आज्ञा दी कि वह इस विषय में किसी से कुछ न कहे।
उससे कहा, "याजक के पास जा और उसे अपने आप
को दिखा और मूसा के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ा
ताकि लोगों को तेरे ठीक होने का प्रमाण मिले।"
15किन्तु यीशु के विषय में समाचार और अधिक
गति से फैल रहे थे। और दल के दल लोग इकट्ठे हो
कर उसे सुनने और अपनी बीमारियों से छुटकारा पाने
उसके पास आ रहे थे। 16किन्तु यीशु प्राय: प्रार्थना
करने कहीं एकान्त वन में चला जाया करता था।

लकवे के रोगी को चंगा करना

(मत्ती 9:1-8; मरकुस 2:1-12)

17ऐसा हुआ कि एक दिन जब वह उपदेश दे रहा था
तो वहाँ फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री भी बैठे थे। वे
गलील और यहूदिया के हर नगर तथा यरुशलेम से
आये थे। लोगों को ठीक करने के लिए प्रभु की शक्ति
उसके साथ थी। 18तभी कुछ लोग खाट पर लकवे के
एक रोगी को लिये उसके पास आये। वे उसे भीतर
लाकर यीशु के सामने रखने का प्रयत्न कर रहे थे।
19किन्तु भीड़ के कारण उसे भीतर लाने का रास्ता न
पाते हुए वे ऊपर छत पर जा चढ़े और उन्होंने उसे
उसके बिस्तर समेत छत के बीचोबीच से खपरेल हटाकर
यीशु के सामने उतार दिया। 20उनके विश्वास को देखते
हुए यीशु ने कहा, "हे मित्र, तेरे पाप क्षमा हुए।"
21तब यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी आपस में सोचने
लगे, "यह कौन है जो परमेश्वर के लिए ऐसे अपमान
के शब्द बोलता है? परमेश्वर को छोड़ दूसरा कौन है
जो पाप क्षमा कर सकता है?"
22किन्तु यीशु उनके सोच–विचार को ताड़ गया। सो
उत्तर में उसने उनसे कहा, "तुम अपने मन में ऐसा क्यों
सोच रहे हो? 23सरल क्या है? यह कहना कि 'तेरे लिए
तेरे पाप क्षमा हुए' या यह कहना कि 'उठ और चल दे?'
24पर इसलिये कि तुम जान सको कि मनुष्य के पुत्र को
धरती पर पाप क्षमा करने का अधिकार है।" उसने
लकवे के मारे से कहा, "मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा हो,
अपना बिस्तर उठा और घर चला जा! 25सो वह तुरन्त
खड़ा हुआ और उनके देखते देखते जिस बिस्तर पर
वह लेटा था, उसे उठा परमेश्वर की स्तुति करता हुआ
अपने घर चला गया। 26वे सभी जो वहाँ थे आश्चर्यचकित
होकर परमेश्वर का गुणगान करने लगे। वे श्रद्धा और
विस्मय से भर उठे और बोले, "आज हमने कुछ अद्भुत
देखा है!"

लेवी को यीशु का बुलावा

(मत्ती 9:9-13; मरकुस 2:13-17)

27इसके बाद यीशु चल दिया। तभी उसने चुंगी की
चौकी पर बैठे लेवी नाम के एक कर वसूलने वाले को
देखा। वह उससे बोला, "मेरे पीछे चला आ!" 28सो वह
खड़ा हुआ और सब कुछ तज कर उसके पीछे हो
लिया। 29फिर लेवी ने अपने घर पर यीशु के सम्मान में
एक स्वागत समारोह किया। वहाँ कर वसूलने वालों
और दूसरे लोगों का एक बड़ा जमघट उनके साथ
भोजन कर रहा था। 30तब फरीसियों और धर्मशास्त्रियों
ने उसके शिष्यों से यह कहते हुए शिकायत की, "तुम
कर वसूलने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते–पीते
हो?"
31उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "स्वस्थ लोगों को
नहीं, बल्कि रोगियों को चिकित्सक की आवश्यकता
होती है। 32मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को मन
फिराने के लिए बुलाने आया हूँ।"

उपवास पर यीशु का मत

(मत्ती 9:14-17; मरकुस 2:18-22)

33उन्होंने यीशु से कहा, "यूहन्ना के शिष्य प्राय: व्रत
रखते हैं और प्रार्थना करते हैं। और ऐसा ही फरीसियों
के अनुयायी भी करते हैं किन्तु तेरे अनुयायी तो हर
समय खाते पीते रहते हैं।"
34यीशु ने उनसे पूछा, "क्या दूल्हे के अतिथि जब
तक दूल्हा उनके साथ है, उपवास करते हैं? 35किन्तु वे
दिन भी आयेंगे जब दूल्हा उनसे छीन लिया जायेगा।
फिर उन दिनों में वे भी उपवास करेंगे।"
36उसने उनसे एक दृष्टांत कहा कि, "कोई भी किसी
नयी पोशाक से कोई टुकड़ा फाड़ कर उसे पुरानी
पोशाक पर नहीं लगाता और यदि कोई ऐसा करता है
तो उसकी नयी पोशाक तो फटेगी ही, साथ ही वह नया
पेबन्द भी पुरानी पोशाक के साथ मेल नहीं खायेगा।
37कोई भी पुरानी मशकों में नयी दाखरस नहीं भरता
और यदि भरता है तो नयी दाखरस पुरानी मशकों को
फाड़ देगा। वह बिखर जायेगा और मशकें नष्ट हो
जायेंगी। 38लोग हमेशा नयाँ दाखरस नयी मशकों में
भरते है। 39पुराना दाखरस पी कर कोई भी नया की
चाहत नहीं करता क्योंकि वह कहता है, 'पुराना ही
उत्तम है।'"

सब्त का प्रभु यीशु

(मत्ती 12:1-8; मरकुस 2:23-28)

6 अब ऐसा हुआ कि सब्त के एक दिन यीशु जब अनाज के कुछ खेतों से होता हुआ जा रहा था तो उसके शिष्य अनाज की बालों को तोड़ते, हथेलियों पर मसलते उन्हें खाते जा रहे थे। 2तभी कुछ फरीसियों ने कहा, "जिसका सब्त के दिन किया जाना उचित नहीं है, उसे तुम लोग क्यों कर रहे हो?"

3उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुमने नहीं पढ़ा जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे, तब दाऊद ने क्या किया था? 4क्या तुमने नहीं पढ़ा कि उसने परमेश्वर के घर में घुस कर, परमेश्वर को अर्पित रोटियाँ उठा कर खा ली थी और उन्हें भी दी थी, जो उसके साथ थे? जबकि याजकों को छोड़ कर उनका खाना किसी के लिये भी उचित नहीं।" 5उसने आगे कहा, "मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है।"

यीशु द्वारा सब्त के दिन रोगी का अच्छा किया जाना

(मत्ती 12:9-14; मरकुस 3:1-6)

6दूसरे सब्त के दिन ऐसा हुआ कि वह यहूदी धर्म सभा में जाकर उपदेश देने लगा। वहीं एक ऐसा व्यक्ति था जिसका दाहिना हाथ मुरझाया हुआ था। 7वहीं यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी यह देखने की ताक में थे कि वह सब्त के दिन किसी को चंगा करता है कि नहीं। ताकि वे उस पर दोष लगाने का कोई कारण पा सकें। 8वह उनके विचारों को जानता था, सो उसने उस मुरझाये हाथ वाले व्यक्ति से कहा, "उठ और सब के सामने खड़ा हो जा।" वह उठा और वहाँ खड़ा हो गया। 9तब यीशु ने लोगों से कहा, "मैं तुमसे पूछता हूँ–सब्त के दिन किसी का भला करना उचित है या किसी को हानि पहुँचाना, किसी का जीवन बचाना उचित है या किसी के जीवन को नष्ट करना?" 10यीशु ने चारों ओर उन सब पर दृष्टि डाली और फिर उससे कहा, "अपना हाथ सीधा फैला।" उसने वैसा ही किया और उसका हाथ फिर से अच्छा हो गया। 11किन्तु इस पर आग बबूला होकर वे आपस में विचार करने लगे कि यीशु का क्या किया जाये?

बारह प्रेरितों का चुना जाना

(मत्ती 10:1-4; मरकुस 3:13-19)

12उन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि यीशु प्रार्थना करने के लिये एक पहाड़ पर गया और सारी रात परमेश्वर को प्रार्थना करते हुए बिता दी। 13फिर जब भोर हुई तो उसने अपने अनुयायियों को पास बुलाया। उनमें से उसने बारह को चुना जिन्हें उसने "प्रेरित" नाम दिया: 14शमौन (जिसे उसने पतरस भी कहा) और उसका भाई अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुलमै, 15मत्ती, थोमा, हलफ़ई का बेटा याकूब, और शमौन जिलौती; 16याकूब का बेटा यहूदा और यहूदा इस्करियोती जो विश्वासघाती बना।

यीशु का लोगों को उपदेश देना और चंगा करना

(मत्ती 4:23-25; 5:1-12)

17फिर यीशु उनके साथ पहाड़ी से नीचे उतर कर समतल स्थान पर आ खड़ा हुआ। वहीं उसके शिष्यों की भी एक बड़ी भीड़ थी। साथ ही समूचे यहूदिया, यरूशलेम, सूर और सैदा के सागर तट से अनगिनत लोग वहाँ आ इकट्ठे हुए। 18वे उसे सुनने और रोगों से छुटकारा पाने वहाँ आये थे। जो दुष्टात्माओं से पीड़ित थे, वे भी वहाँ आकर अच्छे हुए। 19समूची भीड़ उसे छू भर लेने के प्रयत्न में थी क्योंकि उसमें से शक्ति निकल रही थी और उन सब को निरोग बना रही थी!

20फिर अपने शिष्यों को देखते हुए वह बोला:

"धन्य हो तुम जो दीन हो, स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है,

21धन्य हो तुम, जो अभी भूखे रहे हो, क्योंकि तुम तृप्त होगे धन्य हो तुम जो आज आँसू बहा रहे हो, क्योंकि तुम आगे हँसोगे।

22"धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुमसे घृणा करें, और तुमको बहिष्कृत करें, और तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हारा नाम बुरा समझकर काट दें। 23तब उसी दिन मगन हो कर तुम मौज में उछलना क्योंकि स्वर्ग में तुम महा प्रतिफल पाओगे। क्योंकि उनके पुरखों ने भी भविष्य वक्ताओं के साथ ऐसा ही किया था।

24"तुमको धिक्कार है, ओ धनिक जन, क्योंकि तुमको पूरा सुख चैन मिल रहा है।

25तुम्हें धिक्कार है, जो अब भरपेट हो क्योंकि तुम भूखे रहोगे, तुम्हें धिक्कार है, जो अब हँस रहे हो, क्योंकि तुम आँसू बहा बिलखा करोगे।

26"तुम्हें धिक्कार है, जब तुम्हारी प्रशंसा हो क्योंकि उनके पूर्वजों ने भी झूठे नबियों के साथ ऐसा व्यवहार किया।

अपने बैरी से भी प्रेम करो

(मत्ती 5:38-48; 7:12)

27"ओ सुनने वालो! मैं तुमसे कहता हूँ अपने शत्रु से भी प्रेम करो। जो तुमसे घृणा करते हैं, उनके साथ भी भलाई करो। 28उन्हें भी आशीर्वाद दो, जो तुम्हें शाप देते हैं। उनके लिए भी प्रार्थना करो जो तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते। 29यदि कोई तुम्हारे गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो। यदि कोई तुम्हारा कोट ले ले तो उसे अपना कुर्ता भी ले लेने दो। 30जो कोई तुमसे माँगे, उसे दो। यदि कोई तुम्हारा कुछ रख ले तो उससे वापस मत माँगो। 31तुम अपने लिये जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हो, तुम्हें दूसरों के साथ

वैसा ही व्यवहार करना चाहिये। 32यदि तुम बस उन्हीं को प्यार करते हो, जो तुम्हें प्यार करते हैं, तो इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि अपने से प्रेम करने वालों से तो पापी तक भी प्रेम करते हैं। 33यदि तुम बस उन्हीं का भला करो, जो तुम्हारा भला करते हैं, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? ऐसा तो पापी तक करते हैं। 34यदि तुम केवल उन्हीं को उधार देते हो, जिनसे तुम्हें वापस मिल जाने की आशा है, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? ऐसे तो पापी भी पापियों को देते हैं कि उन्हें उनकी पूरी रकम वापस मिल जाये। 35बल्कि अपने शत्रु को भी प्यार करो, उनके साथ भलाई करो। कुछ भी लौट आने की आशा छोड़ कर उधार दो। इस प्रकार तुम्हारा प्रतिफल महान होगा और तुम परम परमेश्वर की संतान बनोगे क्योंकि परमेश्वर कृतघ्नों और दुष्ट लोगों पर भी दया करता है। 36जैसे तुम्हारा परम पिता दयालु है, वैसे ही तुम भी दयालु बनो।

अपने आप को जानो

(मत्ती 7:1-5)

37"किसी को दोषी मत कहो तो तुम्हें भी दोषी नहीं कहा जायेगा। किसी का खंडन मत करो तो तुम्हारा भी खंडन नहीं किया जायेगा। क्षमा करो, तुम्हें भी क्षमा मिलेगी। 38दूसरों को दो, तुम्हें भी दिया जायेगा। तुम्हारा उपहार पूरी नाप के साथ दबा–दबा कर और हिला–हिला कर अधिक जगह बनाकर बाहर उडेलकर तुम्हारी झोली में वापस दिया जायेगा जिस नाप से तुम दूसरों को देते हो, उसी से तुम्हें भी दिया जायेगा।"

39उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा, "क्या कोई अन्धा किसी दूसरे अन्धे को राह दिखा सकता है? क्या वे दोनों ही किसी गढ़े में नहीं जा गिरेंगे? 40कोई भी विद्यार्थी अपने पढ़ाने वाले से बड़ा नहीं हो सकता, किन्तु जब कोई व्यक्ति पूरी तरह कुशल हो जाता है तो वह अपने गुरु के समान बन जाता है।

41"तू अपने भाई की आँख में कोई तिनके को क्यों देखता है और अपनी आँख का लट्ठा भी तुझे नहीं सूझता? 42सो अपने भाई से तू कैसे कह सकता है: 'बंधु, तू अपनी आँख का तिनका मुझे निकालने दे।' जब तू अपनी आँख के लट्ठे तक को नहीं देखता! अरे कपटी, पहले अपनी आँख का लट्ठा दूर कर, तब तुझे अपने भाई की आँख का तिनका बाहर निकालने के लिये दिखाई दे पायेगा।

दो प्रकार के फल

(मत्ती 7:17-20; 12:34-35)

43"कोई भी ऐसा उत्तम पेड़ नहीं है जिस पर बुरा फल लगता हो। न ही कोई ऐसा बुरा पेड़ है, जिस पर उत्तम फल लगता हो। 44हर पेड़ अपने फल से ही जाना जाता है। लोग कँटीली झाड़ी से अंजीर नहीं बटोरते। न ही किसी झड़बेरी से लोग अंगूर उतारते हैं। 45एक अच्छा मनुष्य उसके मन में अच्छाइयों का जो खजाना है, उसी से अच्छी बातें उपजाता है। और एक बुरा मनुष्य, जो उसके मन में बुराई है, उसी से बुराई पैदा करता है। क्योंकि एक मनुष्य मुँह से वही बोलता है, जो उसके हृदय से उफन कर बाहर आता है।

दो प्रकार के लोग

(मत्ती 7:24-27)

46"तुम मुझे 'प्रभु, प्रभु' क्यों कहते हो और जो मैं कहता हूँ, उस पर नहीं चलते। 47हर कोई जो मेरे पास आता है और मेरा उपदेश सुनता है और उस का आचरण करता है, वह किस प्रकार का होता है, मैं तुम्हें बताऊँगा। 48वह उस व्यक्ति के समान है जो मकान बना रहा है। उसने गहरी खुदाई की और चट्टान पर नींव डाली। फिर जब बाढ़ आयी और नदी उस मकान से टकराई तो यह उसे हिला तक न सकी, क्योंकि वह बहुत अच्छी तरह बना हुआ था। 49किन्तु जो मेरा उपदेश सुनता है और उस पर चलता नहीं, वह उस व्यक्ति के समान है जिसने बिना नींव धरे धरती पर मकान बनाया। नदी उससे टकराई और वह तुरन्त ढह गया और पूरी तरह तहस–नहस हो गया।"

विश्वास की शक्ति

(मत्ती 8:5-13; यूहन्ना 4:43-54)

7 यीशु लोगों को जो सुनाना चाहता था, उसे कह चुकने के बाद वह कफ़रनहूम चला आया। 2वहाँ एक सेनानायक था जिसका दास इतना बीमार था कि मरने को पड़ा था। वह सेवक उसका बहुत प्रिय था। 3सेनानायक ने जब यीशु के विषय में सुना तो उसने कुछ बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं को यह विनती करने के लिये उसके पास भेजा कि वह आकर उसके सेवक के प्राण बचा ले। 4जब वे यीशु के पास पहुँचे तो उन्होंने सच्चे मन से विनती करते हुए कहा, "वह इस योग्य है कि तू उसके लिये ऐसा करे। 5क्योंकि वह हमारे लोगों से प्रेम करता है। उसने हमारे लिए धर्म–सभा–भवन का निर्माण किया है।"

6सो यीशु उनके साथ चल दिया। अभी जब वह घर से अधिक दूर नहीं था, उस सेनानायक ने उसके पास अपने मित्र को यह कहने के लिये भेजा, "हे प्रभु, अपने को कष्ट मत दे। क्योंकि मैं इतना अच्छा नहीं हूँ कि तू मेरे घर में आये। 7इसीलिये मैंने तेरे पास आने तक की नहीं सोची। किन्तु तू बस कह भर दे, मेरा सेवक स्वस्थ हो जायेगा। 8मैं स्वयं किसी अधिकारी के नीचे काम करने वाला व्यक्ति हूँ और मेरे नीचे भी कुछ सैनिक हैं। मैं जब किसी से कहता हूँ 'जा' तो वह चला जाता है

और जब दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वह आ जाता है।
और जब मैं अपने दास से कहता हूँ, 'यह कर' तो वह
उसे ही करता है।"
9यीशु ने जब यह सुना तो उसे उस पर बहुत आश्चर्य
हुआ। जो जन समूह उसके पीछे चला आ रहा था,
उसकी तरफ़ मुड़ कर यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें बताता हूँ
ऐसा विश्वास मुझे इस्राएल में भी कहीं नहीं मिला।"
10फिर भेजे हुए वे लोग जब वापस घर पहुँचे तो
उन्होंने उस सेवक को निरोग पाया।

मृतक को जीवन दान

11फिर ऐसा हुआ कि यीशु नाइन नाम के एक नगर
को चला गया। उसके शिष्य और एक बड़ी भीड़ उसके
साथ थी। 12वह जैसे ही नगर-द्वार के निकट आया तो
वहाँ से एक मुर्दे को ले जाया जा रहा था। वह अपनी
विधवा माँ का इकलौता बेटा था। सो नगर के अनगिनत
लोगों की भीड़ उसके साथ थी। 13जब प्रभु ने उसे देखा
तो उसे उस पर बहुत दया आयी। वह बोला, "रो मत।"
14फिर वह आगे बढ़ा और उसने ताबूत को छुआ वे
लोग जो ताबूत को ले जा रहे थे, निश्चल खड़े थे। यीशु
ने कहा, "नवयुवक, मैं तुझसे कहता हूँ, 'खड़ा हो जा!'"
15सो वह मरा हुआ आदमी उठ बैठा और बोलने लगा।
यीशु ने उसे उसकी माँ को वापस लौटा दिया।
16और फिर वे सभी श्रद्धा और विस्मय से भर उठे।
और यह कहते हुए परमेश्वर की महिमा बखानने लगे,
"हमारे बीच एक महान नबी प्रकट हुआ है।" और
कहने लगे, "परमेश्वर अपने लोगों की सहायता के
लिये आ गया है।" 17यीशु का यह समाचार यहूदिया
और आसपास के गाँवों में सब कहीं फैल गया।

यूहन्ना का प्रश्न
(मत्ती 11:2-19)

18इन सब बातों के विषय में यूहन्ना के अनुयायियों ने
उसे सब कुछ जा बताया। सो यूहन्ना ने अपने दो शिष्यों
को बुलाकर 19उन्हें प्रभु से यह पूछने को भेजा कि
"क्या तू वही है, जो आने वाला है या हम किसी और
की बाट जोहें?"
20फिर वे लोग जब यीशु के पास पहुँचे तो उन्होंने
कहा, "बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना ने हमें तुझसे यह
पूछने भेजा है कि क्या तू वही है जो आने वाला है या
हम किसी और की बाट जोहें?"
21उसी समय उसने बहुत से रोगियों को निरोग किया
और उन्हें वेदनाओं तथा दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया।
और बहुत से अंधों को आँखें दीं। 22फिर उसने उन्हें
उत्तर दिया, "जाओ और जो तुमने देखा है और सुना है,
उसे यूहन्ना को बताओ: कि अंधे लोग फिर देख रहे हैं,
लँगड़े लूले चल फिर रहे हैं और कोढ़ी शुद्ध हो गये हैं।
बहरे सुन पा रहे हैं और मुर्दे फिर जिलाये जा रहे हैं।
और धनहीन लोगों को सुसमाचार सुनाया जा रहा है।
23वहव्यक्ति धन्य है जिसे मुझे स्वीकार करने में कोई
समस्या नहीं।"
24जब यूहन्ना का संदेश लाने वाले चले गये तो यीशु
ने भीड़ में लोगों को यूहन्ना के बारे में बताना प्रारम्भ
किया: "तुम बियाबान जंगल में क्या देखने गये थे? क्या
हवा में झूलता कोई सरकंडा? नहीं? 25फिर तुम क्या
देखने गये थे? क्या कोई पुरुष जिसने बहुत उत्तम वस्त्र
पहने हों? नहीं, वे लोग जो उत्तम वस्त्र पहनते हैं और
जो विलास का जीवन जीते हैं, वे तो राज-भवनों में ही
पाये जाते हैं। 26किन्तु बताओ तुम क्या देखने गये थे?
क्या कोई नबी? हाँ, मैं तुम्हे बताता हूँ कि तुमने जिसे
देखा है, वह किसी नबी से कहीं अधिक है। 27यह वही
है जिसके विषय में लिखा गया है:

'देख मैं तुझसे पहले ही अपना दूत भेज रहा हूँ, वह
तुझसे पहले ही राह तैयार करेगा।' *मलाकी 3:1*

28"मैं तुम्हें बताता हूँ कि किसी स्त्री से पैदा हुओं में
यूहन्ना से महान् कोई नहीं है। किन्तु फिर भी परमेश्वर
के राज्य का छोटे से छोटा व्यक्ति भी उससे बड़ा है।"
29(तब हर किसी ने, यहाँ तक कि कर वसूलने
वालों ने भी यूहन्ना को सुन कर उसका बपतिस्मा
लेकर यह मान लिया कि परमेश्वर का मार्ग सत्य है।
30किन्तु फरीसियों और व्यवस्था के जानकारों ने उसका
बपतिस्मा न लेकर उनके सम्बन्ध में परमेश्वर की
इच्छा को नकार दिया।)
31"तो फिर इस पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं किस से
करूँ वे कि कैसे हैं? 32वे बाज़ार में बैठे उन बच्चों के
समान हैं जो एक दूसरे से पुकार कर कहते हैं:

'हमने तुम्हारे लिये बाँसुरी बजायी पर तुम नहीं नाचे।
हमने तुम्हारे लिए शोक-गीत गाया किन्तु तुम नहीं
रोये।'

33"क्योंकि बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया जो न तो
रोटी खाता था और न ही दाखरस पीता था और तुम
कहते हो, 'उसमें दुष्टात्मा है।' 34फिर खाते पीते हुए
मनुष्य का पुत्र आया, पर तुम कहते हो, 'देखो यह पेटू
है, पियक्कड़ है, कर वसूलने वालों और पापियों का
मित्र है।' 35बुद्धि की उत्तमता तो उसके परिणाम से ही
सिद्ध होती है।"

शमौन फरीसी

36एक फरीसी ने अपने साथ खाने पर उसे निमंत्रित
किया। सो वह फरीसी के घर गया और उसके यहाँ
भोजन करने बैठा। 37वहीं नगर में उन दिनों एक पापी
स्त्री थी, उसे जब यह पता लगा कि वह एक फरीसी के

घर भोजन कर रहा है तो वह संगमरमर के एक पात्र
में इत्र लेकर आयी। 38वह उसके पीछे उसके चरणों में
खड़ी थी। वह रो रही थी। अपने आँसुओं से वह उसके
पैर भिगोने लगी। फिर उसने पैरों को अपने बालों से
पोंछा और चरणों को चूम कर उन पर इत्र उँड़ेल दिया।
39उस फरीसी ने जिसने यीशु को अपने घर बुलाया था,
यह देखकर मन ही मन सोचा, "यदि यह मनुष्य नबी
होता तो जान जाता कि उसे छूने वाली यह स्त्री कौन है
और कैसी है? वह जान जाता कि यह तो पापिन है।"

40उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "शमौन, मुझे तुझ से
कुछ कहना है।" वह बोला, "गुरु, कह।"

41यीशु ने कहा, "किसी साहूकार के दो कर्ज़दार थे।
एक पर उसके पाँच सौ चाँदी के सिक्के* निकलते थे
और दूसरे पर पचास। 42क्योंकि वे कर्ज़ नहीं लौटा पाये
थे इसलिये उसने दया पूर्वक दोनों के कर्ज़ माफ़ कर
दिये। अब बता दोनों में से उसे अधिक प्रेम कौन
करेगा?" 43शमौन ने उत्तर दिया, "मेरा विचार है, वही
जिसका उसने अधिक कर्ज़ छोड़ दिया।"

यीशु ने कहा, "तूने उचित न्याय किया।" 44फिर उस
स्त्री की तरफ़ मुड़ कर वह शमौन से बोला, "तू इस स्त्री
को देख रहा है? मैं तेरे घर में आया, तूने मेरे पैर धोने
को मुझे जल नहीं दिया किन्तु इसने मेरे पैर आँसुओं से
तर कर दिये। और फिर उन्हें अपने बालों से पोंछा।
45तूने स्वागत में मुझे नहीं चूमा किन्तु यह जब से मैं
भीतर आया हूँ, मेरे पैरों को निरन्तर चूमती रही है।
46तूने मेरे सिर पर तेल का अभिषेक नहीं किया,
किन्तु इसने मेरे पैरों पर इत्र छिड़का। 47इसीलिये मैं तुझे
बताता हूँ कि इसका अगाध प्रेम दर्शाता है कि इसके
बहुत से पाप क्षमा कर दिये गये हैं। किन्तु वह जिसे थोड़े
पापों की क्षमा मिली, वह थोड़ा प्रेम करता है।"

48तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, "तेरे पाप क्षमा कर
दिये गये हैं।" 49फिर जो उसके साथ भोजन कर रहे थे,
वे मन ही मन सोचने लगे, "यह कौन है जो पापों को भी
क्षमा कर देता है?"

50तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, "तेरे विश्वास ने तेरी
रक्षा की है। शान्ति के साथ जा।"

यीशु अपने शिष्यों के साथ

8 इसके बाद ऐसा हुआ कि यीशु परमेश्वर के राज्य
का सुसमाचार लोगों को सुनाते हुए नगर-नगर
और गाँव-गाँव घूमने लगा। उसके बारहों शिष्य भी
उसके साथ हुआ करते थे। 2उसके साथ कुछ स्त्रियाँ
भी हुआ करती थीं जिन्हें उसने रोगों और दुष्टात्माओं
से छुटकारा दिलाया था। इनमें मरियम मगदलीनी नाम
की एक स्त्री थी जिसे सात दुष्टात्माओं से छुटकारा
मिला था। 3हेरोदेस के प्रबन्ध अधिकारी खोजा की पत्नी
योअन्ना भी इन्हीं में थी। साथ ही सुसन्नाह तथा और
बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं। ये स्त्रियाँ अपने ही साधनों से
यीशु और उसके शिष्यों की सेवा का प्रबन्ध करती थीं।

बीज बोने की दृष्टान्त कथा

(मत्ती 13:1-17; मरकुस 4:1-12)

4जब नगर-नगर से आकर लोगों की बड़ी भीड़
उसके यहाँ एकत्र हो रही थी, तो उसने उनसे एक
दृष्टान्त कथा कही:

5"एक किसान अपने बीज बोने निकला। जब उसने
बीज बोये तो कुछ बीज राह किनारे जा पड़े और पैरों
तले रुँद गये। और चिड़ियाएँ उन्हें चुग गयीं। 6कुछ बीज
चट्टानी धरती पर गिरे, वे जब उगे तो नमी के बिना
मुरझा गये। 7कुछ बीज कँटीली झाड़ियों में गिरे। काँटों
की बढ़वार भी उनके साथ हुई और काँटों ने उन्हें
दबोच लिया। 8और कुछ बीज अच्छी धरती पर गिरे। वे
उगे और उन्होंने सौ गुनी अधिक फसल दी।"

ये बातें बताते हुए उसने पुकार कर कहा, "जिसके
पास सुनने को कान हैं, वह सुन ले।"

9उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "इस दृष्टान्त कथा का
क्या अर्थ है?"

10सो उसने बताया, "परमेश्वर के राज्य के रहस्य
जानने की सुविधा तुम्हें दी गयी है किन्तु दूसरों को यह
रहस्य दृष्टान्त कथाओं के द्वारा दिये गये हैं ताकि:

'वे देखते हुए भी न देख पायें और सुनते हुए भी न
समझ पाये।' *यशायाह 6:9*

बीज बोने के दृष्टान्त की व्याख्या

(मत्ती 13:18-23; मरकुस 4:13-20)

11"इस दृष्टान्त कथा का अर्थ यह है: बीज परमेश्वर
का वचन है। 12वे बीज जो राह किनारे गिरे थे, वे वो
व्यक्ति हैं जो जब वचन को सुनते हैं, तो शैतान आता है
और वचन को उनके मन से निकाल ले जाता है ताकि
वे विश्वास न कर पायें और उनका उद्धार न हो सके।
13वे बीज जो चट्टानी धरती पर गिरे थे उनका अर्थ है,
वे व्यक्ति जो जब वचन को सुनते हैं तो उसे आनन्द के
साथ अपनाते तो हैं। किन्तु उनके भीतर उसकी जड़
नहीं जम पाती। वे कुछ समय के लिये विश्वास करते हैं
किन्तु परीक्षा की घड़ी में वे डिग जाते हैं।

14"और जो बीज काँटो में गिरे, उसका अर्थ है, वे
व्यक्ति जो वचन को सुनते हैं किन्तु जब वे अपनी राह
चलने लगते हैं तो चिन्ताएँ, धन-दौलत और जीवन के
भोग विलास उसे दबा देते हैं, जिससे उन पर कभी पकी
फसल नहीं उतरती। 15और अच्छी धरती पर गिरे बीज
से अर्थ है वे व्यक्ति जो अच्छे और सच्चे मन से जब
वचन को सुनते हैं तो उसे धारण भी करते हैं। फिर
अपने धैर्य के साथ वे उत्तम फल देते हैं।"

चाँदी के सिक्के मूल में दीनारी।

अपने सत्य का उपयोग करो
(मत्ती 4:21-25)

16"कोई भी किसी दिये को बर्तन के नीचे ढक देने
को नहीं जलाता। या उसे बिस्तर के नीचे नहीं रखता।
बल्कि वह उसे दीवट पर रखता है ताकि जो भीतर
आयें, प्रकाश देख सकें। 17क्योंकि कुछ भी ऐसा छिपा
नहीं है जो उजागर नहीं होगा और कुछ भी ऐसा छिपा
नहीं है जिसे जना नहीं दिया जायेगा और जो प्रकाश में
नहीं आयेगा। 18इसलिये ध्यान से सुनो क्योंकि जिसके
पास है उसे और भी दिया जायेगा और जिसके पास नहीं
है, उससे जो उसके पास दिखाई देता है, वह भी ले लिया
जायेगा।"

यीशु के अनुयायी ही उसका सच्चा परिवार हैं
(मत्ती 12:46-50; मरकुस 3:31-35)

19तभी यीशु की माँ और उसके भाई उसके पास
आये किन्तु वे भीड़ के कारण उसके निकट नहीं जा
सके। 20इसलिये यीशु से यह कहा गया, "तेरी माँ और
तेरे भाई बाहर खड़े हैं। वे तुझसे मिलना चाहते हैं।"
21किन्तु यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरी माँ और मेरे
भाई तो ये हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस
पर चलते हैं!"

शिष्यों को यीशु की शक्ति का दर्शन
(मत्ती 8:23-27; मरकुस 4:35-41)

22तभी एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने शिष्यों के
साथ एक नाव पर चढ़ा और उनसे बोला, "आओ, झील
के उस पार चलें।" सो उन्होंने पाल खोल दी। 23जब वे
नाव चला रहे थे, यीशु सो गए। झील पर आँधी-तूफान
उतर आया। उनकी नाव में पानी भरने लगा। वे ख़तरे
में पड़ गये। 24सो वे उसके पास आये और उसे जगाकर
कहने लगे, "स्वामी! स्वामी! हम डूब रहे हैं!"
फिर वह खड़ा हुआ और उसने आँधी तथा लहरों
को डाँटा। वे थम गयीं और वहाँ शान्ति छा गयी। 25फिर
उसने उनसे पूछा, "कहाँ गया तुम्हारा विश्वास?" किन्तु
वे डरे हुए थे और अचरज में पड़े थे। वे आपस में बोले,
"आखिर यह है कौन जो हवा और पानी दोनों को
आज्ञा देता है और वे उसे मानते हैं?"

दुष्टात्मा से छुटकारा
(मत्ती 8:28-34; मरकुस 5:1-20)

26फिर वे गिरासेनियों के प्रदेश में पहुँचे जो गलील
झील के सामने पार था। 27जैसे ही वह किनारे पर
उतरा, नगर का एक व्यक्ति उसे मिला। उसमें दुष्टात्माएँ
समाई हुई थी। एक लम्बे समय से उसने न तो कपड़े
पहने थे और न ही वह घर में रहा था, बल्कि वह
मकबरों में रहा करता था। 28जब उसने यीशु को देखा
तो चिल्लाते हुए उसके सामने गिर कर ऊँचे स्वर में
बोला, "हे परम प्रधान (परमेश्वर) के पुत्र यीशु, तू
मुझसे क्या चाहता है? मैं विनती करता हूँ मुझे पीड़ा मत
पहुँचा।" 29उसने उस दुष्टात्मा को उस व्यक्ति में से
बाहर निकलने का आदेश दिया था, क्योंकि उस दुष्टात्मा
ने उस मनुष्य को बहुत बार पकड़ा था। ऐसे अवसरों
पर उसे बेड़ियों से बाँध कर पहरे में रखा जाता था।
किन्तु वह सदा ज़ंजीरों को तोड़ देता था और दुष्टात्मा
उसे वीराने में भगाए फिरती थी।
30सो यीशु ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?"
उसने कहा, "सेना" क्योंकि उसमें बहुत सी दुष्टात्माएँ
समाई थीं। 31वे यीशु से तर्क-वितर्क के साथ विनती
कर रही थीं कि वह उन्हें गहन गर्त में जाने की आज्ञा
न दे। 32अब देखो, तभी वहाँ पहाड़ी पर सुअरों का एक
रेवड़ चर रहा था। दुष्टात्माओं ने उससे विनती की कि
वह उन्हें सुअरों में जाने दे। सो उसने उन्हें अनुमति दे
दी। 33इस पर वे दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति में से बाहर
निकली और उन सुअरों में प्रवेश कर गयी। और
सुअरों का वह रेवड़ नीचे उस ढलुआ तट से लुढ़कते
पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में जा गिरा और डूब गया।
34रेवड़ के रखवाले, जो कुछ हुआ था, उसे देखकर
वहाँ से भाग खड़े हुए। और उन्होंने इसका समाचार
नगर और गाँव में जा सुनाया। 35फिर वहाँ के लोग जो
कुछ घटा था उसे देखने बाहर आये। वे यीशु से मिले।
और उन्होंने उस व्यक्ति को जिसमें से दुष्टात्माएँ निकली
थीं यीशु के चरणों में बैठे पाया। उस व्यक्ति ने कपड़े
पहने हुए थे और उसका दिमाग एकदम सही था। इससे
वे सभी डर गये। 36जिन्होंने देखा, उन्होंने लोगों को
बताया कि दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्ति कैसे ठीक हुआ। 37इस
पर गिरासेन प्रदेश के सभी निवासियों ने उससे प्रार्थना
की कि वह वहाँ से चला जाये क्योंकि वे सभी बहुत डर
गये थे। सो यीशु नाव में आया और लौट पड़ा। 38किन्तु
जिस व्यक्ति में से दुष्टात्माएँ निकली थीं, वह यीशु से
अपने को साथ ले चलने की विनती कर रहा था। इस
पर यीशु ने उसे यह कहते हुए लौटा दिया कि, 39"घर
जा और जो कुछ परमेश्वर ने तेरे लिये किया है, उसे
बता।"
सो वह लौटकर, यीशु ने उसके लिये जो कुछ किया
था, उसे सारे नगर में सबसे कहता फिरा।

रोगी स्त्री का अच्छा होना और मृत लड़की को जीवनदान
(मत्ती 9:18-26; मरकुस 5:21-43)

40अब देखो जब यीशु लौटा तो जन समूह ने उसका
स्वागत किया क्योंकि वे सभी उसकी प्रतीक्षा में थे।
41तभी याईर नाम का एक व्यक्ति वहाँ आया। वह वहाँ

के यहूदी धर्म–सभा–भवन का मुखिया था। वह यीशु
के चरणों में गिर पड़ा और उससे अपने घर चलने की
विनती करने लगा। 42क्योंकि उसके बारह साल की
एक इकलौती बेटी थी, वह मरने वाली थी।

सो यीशु जब जा रहा था तो भीड़ उसे कुचले जा रही
थी। 43वहीं एक स्त्री थी जिसे बारह साल से खून बह
रहा था। जो कुछ उसके पास था, उसने चिकित्सकों
पर खर्च कर दिया था, पर वह किसी से भी ठीक नहीं
हो पायी थी। 44वह उसके पीछे आयी और उसने
उसके चोगे की कन्नी छू ली। और उसका खून जाना
तुरन्त रुक गया। 45तब यीशु ने पूछा, "वह कौन है
जिसने मुझे छुआ है?"

जब सभी मना कर रहे थे, पतरस बोला, "स्वामी,
सभी लोगों ने तो तुझे घेर रखा है और वे सभी तो तुझ
पर गिरे पड़ रहे हैं।"

46किन्तु यीशु ने कहा, "किसी ने मुझे छुआ है क्योंकि
मुझे लगा है जैसे मुझ में से शक्ति निकली हो।" 47उस
स्त्री ने जब देखा कि वह छुप नहीं पायी है, तो वह
काँपती हुई आयी और यीशु के सामने गिर पड़ी। वहाँ
सभी लोगों के सामने उसने बताया कि उसने उसे क्यों
छुआ था। और कैसे तत्काल वह अच्छी हो गयी। 48इस
पर यीशु ने उससे कहा, "पुत्री, तेरे विश्वास ने तेरा
उद्धार किया है। चैन से जा।"

49वह अभी बोल ही रहा था कि यहूदी धर्म–सभा–
भवन के मुखिया के घर से वहाँ कोई आया और बोला,
"तेरी बेटी मर चुकी है! सो गुरु को अब और कष्ट मत
दे।" 50यीशु ने यह सुन लिया। सो वह उससे बोला, "डर
मत! विश्वास रख। वह बच जायेगी।"

51जब यीशु उस घर में आया तो उसने अपने साथ
पतरस, यूहन्ना, याकूब और बच्ची के माता–पिता को
छोड़ कर किसी और को अपने साथ भीतर नहीं आने
दिया। 52सभी लोग उस लड़की के लिये रो रहे थे और
विलाप कर रहे थे। यीशु बोला, "रोना बंद करो। यह
मरी नहीं है, बल्कि सो रही है।"

53इस पर लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई। क्योंकि वे
जानते थे कि लड़की मर चुकी है। 54किन्तु यीशु ने
उसका हाथ पकड़ा और पुकार कर कहा, "बच्ची,
खड़ी हो जा!" 55उसकी आत्मा लौट आयी, और वह
तुरंत उठ बैठी। यीशु ने आज्ञा दी, "इसे कुछ खाने को
दिया जाये।" 56इस पर लड़की के माता पिता को बहुत
अचरज हुआ किन्तु यीशु ने उन्हें आदेश दिया कि जो
घटना घटी है, उसे वे किसी को न बतायें।

यीशु द्वारा बारह शिष्यों का भेजा जाना

(मत्ती 10:5-15; मरकुस 6:7-13)

9 फिर यीशु ने बारहों शिष्यों को एकसाथ बुलाया।
और उन्हें दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाने का
अधिकार और शक्ति प्रदान की। उसने उन्हें रोग दूर
करने की शक्ति भी दी। 2फिर उसने उन्हें परमेश्वर के
राज्य का सुसमाचार सुनाने और रोगियों को चंगा करने
के लिये बाहर भेजा। 3उसने उनसे कहा, "अपनी यात्रा
के लिये वे कुछ साथ न लें: न लाठी, न झोला, न रोटी,
न चाँदी और न कोई अतिरिक्त वस्त्र। 4तुम जिस किसी
घर के भीतर जाओ, वहीं ठहरो। और जब तक विदा
लो, वहीं ठहरे रहो। 5और जहाँ कहीं लोग तुम्हारा
स्वागत न करें तो जब तुम उस नगर को छोड़ो तो
उनके विरुद्ध गवाही के रूप में अपने पैरों की धूल
झाड़ दो।"

6सो वहाँ से चल कर वे हर कहीं सुसमाचार का
उपदेश देते और लोगों को चंगा करते सभी गाँवों से होते
हुए यात्रा करने लगे।

हेरोदेस की भ्रान्ति

(मत्ती 14:1-12; मरकुस 6:14-29)

7अब जब एक चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने, जो
कुछ हुआ था, उसके बारे में सुना तो वह चिंता में पड़
गया क्योंकि कुछ लोगों के द्वारा कहा जा रहा था,
"यूहन्ना को मरे हुओं में से जिला दिया गया है।" 8दूसरे
कह रहे थे, "एलिय्याह प्रकट हुआ है।" कुछ और कह
रहे थे, "पुराने युग का कोई नबी जी उठा है।"

9किन्तु हेरोदेस ने कहा, "मैंने यूहन्ना का तो सिर
कटवा दिया था, फिर यह है कौन जिसके बारे में मैं
ऐसी बातें सुन रहा हूँ?" सो हेरोदेस उसे देखने का जतन
करने लगा।

पाँच हज़ार से अधिक का भोज

(मत्ती 14:13-21; मरकुस 2:30-44; यूहन्ना 6:1-14)

10फिर जब प्रेरित लौट कर आये तो उन्होंने जो कुछ
किया था, सब यीशु को बताया। सो वह उन्हें वहाँ से
अपने साथ लेकर चुपचाप बैतसैदा नामक नगर को
चला गया। 11पर भीड़ को पता चल गया सो वह भी
उसके पीछे हो ली। यीशु ने उनका स्वागत किया और
परमेश्वर के राज्य के विषय में उन्हें बताया। और
जिन्हें उपचार की आवश्यकता थी, उन्हें चंगा किया।

12जब दिन ढलने लग रहा था तो वे बारहों उसके
पास आये और बोले, "भीड़ को विदा कर ताकि वे
आसपास के गाँवों और खेतों में जाकर आसरा और
भोजन पा सकें क्योंकि हम यहाँ सुदूर निर्जन स्थान में
हैं।"

13किन्तु उसने उनसे कहा, "तुम ही इन्हें खाने को
कुछ दो।" वे बोले, "हमारे पास बस पाँच रोटियों और दो
मछलियों को छोड़ कर और कुछ भी नहीं है। तू यह तो
नहीं चाहता है कि हम जाएँ और इन सब के लिए
भोजन मोल लेकर आएँ।" 14(वहाँ लगभग पाँच हज़ार

पुरुष थे।) किन्तु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "उन्हें पचास पचास के समूहों में बैठा दो।"
15सो उन्होंने वैसा ही किया और हर किसी को बैठा दिया। 16फिर यीशु ने पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर स्वर्ग की ओर देखते हुए उनके लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया और फिर उनके टुकड़े करते हुए उन्हें अपने शिष्यों को दिया कि वे लोगों को परोस दें। 17तब सब लोग खाकर तृप्त हुए और बचे हुए टुकड़ों से उसके शिष्यों ने बारह टोकरियाँ भरीं।

यीशु ही मसीह है

(मत्ती 16:13-19; मरकुस 8:27-29)

18हुआ यह कि जब यीशु अकेले प्रार्थना कर रहा था तो उसके शिष्य भी उसके साथ थे। सो यीशु ने उनसे पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?"
19उन्होंने उत्तर दिया, "बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना, कुछ कहते हैं एलिय्याह किन्तु कुछ दूसरे कहते हैं प्राचीन युग का कोई नबी उठ खड़ा हुआ है।"
20यीशु ने उनसे कहा, "और तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" पतरस ने उत्तर दिया, "परमेश्वर का मसीह। 21किन्तु इस विषय में किसी को भी न बताने की चेतावनी देते हुए यीशु ने उनसे कहा, 22"यह निश्चित है कि मनुष्य का पुत्र बहुत सी यातनाएँ झेलेगा और वह बुजुर्ग यहूदी नेताओं, याजकों और धर्मशास्त्रियों द्वारा नकारा जाकर मरवा दिया जायेगा। और फिर तीसरे दिन जीवित कर दिया जायेगा।"
23फिर उसने उन सब से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे चलना चाहता है तो उसे अपने आप को नकारना होगा और उसे हर दिन अपना क्रूस उठाना होगा। तब वह मेरे पीछे चले। 24क्योंकि जो कोई अपना जीवन बचाना चाहता है, वह उसे खो बैठेगा पर जो कोई मेरे लिये अपने जीवन का त्याग करता है, वही उसे बचा पायेगा। 25क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति का क्या लाभ है कि वह सारे संसार को तो प्राप्त कर ले किन्तु अपने आप को नष्ट कर दे या भटक जाये। 26जो कोई भी मेरे लिये या मेरे शब्दों के लिये लज्जित है,उसके लिये परमेश्वर का पुत्र भी जब अपने वैभव, अपने परमपिता और पवित्र स्वर्गदूतों के वैभव में प्रकट होगा तो उसके लिये लज्जित होगा। 27किन्तु मैं सच्चाई के साथ तुमसे कहता हूँ यहाँ कुछ ऐसे खड़े हैं, जो तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे, जब तक परमेश्वर के राज्य को देख न लें।"

मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु

(मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8)

28इन शब्दों के कहने के लगभग आठ दिन बाद वह पतरस, यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने के लिए पहाड़ के ऊपर गया। 29फिर ऐसा हुआ कि प्रार्थना करते हुए उसके मुख का स्वरूप कुछ भिन्न ही हो गया और उसके वस्त्र चमचम करते सफेद हो गये। 30वहीं उससे बात करते हुए दो पुरुष प्रकट हुए। वे मूसा और एलिय्याह थे। 31जो अपनी महिमा के साथ प्रकट हुए थे और यीशु की मृत्यु के विषय में बात कर रहे थे जिसे वह यरुशलेम में पूरा करने पर था। 32किन्तु पतरस और वे जो उसके साथ थे नींद से घिरे थे। सो जब वे जागे तो उन्होंने यीशु की महिमा को देखा और उन्होंने उन दो जनों को भी देखा जो उसके साथ खड़े थे। 33और फिर हुआ यूँ कि जैसे ही वे उससे विदा ले रहे थे, पतरस ने यीशु से कहा, "स्वामी, अच्छा है कि हम यहाँ हैं, हमें तीन मण्डप बनाने हैं–एक तेरे लिए, एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये।" (वह नहीं जानता था, वह क्या कह रहा था।) 34वह ये बातें कर ही रहा था कि एक बादल उमड़ा और उसने उन्हें अपनी छाया में समेट लिया। जैसे ही उन पर बादल छाया, वे घबरा गये। 35तभी बादलों से आकाशवाणी हुई, "यह मेरा पुत्र है, इसे मैंने चुना है, इसकी सुनो।" 36जब आकाशवाणी हो चुकी तो उन्होंने यीशु को अकेले पाया। वे इसके बारे में चुप रहे। उन्होंने जो कुछ देखा था, उस विषय में उस समय किसी से कुछ नहीं कहा।

लड़के को दुष्टात्मा से छुटकारा

(मत्ती 17:14-18; मरकुस 9:14-27)

37अगले दिन ऐसा हुआ कि जब वे पहाड़ी से नीचे उतरे तो उन्हें एक बड़ी भीड़ मिली। 38तभी भीड़ में से एक व्यक्ति चिल्ला उठा, "गुरु, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे बेटे पर अनुग्रह–दृष्टि कर। वह मेरी इकलौती सन्तान है। 39अचानक एक दुष्ट आत्मा उसे जकड़ लेती है और वह चीख उठता है। उसे दुष्टात्मा ऐसे मरोड़ में डालती है कि उसके मुँह से झाग निकलने लगता है। वह उसे कभी नहीं छोड़ती और सताए जा रही है। 40मैंने तेरे शिष्यों से प्रार्थना की कि वह उसे बाहर निकाल दें किन्तु वे ऐसा नहीं कर सके।"
41तब यीशु ने उत्तर दिया, "अरे अविश्वासियो और भटकाये गये लोगो, मैं और कितने दिन तुम्हारे साथ रहूँगा और कब तक तुम्हारी सहता रहूँगा? अपने बेटे को यहाँ ला।" 42अभी वह लड़का आ ही रहा था कि दुष्टात्मा ने उसे पटकी दी और मरोड़ दिया। किन्तु यीशु ने दुष्ट आत्मा को फटकारा और लड़के को निरोग करके वापस उसके पिता को सौंप दिया। 43वे सभी परमेश्वर की इस महानता से चकित हो उठे।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की चर्चा

(मत्ती 17:22-23; मरकुस 9:30-32)

यीशु जो कुछ कर रहा था उसे देखकर लोग जब आश्चर्य कर रहे थे तभी यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, 44"अब जो मैं तुमसे कह रहा हूँ, उन बातों पर ध्यान दो।

मनुष्य का पुत्र मनुष्य के हाथों पकड़वाया जाने वाला है।" 45किन्तु वे इस बात को नहीं समझ सके। यह बात उनसे छुपी हुई थी। सो वे उसे जान नहीं पाये। और वे उस बात के विषय में उससे पूछने से डरते थे।

सबसे बड़ा कौन?

(मत्ती 18:1-5; मरकुस 9:33-37)

46एक बार यीशु के शिष्यों के बीच इस बात पर विवाद छिड़ा कि उनमें सबसे बड़ा कौन है? 47यीशु ने जान लिया कि उनके मन में क्या विचार हैं। सो उसने एक बच्चे को लिया और उसे अपने पास खड़ा करके 48उनसे बोला, "जो कोई इस छोटे बच्चे का मेरे नाम में सत्कार करता है, वह मानों मेरा ही सत्कार कर रहा है। और जो कोई मेरा सत्कार करता है, वह उसका ही सत्कार कर रहा है जिसने मुझे भेजा है। इसीलिए जो तुममें सबसे छोटा है, वही सबसे बड़ा है।"

जो तुम्हारा विरोधी नहीं है, वह तुम्हारा ही है

(मरकुस 9:38-40)

49यूहन्ना ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, "स्वामी, हमने तेरे नाम पर एक व्यक्ति को दुष्टात्माएँ निकालते देखा है। हमने उसे रोकने का प्रयत्न किया, क्योंकि वह हममें से कोई नहीं है, जो तेरा अनुसरण करते हैं।"

50इस पर यीशु ने यूहन्ना से कहा, "उसे रोक मत क्योंकि जो तेरे विरोध में नहीं है, वह तेरे पक्ष में ही है।"

एक सामरी नगर

51अब ऐसा हुआ कि जब उसे ऊपर स्वर्ग में ले जाने का समय आया तो वह यरूशलेम जाने का निश्चय कर चल पड़ा। 52उसने अपने दूतों को पहले ही भेज दिया था। वे चल पड़े और उसके लिये तैयारी करने को एक सामरी गाँव में पहुँचे। 53किन्तु सामरियों ने वहाँ उसका स्वागत सत्कार नहीं किया क्योंकि वह यरूशलेम को जा रहा था। 54जब उसके शिष्यों–याकूब और यूहन्ना ने यह देखा तो वे बोले, "प्रभु क्या तू चाहता है कि हमआदेश दें कि आकाश से अग्नि बरसे और उन्हें भस्म कर दे?"

55इस पर वह उनकी तरफ़ मुड़ा और उनको डाँटा फटकारा,* 56फिर वे दूसरे गाँव चले गये।

यीशु का अनुसरण

(मत्ती 8:19-22)

57जब वे राह किनारे चले जा रहे थे किसी ने उससे कहा, "तू जहाँ कहीं भी जाये, मैं तेरे पीछे चलूँगा।"

58यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के पास खोह होते हैं। और आकाश की चिड़ियाओं के भी घोंसले होते हैं किन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर टिकाने तक को कोई स्थान नहीं है।" 59उसने किसी दूसरे से कहा, "मेरे पीछे हो ले।"

किन्तु वह व्यक्ति बोला, "हे प्रभु, मुझे जाने दे ताकि मैं पहले अपने पिता को दफ़न कर आऊँ।"

60तब यीशु ने उससे कहा, "मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दे, तू जा और परमेश्वर के राज्य की घोषणा कर।"

61फिर किसी और ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे पीछे चलूँगा किन्तु पहले मुझे अपने घर वालों से विदा ले आने दे।"

62इस पर यीशु ने उससे कहा, "ऐसा कोई भी जो हल पर हाथ रखने के बाद पीछे देखता है, परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है।"

यीशु द्वारा सत्तर शिष्यों का भेजा जाना

10 इन घटनाओं के बाद प्रभु ने सत्तर* व्यक्तियों को और नियुक्त किया और फिर जिन–जिन नगरों और स्थानों पर उसे स्वयं जाना था, दो–दो करके उसने उन्हें अपने से आगे भेजा। 2वह उनसे बोला, "फसल बहुत व्यापक है किन्तु, काम करने वाले मज़दूर कम हैं। इसलिए फसल के प्रभु से विनती करो कि वह अपनी फसलों में मज़दूर भेजे। 3जाओ और याद रखो, मैं तुम्हें 'भेड़ियों' के बीच भेड़ के मेमनों के समान भेज रहा हूँ। 4अपने साथ न कोई बटुआ, न थैला और न ही जूते लेना। रास्ते में किसी से नमस्कार तक मत करो। 5जिस किसी घर में जाओ, सबसे पहले कहो 'इस घर को शान्ति मिले।' 6यदि वहाँ कोई शान्तिपूर्ण व्यक्ति होगा तो तुम्हारी शान्ति उसे प्राप्त होगी। किन्तु यदि वह व्यक्ति शान्तिपूर्ण नहीं होगा तो तुम्हारी शान्ति तुम्हारे पास लौट आयेगी। 7जो कुछ वे लोग तुम्हें दें, उसे खाते पीते उसी घर में ठहरो। क्योंकि मज़दूरी पर मज़दूर का हक है। घर–घर मत फिरते रहो। 8और जब कभी तुम किसी नगर में प्रवेश करो और उस नगर के लोग तुम्हारा स्वागत सत्कार करें तो जो कुछ वे तुम्हारे सामने परोसें, बस वही खाओ। 9उस नगर के रोगियों को निरोग करो और उनसे कहो 'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।' 10और जब कभी तुम किसी ऐसे नगर में जाओ जहाँ के लोग तुम्हारा सम्मान न करें, तो वहाँ की गलियों में जा कर कहो, 11'इस नगर की वह धूल तक जो हमारे पैरों में लगी है, हम तुम्हारे विरोध में यहीं पोंछे जा रहे हैं। फिर भी यह

पद 55 कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है। "और यीशु ने कहा, 'क्या तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा से सम्बन्ध रखते हो? 56मनुष्य का पुत्र मनुष्य की आत्माओं को नष्ट करने नहीं बल्कि उनका उद्धार करने आया है।'"

सत्तर लूका ने कदाचित यह संख्या बहत्तर लिखी थी किन्तु लूका की कुछ ग्रीक प्रतियों में यह संख्या सत्तर भी मिलती है।

ध्यान रहे कि परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुँचा है।'
12मैं तुमसे कहता हूँ कि उस दिन उस नगर के लोगों से
सदोम के लोगों की दशा कहीं अच्छी होगी।"

अविश्वासियों को यीशु की चेतावनी
(मत्ती 11:20-24)

13"ओ खुराजीन, ओ बैतसैदा, तुम्हें धिक्कार है, क्योंकि
जो आश्चर्य कर्म तुममें किये गए, यदि उन्हें सूर और
सैदा में किया जाता, तो न जाने वे कब के टाट के
शोक-वस्त्र धारण कर और राख में बैठ कर मन
फिरा लेते। 14कुछ भी हो न्याय के दिन सूर और सैदा
की स्थिति तुमसे कहीं अच्छी होगी। 15अरे कफ़रनहूम
क्या तू स्वर्ग तक ऊँचा उठाया जायेगा? तू तो नीचे नरक
में पड़ेगा!

16"शिष्यो! जो कोई तुम्हें सुनता है, मुझे सुनता है,
और जो तुम्हारा निषेध करता है, वह मेरा निषेध
करता है। और जो मुझे नकारता है, वह उसे नकारता
है जिसने मुझे भेजा है।"

शैतान का पतन

17फिर वे सत्तर आनन्द के साथ वापस लौटे और
बोले, "हे प्रभु, दुष्टात्माएँ तक तेरे नाम में हमारी आज्ञा
मानती हैं!" 18इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैंने शैतान
को आकाश से बिजली के समान गिरते देखा है। 19सुनो!
साँपों और बिच्छुओं को पैरों तले रौंदने और शत्रु की
समूची शक्ति पर प्रभावी होने का सामर्थ्य मैंने तुम्हें दे
दिया है। तुम्हें कोई कुछ हानि नहीं पहुँचा पायेगा। 20किन्तु
बस इसी बात पर प्रसन्न मत होओ कि आत्माएँ तुम्हारे
वश में हैं बल्कि इस पर प्रसन्न होओ कि तुम्हारे नाम
स्वर्ग में अंकित हैं।"

यीशु की परम पिता से प्रार्थना
(मत्ती 11:25-27; 13:16-17)

21उस क्षण वह पवित्र आत्मा में स्थित होकर आनन्दित
हुआ और बोला, "हे परम पिता! हे स्वर्ग और धरती के
स्वामी! मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तूने इन बातों को
चतुर और प्रतिभावान लोगों से छुपा कर रखते हुए भी
शिशुओं* के लिये उन्हें प्रकट कर दिया। हे परम
पिता! निश्चय ही तू ऐसा ही करना चाहता था।

22"मुझे मेरे पिता द्वारा सब कुछ दिया गया है और
पिता के सिवाय कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है और
पुत्र के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि पिता कौन है,
या उसके सिवा जिसे पुत्र इसे प्रकट करना चाहता है।"

23फिर शिष्यों की तरफ मुड़ कर उसने चुपके से
कहा, "धन्य हैं वे आँखें जो तुम देख रहे हो, उसे देखती
हैं। 24क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि उन बातों को बहुत
से नबी और राजा देखना चाहते थे, जिन्हें तुम देख रहे
हो, पर देख नहीं सके। जिन बातों को तुम सुन रहे हो,
वे उन्हें सुनना चाहते थे, पर वे सुन न पाये।"

अच्छे सामरी की कथा

25तब एक न्यायशास्त्री खड़ा हुआ और यीशु की
परीक्षा लेने के लिये उससे पूछा, "गुरु, अनन्त जीवन
पाने के लिये मैं क्या करूँ?"

26इस पर यीशु ने उस से कहा, "व्यवस्था के विधि में
क्या लिखा है, वहाँ तू क्या पढ़ता है?"

27उसने उत्तर दिया, "'तू अपने समूचे मन, सम्पूर्ण
आत्मा, सारी शक्ति और समग्र बुद्धि से अपने प्रभु से
प्रेम कर'।* और 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार कर,
जैसे तू अपने आप से करता है।'"*

28तब यीशु ने उससे कहा, "तूने ठीक उत्तर दिया है।
तो तू ऐसा ही कर इसी से तू जीवित रहेगा।"

29किन्तु उसने अपने को न्याय संगत ठहराने की
इच्छा करते हुए यीशु से कहा, "और मेरा पड़ोसी कौन
है?"

30यीशु ने उत्तर में कहा, "देखो, एक व्यक्ति यरूशलेम
से यरीहो जा रहा था कि वह डाकुओं से घिर गया।
उन्होंने सब कुछ छीन कर उसे नंगा कर दिया और
मार पीट कर उसे अधमरा छोड़, वे चले गये। 31अब
संयोग से उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था। जब
उसने इसे देखा तो वह मुँह मोड़ कर दूसरी ओर चला
गया। 32उसी रास्ते होता हुआ, एक लेवी* भी वहीं
आया। उसने उसे देखा और वह भी मुँह मोड़ कर दूसरी
ओर चला गया। 33किन्तु एक सामरी भी जाते हुए वहीं
आया जहाँ वह पड़ा था। जब उसने उस व्यक्ति को देखा
तो उसके लिये उसके मन में करुणा उपजी, 34सो वह
उसके पास आया और उसके घावों पर तेल और
दाखरस डाल कर पट्टी बाँध दी। फिर वह उसे अपने
पशु पर लाद कर एक सराय में ले गया और उसकी
देखभाल करने लगा। 35अगले दिन उसने दो दीनारी
निकाली और उन्हें सराय वाले को देते हुए बोला,
'इसका ध्यान रखना और इससे अधिक जो कुछ तेरा
खर्चा होगा, जब मैं लौटूँगा, तुझे चुका दूँगा।'

36"बता तेरे विचार से डाकुओं के बीच घिरे व्यक्ति
का पड़ोसी इन तीनों में से कौन हुआ?"

37न्यायशास्त्री ने कहा, "वही जिसने उस पर दया
की।"

शिशुओं शिशुओं से अभिप्राय है सीधे सादे सरल अबोध जन।

"तू अपने ... प्रेम कर" व्यवस्था. 6:5

"अपने ... करता है" लैव्य. 19:18

लेवी लेविय समूह का एक व्यक्ति। यह परिवार समूह मंदिर में यहूदी याजक का सहायक होता था।

इस पर यीशु ने उससे कहा, "जा और वैसा ही कर जैसा उसने किया!"

मरियम और मार्था

38जब यीशु और उसके शिष्य अपनी राह चले जा रहे थे तो यीशु एक गाँव में पहुँचा। एक स्त्री ने, जिसका नाम मार्था था, उदारता के साथ उसका स्वागत सत्कार किया। 39उसकी मरियम नाम की एक बहन थी जो प्रभु के चरणों में बैठी, जो कुछ वह कह रहा था, उसे सुन रही थी। 40उधर तरह तरह की तैयारियों में लगी मार्था व्याकुल होकर यीशु के पास आयी और बोली, "हे प्रभु, क्या तुझे चिंता नहीं है कि मेरी बहन ने सारा काम बस मुझ ही पर डाल दिया है? इसलिए उससे मेरी सहायता करने को कह।"

41प्रभु ने उसे उत्तर दिया, "मार्था, हे मार्था, तू बहुत सी बातों के लिये चिंतित और व्याकुल रहती है। 42किन्तु बस एक ही बात आवश्यक है, और मरियम ने क्योंकि अपने लिये उसी उत्तम अंश को चुन लिया है, सो वह उससे नहीं छीना जायेगा।"

प्रार्थना

(मत्ती 6:9-15; मरकुस 7:7-11)

11 अब ऐसा हुआ कि यीशु कहीं प्रार्थना कर रहा था। जब वह प्रार्थना समाप्त कर चुका तो उसके एक शिष्य ने उससे कहा, "हे प्रभु, हमें सिखा कि हम प्रार्थना कैसे करें। जैसा कि यूहन्ना ने अपने शिष्यों को सिखाया था।"

2इस पर वह उनसे बोला, "तुम प्रार्थना करो, तो कहो: 'हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आवे, 3हमारी दिन भर की रोटी प्रतिदिन दिया कर।

4हमारे अपराध क्षमा कर, क्योंकि हमने भी अपने अपराधी क्षमा किये, हमे कठिन परीक्षा में मत पड़ने दे।'"

माँगते रहो

5फिर उसने उनसे कहा, "मानो तुममें से किसी का एक मित्र है, सो तुम आधी रात उसके पास जाकर कहते हो, 'हे मित्र, मुझे तीन रोटियाँ दे। 6क्योंकि मेरा एक मित्र अभी-अभी यात्रा पर मेरे पास आया है और मेरे पास उसके सामने परोसने के लिए कुछ भी नहीं है।' 7और कल्पना करो उस व्यक्ति ने भीतर से उत्तर दिया, 'मुझे तंग मत कर, द्वार बंद हो चुका है, बिस्तर में मेरे साथ मेरे बच्चे हैं, सो तुझे कुछ भी देने मैं खड़ा नहीं हो सकता।' 8मैं तुम्हें बताता हूँ वह यद्यपि नहीं उठेगा और तुम्हें कुछ नहीं देगा, किन्तु फिर भी क्योंकि वह तुम्हारा मित्र है, सो तुम्हारे निरन्तर, बिना संकोच मांगते रहने से वह खड़ा होगा और तुम्हारी आवश्यकता भर, तुम्हें देगा। 9और इसीलिये मैं तुमसे कहता हूँ माँगो, तुम्हें दिया जाएगा। खोजो, तुम पाओगे। खटखटाओ, तुम्हारे लिए द्वार खोल दिया जायेगा। 10क्योंकि हर कोई जो माँगता है, पाता है। जो खोजता है, उसे मिलता है। और जो खटखटाता है, उसके लिए द्वार खोल दिया जाता है। 11तुममें ऐसा पिता कौन होगा जो यदि उसका पुत्र मछली माँगे, तो मछली के स्थान पर उसे साँप थमा दे 12और यदि वह अण्डा माँगे तो उसे बिच्छू दे दे। 13सो बुरे होते हुए भी जब तुम जानते हो कि अपने बच्चों को उत्तम उपहार कैसे दिये जाते हैं, तो स्वर्ग में स्थित परम पिता, उन्हें पवित्र आत्मा कितना अधिक से अधिक देगा जो उससे माँगते हैं,।"

यीशु में परमेश्वर की शक्ति

(मत्ती 12:22-30; मरकुस 3:20-27)

14फिर जब यीशु एक गूँगा बना डालने वाली दुष्टात्मा को निकाल रहा था तो ऐसा हुआ कि जैसे ही वह दुष्टात्मा बाहर निकली, तो वह गूँगा, बोलने लगा। भीड़ के लोग इससे बहुत चकित हुए। 15किन्तु उनमें से कुछ ने कहा, "यह दैत्यों के शासक बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।"

16किन्तु औरों ने उसे परखने के लिये किसी स्वर्गीय चिन्ह की माँग की। 17किन्तु यीशु जान गया कि उनके मनों में क्या है। सो वह उनसे बोला, "वह राज्य जिसमें अपने भीतर ही फूट पड़ जाये, नष्ट हो जाता है और ऐसे ही किसी घर का भी फूट पड़ने पर उसका नाश हो जाता है। 18यदि शैतान अपने ही विरुद्ध फूट पड़े तो उसका राज्य कैसे टिक सकता है? यह मैंने तुमसे इसलिये पूछा है कि तुम कहते हो कि मैं बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ। 19किन्तु यदि मैं बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ तो तुम्हारे अनुयायी उन्हें किसकी सहायता से निकालते हैं? सो तुझे तेरे अपने लोग ही अनुचित सिद्ध करेंगे। 20किन्तु यदि मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर की शक्ति से निकालता हूँ तो यह स्पष्ट है कि परमेश्वर का राज्य तुम तक आ पहुँचा है!

21"जब एक शक्तिशाली मनुष्य पूरी तरह हथियारकसे अपने घर की रक्षा करता है तो उसकी सम्पत्ति सुरक्षित रहती है। 22किन्तु जब कभी कोई उससे अधिक शक्तिशाली उस पर हमला कर उसे हरा देता है तो वह उसके सभी हथियारों को, जिन पर उसे भरोसा था, उससे छीन लेता है और लूट के माल को वे आपस में बाँट लेते हैं। 23"जो मेरे साथ नहीं है, मेरे विरोध में है और वह जो मेरे साथ बटोरता नहीं है, बिखेरता है।"

खाली व्यक्ति

(मत्ती 12:43-45)

24"जब कोई दुष्टात्मा किसी मनुष्य से बाहर निकलती

है तो विश्राम को खोजते हुए सूखे स्थानों से होती हुई
जाती है और जब उसे आराम नहीं मिलता तो वह
कहती हैं, 'मैं अपने उसी घर लौटूँगी जहाँ से गयी हूँ।'
25और वापस जाकर वह उसे साफ़ सुथरा और व्यवस्थित
पाती है। 26फिर वह जाकर अपने से भी अधिक दुष्ट
अन्य सात दुष्टात्माओं को वहाँ लाती है। फिर वे उसमें
जाकर रहने लगती हैं। इस प्रकार उस व्यक्ति की बाद
की यह स्थिति पहली स्थिति से भी अधिक बुरी हो
जाती है!"

वे धन्य हैं

27फिर ऐसा हुआ कि जैसे ही यीशु ने ये बातें कहीं,
भीड़ में से एक स्त्री उठी और ऊँचे स्वर में बोली, "वह
गर्भ धन्य है, जिसने तुझे धारण किया। वे स्तन धन्य है,
जिनका तूने पान किया है।"
28इस पर उसने कहा, "धन्य तो बल्कि वे हैं जो
परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!"

प्रमाण की माँग

(मत्ती 12:38-42; मरकुस 8:12)

29जैसे जैसे भीड़ बढ़ रही थी, वह कहने लगा, "यह
एक दुष्ट पीढ़ी है। यह कोई चिह्न देखना चाहती है।
किन्तु इसे योना के चिन्ह के सिवा और कोई चिह्न नहीं
दिया जायेगा। 30क्योंकि जैसे नीनवे के लोगों के लिए
योना चिह्न बना, वैसे ही इस पीढ़ी के लिये मनुष्य का
पुत्र भी चिह्न बनेगा। 31दक्षिण की रानी* न्याय के दिन
प्रकट होकर इस पीढ़ी के लोगों पर अभियोग लगायेगी
और उन्हें दोषी ठहरायेगी क्योंकि वह धरती के दूसरे
छोरों से सुलेमान का ज्ञान सुनने को आयी और अब
देखो यहाँ तो कोई सुलेमान से भी बड़ा है। 32नीनवे के
लोग न्याय के दिन इस पीढ़ी के लोगों के विरोध में खड़े
होकर उन पर दोष लगायेंगे क्योंकि उन्होंने योना के
उपदेश को सुन कर मन फिराया था। और देखो अब
तो योना से भी महान कोई यहाँ है!

विश्व का प्रकाश बनो

(मत्ती 5:15; 6-22:23)

33"दीपक जलाकर कोई भी उसे किसी छिपे स्थान
या किसी बर्तन के भीतर नहीं रखता, बल्कि वह इसे
दीवट पर रखता है ताकि जो भीतर आयें प्रकाश देख
सकें। 34तुम्हारी देह का दीपक तुम्हारी आँखें हैं, सो यदि
आँखें साफ हैं तो सारी देह प्रकाश से भरी है किन्तु, यदि
ये बुरी हैं तो तुम्हारी देह अंधकारमय हो जाती है। 35सो
ध्यान रहे कि तुम्हारे भीतर का प्रकाश अंधकार नहीं
है। 36अत: यदि तुम्हारा सारा शरीर प्रकाश से परिपूर्ण है
और इसका कोई भी अंग अंधकारमय नहीं है तो वह
पूरी तरह ऐसे चमकेगा मानो कोई दीपक तुम पर
अपनी किरणों में चमक रहा हो।"

यीशु द्वारा फरीसियों की आलोचना

(मत्ती 23:1-36; मरकुस 12:38-40; लूका 20:45-47)

37यीशु ने जब अपनी बात समाप्त की तो एक फरीसी
ने उससे अपने साथ भोजन करने का आग्रह किया। सो
वह भीतर जाकर भोजन करने बैठ गया। 38किन्तु जब
उस फरीसी ने यह देखा कि भोजन करने से पहले
उसने अपने हाथ नहीं धोये तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।
39इस पर प्रभु ने उनसे कहा, "अब देखो तुम फरीसी
थाली और कटोरी को बस बाहर से तो माँजते हो पर
भीतर से तुम हुए लोग लालच और दुष्टता से भरे हो।
40अरे मूर्ख लोगो! क्या जिसने बाहरी भाग को बनाया,
वही भीतरी भाग को भी नहीं बनाता? 41इसलिए जो
कुछ भीतर है, उसे दीनों को दे दो। फिर तेरे लिए सब
कुछ पवित्र हो जायेगा। 42अरे फ़रीसियो! तुम्हें धिक्कार
है क्योंकि तुम अपने पुदीने और सुदाब बूटी और हर
किसी जड़ी बूटी का दसवाँ हिस्सा तो अर्पित करते हो
किन्तु परमेश्वर के लिये प्रेम और न्याय की उपेक्षा
करते हो। किन्तु इन बातों को तुम्हें उन बातों की
उपेक्षा किये बिना करना चाहिये था। 43ओ फरीसियो,
तुम्हें धिक्कार है! क्योंकि तुम यहूदी प्रार्थना सभाओं में
अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आसन चाहते हो और बाज़ारों में
सम्मानपूर्ण नमस्कार लेना तुम्हें भाता है। 44तुम्हें धिक्कार
है क्योंकि तुम बिना किसी पहचान की उन क़ब्रों के
समान हो जिन पर लोग अनजाने ही चलते हैं।"

यहूदी धर्मशास्त्रियों से यीशु की बातचीत

45तब एक न्यायशास्त्री ने यीशु से कहा, "गुरु, जब तू
ऐसी बातें कहता है तो हमारा भी अपमान करता है।"
46इस पर यीशु ने कहा, "अरे न्यायशास्त्रियो! तुम्हें
धिक्कार है। क्योंकि तुम लोगों पर ऐसे बोझ लादते हो
जिन्हें उठाना कठिन है। और तुम स्वयं उन बोझों को
एक उँगली तक से छूना भर नहीं चाहते। 47तुम्हें धिक्कार
है क्योंकि तुम नबियों के लिये कब्रें बनाते हो जबकि वे
तुम्हारे पूर्वज ही थे जिन्होंने उनकी हत्या की। 48इससे
तुम यह दिखाते हो कि तुम अपने पूर्वजों के उन कामों
का समर्थन करते हो। क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मारा
और तुमने उनकी कब्रें बनाईं। 49इसीलिये परमेश्वर के
ज्ञान ने भी कहा, 'मैं नबियों और प्रेरितों को भी उनके
पास भेजूँगा। फिर कुछ को तो वे मार डालेंगे और कुछ
को यातनाएँ देंगे।' 50इसीलिये संसार के प्रारम्भ से जितने
भी नबियों का खून बहाया गया है, उसका हिसाब इस
पीढ़ी के लोगों से चुकता किया जायेगा। 51यानी हाबिल
की हत्या से लेकर जकरयाह की हत्या तक का हिसाब,

दक्षिण की रानी अर्थात् शीना हज़ार मील चल कर सुलैमान से परमेश्वर का ज्ञान सीखने आयी थी।

जो परमेश्वर के मंदिर और वेदी के बीच की गयी थी। हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ इस पीढ़ी के लोगों को इसके लिए लेखा जोखा देना ही होगा।

52"हे न्याय शास्त्रियो, तुम्हें धिक्कार है, क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी ले तो ली है। पर उसमें न तो तुमने खुद प्रवेश किया और जो प्रवेश करने का जतन कर रहे थे उनको भी तुमने बाधा पहुँचाई।"

53और फिर जब यीशु वहाँ से चला गया तो वे धर्म शास्त्री और फरीसी उससे घोर शत्रुता रखने लगे। बहुत सी बातों के बारे में वे उससे तीखे प्रश्न पूछने लगे। 54क्योंकि वे उसे उसकी कही किसी बात से फँसाने की टोह में लगे थे।

फरीसियों जैसे मत बनो

12 और फिर जब हजारों की इतनी भीड़ आ जुटी कि लोग एक दूसरे को कुचल रहे थे तब यीशु पहले अपने शिष्यों से कहने लगा, "फरीसियों के ख़मीर से, जो उनका कपट है, बचे रहो। 2कुछ छिपा नहीं है जो प्रकट नहीं कर दिया जायेगा। ऐसा कुछ अनजाना नहीं है जिसे जना नहीं दिया जायेगा। 3इसीलिये हर वह बात जिसे तुमने अँधेरे में कहा है, उजाले में सुनी जायेगी। और एकांत कमरों में जो कुछ भी तुमने चुपचाप किसी के कान में कहा है, मकानों की छतों पर से घोषित किया जायेगा।

बस परमेश्वर से डरो

(मत्ती 10:28-31)

4"किन्तु मेरे मित्रो! मैं तुमसे कहता हूँ उनसे मत डरो जो बस तुम्हारे शरीर को मार सकते हैं और उसके बाद ऐसा कुछ नहीं है जो उनके बस में हो। 5मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि तुम्हें किस से डरना चाहिये। उससे डरो जो तुम्हें मारकर नरक में डालने की शक्ति रखता है। हाँ, मैं तुम्हें बताता हूँ, बस उसी से डरो।

6"क्या दो पैसे की पाँच चिड़ियाएँ नहीं बिकती? फिर भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता। 7और देखो तुम्हारे सिर का एक एक बाल तक गिना हुआ है। डरो मत तुम तो बहुत सी चिड़ियाओं से कहीं अधिक मूल्यवान हो।"

यीशु के नाम पर लज्जाओ मत

(मत्ती 10:32-33; 12:32; 10:19-20)

8"किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ जो कोई व्यक्ति सभी के सामने मुझे स्वीकार करता है, मनुष्य का पुत्र भी उस व्यक्ति को परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने स्वीकार करेगा। 9किन्तु वह जो मुझे दूसरों के सामने न कारेगा, उसे परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने नकार दिया जायेगा।

10"और हर उस व्यक्ति को तो क्षमा कर दिया जायेगा जो मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई शब्द बोलता है, किन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करता है, उसे क्षमा नहीं किया जायेगा।

11"सो जब वे तुम्हें यहूदी धर्म–सभाओं, शासकों और अधिकारियों के सामने ले जायें तो चिंता मत करो कि तुम अपना बचाव कैसे करोगे या तुम्हें क्या कुछ कहना होगा।

12चिंता मत करो क्योंकि पवित्र आत्मा तुम्हें सिखायेगा कि उस समय तुम्हें क्या बोलना चाहिये।"

स्वार्थ के विरुद्ध चेतावनी

13फिर भीड़ में से उससे किसी ने कहा, "गुरु, मेरे भाई से पिता की सम्पत्ति का बँटवारा करने को कह दे।"

14इस पर यीशु ने उससे कहा, "अरे भले मानुष, मुझे तुम्हारा न्यायी या बँटवारा करने वाला किसने बनाया है?" 15सो यीशु ने उनसे कहा, "सावधानी के साथ सभी प्रकार के लोभ से अपने आप को दूर रखो। क्योंकि आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति होने पर भी जीवन का आधार उसका संग्रह नहीं होता।"

16फिर उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा सुनाई: "किसी धनी व्यक्ति की धरती पर भरपूर उपज हुई। 17वह अपने मन में सोचते हुए कहने लगा, 'मैं क्या करूँ, मेरे पास फ़सल को रखने के लिये स्थान तो है नहीं।' 18फिर उसने कहा, 'ठीक है मैं यह करूँगा कि अपने अनाज के कोठों को गिरा कर बड़े कोठे बनवाऊँगा और अपने समूचे अनाज को और सामान को वहाँ रख छोड़ूँगा।' 19फिर अपनी आत्मा से कहूँगा, 'अरे मेरी आत्मा अब बहुत सी उत्तम वस्तुएँ, बहुत से बरसों के लिये तेरे पास संचित हैं। घबरा मत, खा, पी और मौज उड़ा।' 20किन्तु परमेश्वर उससे बोला, 'अरे मूर्ख, इसी रात तेरी आत्मा तुझसे ले ली जायेगी। जो कुछ तूने तैयार किया है, उसे कौन लेगा?' 21देखो, उस व्यक्ति के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है, वह अपने लिए भंडार भरता है किन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वह धनी नहीं है।"

परमेश्वर से बढ़कर कुछ नहीं है

(मत्ती 6:25-34; 19:21)

22फिर उसने अपने शिष्यों से कहा, "इसीलिये मैं तुमसे कहता हूँ, अपने जीवन की चिंता मत करो कि तुम क्या खाओगे अथवा अपने शरीर की चिंता मत करो कि तुम क्या पहनोगे? 23क्योंकि जीवन भोजन से और शरीर वस्त्रों से अधिक महत्त्वपूर्ण है। 24कौवों को देखो, न वे बोते हैं, न ही वे काटते हैं। न उनके पास भंडार है और न अनाज के कोठे। फिर भी परमेश्वर उन्हें भोजन देता है। तुम तो कौवों से कितने अधिक

मूल्यवान हो। 25चिन्ता करके, तुम में से कौन ऐसा है,
जो अपनी आयु में एक घड़ी भी और जोड़ सकता है?
26क्योंकि यदि तुम इस छोटे से काम को भी नहीं कर
सकते तो शेष के लिये चिन्ता क्यों करते हो? 27कुमुदिनियों
को देखो, वे कैसे उगती हैं? न वे श्रम करती हैं, न
कताई, फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलेमान अपने
सारे वैभव के साथ उन में से किसी एक के समान भी
नहीं सज सका। 28इसलिये जब मैदान की घास को, जो
आज यहाँ है और जिसे कल ही भाड़ में झोक दिया
जायेगा, परमेश्वर ऐसे वस्त्रों से सजाता है तो ओ अल्प
विश्वासियो, तुम्हें तो वह और कितने ही अधिक वस्त्र
पहनायेगा। 29और चिन्ता मत करो कि तुम क्या खाओगे
और क्या पीओगे। इनके लिये मत सोचो। 30क्योंकि
जगत के और सभी लोग इन वस्तुओं के पीछे दौड़ रहे
हैं पर तुम्हारा पिता तो जानता ही है कि तुम्हें इन
वस्तुओं की आवश्यकता है। 31बल्कि तुम तो उसके
राज्य की ही चिन्ता करो। ये वस्तुएँ तो तुम्हें दे ही दी
जायेंगी।

धन पर भरोसा मत करो

32"मेरी भोली भेड़ो, डरो मत, क्योंकि तुम्हारा परम
पिता तुम्हें स्वर्ग का राज्य देने को तत्पर है। 33सो
अपनी सम्पत्ति बेच कर धन गरीबों में बाँट दो। अपने
पास ऐसी थैलियाँ रखो जो पुरानी न पड़ें अर्थात् कभी
समाप्त न होने वाला धन स्वर्ग में जुटाओ जहाँ उस तक
किसी चोर की पहुँच न हो। और न उसे कीड़े मकौड़े
नष्ट कर सकें। 34क्योंकि जहाँ तुम्हारा कोष है, वहीं
तुम्हारा मन भी रहेगा।

सदा तैयार रहो

(मत्ती 24:45-51)

35"कर्म करने को सदा तैयार रहो। और अपने दीपक
जलाए रखो। 36और उन लोगों के जैसे बनो जो ब्याह के
भोज से लौटकर आते अपने स्वामी की प्रतीक्षा में रहते
है ताकि, जब वह आये और द्वार खटखटाये तो वे
तत्काल उसके लिए द्वार खोल सकें। 37वे सेवक धन्य हैं
जिन्हें स्वामी आकर जागते और तैयार पाएगा। मैं तुम्हें
सच्चाई के साथ कहता हूँ कि वह भी उनकी सेवा के
लिये कमर कस लेगा और उन्हें खाने की चौकी पर
भोजन के लिए बिठायेगा। वह आयेगा और उन्हें भोजन
करायेगा। 38वह चाहे आधी रात से पहले आए और
चाहे आधी रात के बाद यदि उन्हें तैयार पाता है तो वे
धन्य है। 39इस बात के लिए निश्चित रहो कि यदि घर
के स्वामी को यह पता होता कि चोर किस घड़ी आ
रहा है, तो वह उसे अपने घर में सेंध नहीं लगाने देता।
40सो तुम भी तैयार रहो क्योंकि मनुष्य का पुत्र ऐसी
घड़ी आयेगा जिसे तुम सोच भी नहीं सकते।"

विश्वासपात्र सेवक कौन?

41तब पतरस ने पूछा, "हे प्रभु, यह दृष्टान्त कथा तू
हमारे लिये कह रहा है या सब के लिये?"
42इस पर यीशु ने कहा, "तो फिर ऐसा विश्वास-पात्र,
बुद्धिमान प्रबन्ध-अधिकारी कौन होगा जिसे प्रभु
अपने सेवकों के ऊपर उचित समय पर, उन्हें भोजन
सामग्री देने के लिये नियुक्त करेगा? 43वह सेवक धन्य
है जिसे उसका स्वामी जब आये तो उसे वैसा ही करते
पाये। 44मैं सच्चाई के साथ तुमसे कहता हूँ कि वह
उसे अपनी सभी सम्पत्तियों का अधिकारी नियुक्त
करेगा। 45किन्तु यदि वह सेवक अपने मन में यह कहे
कि मेरा स्वामी तो आने में बहुत देर कर रहा है और
वह दूसरे पुरुष और स्त्री सेवकों को मारना पीटना
आरम्भ कर दे तथा खाने-पीने और मदमस्त होने
लगे 46तो उस सेवक का स्वामी ऐसे दिन आ
जायेगा जिसकी वह सोचता तक नहीं। एक ऐसी घड़ी
जिसके प्रति वह अचेत है। फिर वह उसके
टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा और उसे अविश्वासियों के
बीच स्थान देगा।

47वह सेवक जो अपने स्वामी की इच्छा जानता है
और उसके लिए तत्पर नहीं होता या जैसा उसका
स्वामी चाहता है, वैसा ही नहीं करता, उस सेवक पर
तीखी मार पड़ेगी। 48किन्तु वह जिसे अपने स्वामी की
इच्छा का ज्ञान नहीं और कोई ऐसा काम कर बैठे जो
मार पड़ने योग्य हो तो उस सेवक पर हल्की मार
पड़ेगी। क्योंकि प्रत्येक उस व्यक्ति से जिसे बहुत अधिक
दिया गया है, अधिक अपेक्षित किया जायेगा। उस व्यक्ति
से जिसे लोगों ने अधिक सौंपा है, उससे लोग अधिक ही
माँगेंगे।

यीशु के साथ असहमति

(मत्ती 10:34-36)

49"मैं धरती पर एक आग भड़काने आया हूँ। मेरी
कितनी इच्छा है कि वह कदाचित् अभी तक भड़क
उठती। 50मेरे पास एक बपतिस्मा है जो मुझे लेना है जब
तक यह पूरा नहीं हो जाता, मैं कितना व्याकुल हूँ।
51तुम क्या सोचते हो मैं इस धरती पर शान्ति स्थापित
करने के लिये आया हूँ? नहीं! मैं तुम्हें बताता हूँ, मैं तो
विभाजन
करने आया हूँ। 52क्योंकि अब से आगे एक घर के
पाँच आदमी एक दूसरे के विरुद्ध बट जायेंगे। तीन दो के
विरोध में, और दो तीन के विरोध में हो जायेंगे।
53पिता पुत्र के विरोध में, और पुत्र पिता के विरोध
में, माँ बेटी के विरोध में, और बेटी माँ के विरोध में,
सास, बहू के विरोध में और बहू सास के विरोध में हो
जायेंगी।"

समय की पहचान
(मत्ती 16:2-3)

54फिर वह भीड़ से बोला, "जब तुम पश्चिम की ओर
से किसी बादल को उठते देखते हो तो तत्काल कह
उठते हो, 'वर्षा आ रही है' और फिर ऐसा ही होता है।
55और फिर जब दक्षिणी हवा चलती है, तुम कहते हो,
'गर्मी पड़ेगी' और ऐसा ही होता है। 56अरे कपटियो! तुम
धरती और आकाश के स्वरूपों की व्याख्या करना तो
जानते हो, फिर ऐसा क्योंकि तुम वर्तमान समय की
व्याख्या करना नहीं जानते?"

अपनी समस्याएँ सुलझाओ
(मत्ती 5:25-26)

57"जो उचित है, उसके निर्णायक तुम अपने आप
क्यों नहीं बनते? 58जब तुम अपने विरोधी के साथ
अधिकारियों के पास जा रहे हो तो रास्ते में ही उसके
साथ समझौता करने का जतन करो। नहीं तो कहीं ऐसा
न हो कि वह तुम्हें न्यायाधीश के सामने खींच ले जाये
और न्यायाधीश तुम्हें अधिकारी को सौंप दे। और
अधिकारी तुम्हें जेल में बन्द कर दे। 59मैं तुम्हें बताता हूँ,
तुम वहाँ से तब तक नहीं छूट पाओगे जब तक अंतिम
पाई तक न चुका दो।"

मन बदलो

13 उस समय वहाँ उपस्थित कुछ लोगों ने यीशु
को उन गलीलियों के बारे में बताया जिनका
रक्त पिलातुस ने उनकी बलियों के साथ मिला दिया था।
2सो यीशु ने उन से कहा, "तुम क्या सोचते हो कि ये
गलीली दूसरे सभी गलीलियों से बुरे पापी थे क्योंकि उन्हें
ये बातें भुगतनी पड़ीं? 3नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ, यदि तुम
मन नहीं, फिराओगे तो तुम सब भी वैसी ही मौत मरोगे
जैसी वे मरे थे। 4या उन अट्ठारह व्यक्तियों के विषय में
तुम क्या सोचते हो जिनके ऊपर शीलोह के बुर्ज ने गिर
कर उन्हें मार डाला। क्या सोचते हो, वे यरूशलेम में
रहने वाले दूसरे सभी व्यक्तियों से अधिक अपराधी थे?
5नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ कि यदि तुम मन न फिराओगे
तो तुम सब भी वैसे ही मरोगे।"

निष्फल पेड़

6फिर उसने यह दृष्टान्त कथा कही: "किसी व्यक्ति
ने अपनी दाख की बारी में अंजीर का एक पेड़ लगाया
हुआ था सो वह उस पर फल खोजता आया पर उसे
कुछ नहीं मिला। 7इस पर उसने माली से कहा, 'अब
देख मैं तीन साल से अंजीर के इस पेड़ पर फल ढूँढ़ता
आ रहा हूँ किन्तु मुझे एक भी फल नहीं मिला। सो इसे
काट डाल। यह धरती को यूँ ही व्यर्थ क्यों करता रहे?'
8माली ने उसे उत्तर दिया, 'हे स्वामी, इसे इस साल तब
तक छोड़ दे, जब तक मैं इसके चारों तरफ गढ़ा खोद
कर इसमें खाद लगाऊँ । 9फिर यदि यह अगले साल
फल दे तो अच्छा है और यदि नहीं दे तो तू इसे काट
सकता है।'"

सब्त के दिन स्त्री को निरोग करना

10किसी प्रार्थना सभा में सब्त के दिन यीशु जब
उपदेश दे रहा था 11तो वहीं एक ऐसी स्त्री थी जिसमें
दुष्ट आत्मा समाई हुई थी। जिसने उसे अठारह बरसों से
पंगु बनाया हुआ था। वह झुक कर कुबड़ी हो गयी थी
और थोड़ी सी भी सीधी नहीं हो सकती थी। 12यीशु ने
उसे जब देखा तो उसे अपने पास बुलाया और कहा, "हे
स्त्री, तुझे अपने रोग से छुटकारा मिला!" यह कहते हुए
13उसके सिर पर अपने हाथ रख दिये। और वह तुरंत
सीधी खड़ी हो गयी। वह परमेश्वर की स्तुति करने
लगी।
14यीशु ने क्योंकि सब्त के दिन उसे निरोग किया
था, इसलिये यहूदी प्रार्थना–सभा के नेता ने क्रोध में भर
कर लोगों से कहा, "काम करने के लिए छः दिन होते
हैं सो उन्हीं दिनों में आओ और अपने रोग दूर करवाओ
पर सब्त के दिन निरोग होने मत आओ।"
15प्रभु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "ओ कपटियो!
क्या तुममें से हर कोई सब्त के दिन अपने बैल या
अपने गधे को बाड़े से निकाल कर पानी पिलाने कहीं
नहीं ले जाता? 16अब यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है
और जिसे शैतान ने अट्ठारह साल से जकड़ रखा था,
क्या इसको सब्त के दिन इसके बंधनों से मुक्त नहीं
किया जाना चाहिये था?"
17जब उसने यह कहा तो उसका विरोध करने वाले
सभी लोग लज्जा से गढ़ गये। उधर सारी भीड़ उन
आश्चर्य पूर्ण कर्मों से जिन्हें उसने किया था, आनंदित
हो रही थी।

स्वर्ग का राज्य कैसा है?
(मत्ती 13:31-33; मरकुस 4:30-32)

18इसलिए उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य कैसा है
और मैं उसकी तुलना किससे करूँ? 19वह सरसों के
बीज जैसा है, जिसे किसी ने लेकर अपने बाग़ में बो
दिया। वह बड़ा हुआ और एक पेड़ बन गया। फिर
आकाश की चिड़ियाओं ने उसकी शाखाओं पर घोंसले
बना लिये।"
20उसने फिर कहा, "परमेश्वर के राज्य की तुलना
मैं किससे करूँ?
21यह उस ख़मीर के समान है जिसे एक स्त्री ने
लेकर तीन भाग आटे में मिलाया और वह समूचा आटा
ख़मीर युक्त हो गया।"

सँकरा द्वार

(मत्ती 7:13-14; 21:23)

22यीशु जब नगरों और गांवों से होता हुआ उपदेश
देता यरूशलेम जा रहा था। 23तभी उससे किसी ने पूछा,
"प्रभु, क्या थोड़े से ही व्यक्तियों का उद्धार होगा?" उसने
उससे कहा, 24"सँकरे द्वार से प्रवेश करने को हर
सम्भव प्रयत्न करो, क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि
भीतर जाने का प्रयत्न बहुत से करेंगे पर जा नहीं
पायेंगे। 25जब एक बार घर का स्वामी उठ कर द्वार
बन्द कर देता है, तो तुम बाहर ही खड़े दरवाज़ा खटखटाते
कहोगे, 'हे स्वामी, हमारे लिये दरवाज़ा खोल दे!' किन्तु
वह तुम्हें उत्तर देगा, 'मैं नहीं जानता तुम कहाँ से आये
हो?' 26तब तुम कहने लगोगे, 'हमने तेरे साथ खाया, तेरे
साथ पिया, तूने हमारी गलियों में हमें शिक्षा दी।' 27पर
वह तुमसे कहेगा, 'मैं नहीं जानता तुम कहाँ से आये हो?
अरे कुकर्मियो! मेरे पास से भाग जाओ।' 28तुम इब्राहीम,
इसहाक, याकूब तथा अन्य सभी नबियों को परमेश्वर
के राज्य में देखोगे किन्तु तुम्हें बाहर धकेल दिया जायेगा
तो वहाँ बस रोना और दाँत पीसना ही होगा। 29फिर पूर्व
और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोग परमेश्वर के
राज्य में आकर भोजन की चौकी पर अपना स्थान
ग्रहण करेंगे। 30ध्यान रहे कि वहाँ जो अंतिम हैं, पहले
हो जायेंगे और जो पहले हैं, वे अंतिम हो जायेंगे।"

यीशु की मृत्यु यरुशलेम में

(मत्ती 23:27-39)

31उसी समय यीशु के पास कुछ फ़रीसी आये और
उससे कहा, "हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है, इसलिये
यहाँ से कहीं और चला जा।"
32तब उसने उनसे कहा, "जाओ और उस लोमड़ *
से कहो, 'सुन मैं लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालूँगा,
मैं आज भी चंगा करूँगा और कल भी। फिर तीसरे
दिन मैं अपना काम पूरा करूँगा।' 33फिर भी मुझे
आज, कल और परसों चलते ही रहना होगा। क्योंकि
किसी नबी के लिये यह उचित नहीं होगा कि वह
यरूशलेम से बाहर प्राण त्यागे।
34"हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू नबियों की हत्या
करता है और परमेश्वर ने जिन्हें तेरे पास भेजा है, उन
पर पत्थर बरसाता है। मैंने कितनी ही बार तेरे लोगों
को वैसे ही परस्पर इकट्ठा करना चाहा है जैसे एक
मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे समेट लेती
है। पर तूने नहीं चाहा। 35देख तेरे लिये तेरा घर परमेश्वर
द्वारा बिसराया हुआ पड़ा है। मैं तुझे बताता हूँ तू मुझे उस
समय तक फिर नहीं देखेगा जब तक वह समय न आ
जाये जब तू कहेगा, 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम पर
आ रहा है।'"

क्या सब्त के दिन उपचार उचित है?

14 एक बार सब्त के दिन प्रमुख फ़रीसियों में से
किसी के घर यीशु भोजन पर गया। उधर वे
बड़ी निकटता से उस पर आँख रखे हुए थे। 2वहाँ
उसके सामने जलोदर से पीड़ित एक व्यक्ति था। 3यीशु
ने यहूदी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों से पूछा, "सब्त के
दिन किसी को निरोग करना उचित है या नही?"
4किन्तु वे चुप रहे। इसलिए यीशु ने उस आदमी को
लेकर चंगा कर दिया। और फिर उसे कहीं भेज दिया।
5फिर उसने उनसे पूछा, "यदि तुममें से किसी के पास
अपना बेटा है या बैल है, वह कुँए में गिर जाता है तो
क्या सब्त के दिन तुम उसे तत्काल बाहर नहीं निकालोगे?"
6वे इस पर उससे तर्क नहीं कर सके।

अपने को महत्त्व मत दो

7क्योंकि यीशु ने यह देखा कि अतिथि जन अपने
लिये बैठने को कोई सम्मानपूर्ण स्थान खोज रहे थे, सो
उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा सुनाई। वह बोला: 8"जब
तुम्हें कोई विवाह भोज पर बुलाये तो वहाँ किसी आदरपूर्ण
स्थान पर मत बैठो। क्योंकि हो सकता है वहाँ कोई
तुमसे अधिक बड़ा व्यक्ति उसके द्वारा बुलाया गया हो।
9फिर तुम दोनों को बुलाने वाला तुम्हारे पास आकर
तुमसे कहेगा, 'अपना यह स्थान इस व्यक्ति को दे दो।'
और फिर लज्जा के साथ तुम्हें सबसे नीचा स्थान ग्रहण
करना पड़ेगा। 10सो जब तुम्हें बुलाया जाता है तो जाकर
सबसे नीचे का स्थान ग्रहण करो जिससे जब तुम्हें
आमंत्रित करने वाला आएगा तो तुमसे कहेगा, 'हे मित्र,
उठ ऊपर बैठ।' फिर उन सब के सामने, जो तेरे
साथ वहाँ अतिथि होंगे, तेरा मान बढ़ेगा। 11क्योंकि हर
कोई जो अपने आप को उठायेगा, उसे नीचा किया
जायेगा और जो अपने आप को नीचा बनाएगा, उसे
उठाया जायेगा।"

प्रतिफल

12फिर जिसने उसे आमन्त्रित किया था, वह उससे
बोला, "जब कभी तू कोई दिन या रात का भोज दे तो
अपने मित्रों, भाई बंदों, संबंधियों या धनी मानी पड़ोसियों
को मत बुला क्योंकि बदले में वे तुझे बुलायेंगे और इस
प्रकार तुझे उसका फल मिल जायेगा। 13बल्कि जब तू
कोई भोज दे तो दीन दुखियों, अपाहिजों, लँगड़ों और
अंधों को बुला। 14फिर क्योंकि उनके पास तुझे वापस
लौटाने को कुछ नहीं है, सो यह तेरे लिए आशीर्वाद बन
जायेगा। इसका प्रतिफल तुझे धर्मी लोगों के जी उठने
पर दिया जायेगा।"

लोमड़ लोमड़ी चालाक होती है, इसलिये यीशु ने यहाँ हेरोदेस को लोमड़ के रूप में सम्बोधित करके उसे धूर्त कहना चाहा है।

बड़े भोज की दृष्टान्त कथा
(मत्ती 22:1-10)

15फिर उसके साथ भोजन कर रहे लोगों में से एक
ने यह सुनकर यीशु से कहा, "हर वह व्यक्ति धन्य है,
जो परमेश्वर के राज्य में भोजन करता है!"
16तब यीशु ने उससे कहा, "एक व्यक्ति किसी बड़े
भोज की तैयारी कर रहा था, उसने बहुत से लोगों को
न्योता दिया। 17फिर दावत के समय जिन्हें न्योता दिया
गया था, दास को भेजकर यह कहलवाया, 'आओ
क्योंकि अब भोजन तैयार है।' 18वे सभी एक जैसे
आनाकानी करने लगे। पहले ने उससे कहा, 'मैंने एक
खेत मोल लिया है, मुझे जा कर उसे देखना है, कृपया
मुझे क्षमा करें।' 19फिर दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़ी
बैल मोल लिये हैं, मैं तो बस उन्हें परखने जा ही रहा हूँ,
कृपया मुझे क्षमा करें।' 20एक और भी बोला, 'मैंने
पत्नी ब्याही है, इस कारण मैं नहीं आ सकता।' 21सो
जब वह सेवक लौटा तो उसने अपने स्वामी को ये बातें
बता दी। इस पर उस घर का स्वामी बहुत क्रोधित हुआ
और अपने सेवक से कहा, 'शीघ्र ही नगर के गली
कूँचों में जा और दीन–हीनों, अपाहिजों, अंधों और
लँगड़ों को यहाँ बुला ला।' 22उस दास ने कहा, 'हे
स्वामी, तुम्हारी आज्ञा पूरी कर दी गयी है किन्तु अभी
भी स्थान बचा है।' 23फिर स्वामी ने सेवक से कहा,
'सड़कों पर और खेतों की मेढ़ों तक जाओ और वहाँ से
लोगों को आग्रह करके यहाँ बुला लाओ ताकि मेरा घर
भर जाये। 24और मैं तुमसे कहता हूँ जो पहले बुलाये गये
थे उनमें से एक भी मेरे भोज को न चखे!'"

नियोजित बनो
(मत्ती 10:37-38)

25यीशु के साथ अपार जन समूह जा रहा था। वह
उनकी तरफ़ मुड़ा और बोला, 26"यदि मेरे पास कोई
भी आता है और अपने पिता, माता, पत्नी और बच्चों,
अपने भाइयों और बहनों और यहाँ तक कि अपने
जीवन तक से मुझ से अधिक प्रेम रखता है, वह मेरा
शिष्य नहीं हो सकता! 27जो अपना क्रूस उठाये बिना
मेरे पीछे चलता है, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता।
28यदि तुममें से कोई बुर्ज बनाना चाहे तो क्या वह पहले
बैठ कर उसके मूल्य का, यह देखने के लिये कि उसे
पूरा करने के लिये उसके पास काफ़ी कुछ है या नहीं,
हिसाब–किताब नहीं लगायेगा? 29नहीं तो वह नींव तो
डाल देगा और उसे पूरा न कर पाने से, जिन्होंने उसे
शुरू करते देखा, सब उसकी हँसी उड़ायेंगे और कहेंगे।
30'अरे देखो इस व्यक्ति ने बनाना प्रारम्भ तो किया, 'पर
यह उसे पूरा नहीं कर सका।'
31"या कोई राजा ऐसा होगा जो किसी दूसरे राजा के
विरोध में युद्ध छेड़ने जाये और पहले बैठ कर यह
विचार न करे कि अपने दस हज़ार सैनिकों के साथ
क्या वह बीस हज़ार सैनिकों वाले अपने विरोधी का
सामना कर भी सकेगा या नहीं। 32और यदि वह समर्थ
नहीं होगा तो उसका विरोधी अभी मार्ग में ही होगा तभी
वह अपना प्रतिनिधि मंडल भेज कर शांति–संधि का
प्रस्ताव करेगा। 33तो फिर इसी प्रकार तुममें से कोई भी
जो अपनी सभी सम्पत्तियों का त्याग नहीं कर देता, मेरा
शिष्य नहीं हो सकता।

अपना प्रभाव मत खोओ
(मत्ती 5:13; मरकुस 9:50)

34"नमक उत्तम है पर यदि वह अपना स्वाद खो दे तो
उसे किसमें डाला जा सकता है। 35न तो वह मिट्टी के
लायक रहेगा और न खाद की कूड़ी के। लोग बस उसे
यूँ ही फेंक देते हैं।
"जिसके पास सुनने को कान हैं, उसे सुनने दो।"

खोए हुए को पाने के आनन्द की दृष्टान्त–कथाएँ

15 अब जब कर वसूलने वाले और पापी सभी उसे
सुनने उसके पास आने लगे थे। 2तो फरीसी
और यहूदी धर्म शास्त्री बड़बड़ाते हुए कहने लगे, "यह
व्यक्ति तो पापियों का स्वागत करता है और उनके साथ
खाता है।" 3इस पर यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त कथा
सुनाई: 4"मानों तुममें से किसी के पास सौ भेड़ें हैं और
उनमें से कोई एक खो जाये तो क्या वह निन्यानवें भेड़ों
को खुले में छोड़ कर खोई हुई भेड़ का पीछा तब तक
नहीं करेगा, जब तक कि वह उसे पा न ले। 5फिर जब
उसे भेड़ मिल जाती है तो वह उसे प्रसन्नता के साथ
अपने कन्धों पर उठा लेता है। 6और जब घर लौटता है
तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को पास बुलाकर उनसे
कहता है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मुझे मेरी
खोयी हुई भेड़ मिल गयी है।' 7मैं तुमसे कहता हूँ, इसी
प्रकार किसी एक मन फिराने वाले पापी के लिये, उन
निन्यानबें धर्मी पुरुषों से, जिन्हें मन फिराने की
आवश्यकता नहीं है, स्वर्ग में कहीं अधिक आनन्द
मनाया जाएगा।
8"या सोचो कोई औरत है जिसके पास दस चाँदी के
सिक्के हैं और उसका एक सिक्का खो जाता है तो क्या
वह दीपक जला कर घर को तब तक नहीं बुहारती
रहेगी और सावधानी से नहीं खोजती रहेगी जब तक
कि वह उसे मिल न जाये? 9और जब वह उसे पा लेती
है तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को पास बुला कर
कहती है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मेरा सिक्का
जो खो गया था, मिल गया है।' 10मैं तुमसे कहता हूँ कि
इसी प्रकार एक मन फिराने वाले पापी के लिये भी
परमेश्वर के दूतों की उपस्थिति में वहाँ आनन्द मनाया
जायेगा।"

भटके पुत्र को पाने की दृष्टान्त-कथा

11फिर यीशु ने कहा: "एक व्यक्ति के दो बेटे थे।
12सो छोटे ने अपने पिता से कहा, 'जो सम्पत्ति मेरे बाँटे
में आती है, उसे मुझे दे दे।' तो पिता ने उन दोनों को
अपना धन बाँट दिया। 13अभी कोई अधिक समय नहीं
बीता था, कि छोटे बेटे ने अपनी समूची सम्पत्ति समेटी
और किसी दूर देश को चल पड़ा। और वहाँ जँगलियों
सा उद्दण्ड जीवन जीते हुए उसने अपना सारा धन बर्बाद
कर डाला। 14जब उसका सारा धन समाप्त हो चुका था
तभी उस देश में सभी ओर व्यापक भयानक अकाल
पड़ा। सो वह अभाव में रहने लगा। 15इसलिये वह उस
देश के किसी व्यक्ति के यहाँ जाकर मज़दूरी करने
लगा उसने उसे अपने खेतों में सुअर चराने भेज दिया।
16वहाँ उसने सोचा कि उसे वे फलियाँ ही पेट भरने को
उसे मिल जायें जिन्हें सुअर खाते थे। पर किसी ने उसे
एक फली तक नहीं दी। 17फिर जब उसके होश ठिकाने
आये तो वह बोला, 'मेरे पिता के पास कितने ही ऐसे
मज़दूर हैं जिनके पास खाने के बाद भी बचा रहता है।
और मैं यहाँ भूखों मर रहा हूँ। 18सो मैं यहाँ से उठकर
अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा: पिता
जी, मैंने स्वर्ग के परमेश्वर और तेरे विरुद्ध पाप
किया है। 19अब आगे मैं तेरा बेटा कहलाने योग्य नहीं
रहा हूँ। मुझे अपना मज़दूर समझकर रख ले।' 20सो वह
उठकर अपने पिता के पास चल दिया।

"अभी वह पर्याप्त दूरी पर ही था कि उसके पिता ने
उसे देख लिया और उसके पिता को उस पर बहुत दया
आयी। सो दौड़ कर उसने उसे अपनी बाहों में समेट
लिया और चूमा।

21"पुत्र ने पिता से कहा, 'पिताजी, मैंने तुम्हारी दृष्टि
में और स्वर्ग के विरुद्ध पाप किया है, मैं अब और
अधिक तुम्हारा पुत्र कहलाने योग्य नहीं हूँ।' 22किन्तु
पिता ने अपने सेवकों से कहा, 'जल्दी से उत्तम वस्त्र
निकाल लाओ और उन्हें इसे पहनाओ। इसके हाथ में
अँगूठी और पैरों में चप्पल पहनाओ। 23कोई मोटा ताजा
बछड़ा लाकर मारो और आओ उसे खाकर हम आनन्द
मनायें। 24क्योंकि मेरा यह बेटा जो मर गया था अब जैसे
फिर जीवित हो गया है। यह खो गया था, पर अब यह
मिल गया है।' सो वे आनन्द मनाने लगे।

25"अब उसका बड़ा बेटा जो खेत में था, जब आया
और घर के पास पहुँचा तो उसने गाने नाचने के स्वर
सुने। 26उसने अपने एक सेवक को बुलाकर पूछा, 'यह
सब क्या हो रहा है?' 27सेवक ने उससे कहा, 'तेरा भाई
आ गया है और तेरे पिता ने उसे सुरक्षित और स्वस्थ
पाकर एक मोटा सा बछड़ा कटवाया है!' 28बड़ा भाई
आग बबूला हो उठा, वह भीतर जाना तक नहीं चाहता
था। सो उसके पिता ने बाहर आकर उसे समझाया
बुझाया। 29पर उसने पिता को उत्तर दिया, 'देख मैं बरसों
से तेरी सेवा करता आ रहा हूँ। मैंने तेरी किसी भी
आज्ञा का विरोध नहीं किया, पर तूने मुझे तो कभी
एक बकरी तक नहीं दी कि मैं अपने मित्रों के साथ
कोई आनन्द मना सकता।

30"पर जब तेरा यह बेटा आया जिसने वेश्याओं में
तेरा धन उड़ा दिया, उसके लिये तूने मोटा ताजा बछड़ा
मरवाया।' 31पिता ने उससे कहा, 'मेरे पुत्र, तू सदा ही
मेरे पास है और जो कुछ मेरे पास है, सब तेरा है।
32किन्तु हमें प्रसन्न होना चाहिए और उत्सव मनाना
चाहिये क्योंकि तेरा यह भाई, जो मर गया था, अब फिर
जीवित हो गया है। यह खो गया था, जो फिर अब मिल
गया है।' "

सच्चा धन

16 फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "एक धनी
पुरुष था। उसका एक प्रबन्धक था उस प्रबन्धक
पर लांछन लगाया गया कि वह उसकी सम्पत्ति को नष्ट
कर रहा है। 2सो उसने उसे बुलाया और कहा, 'तेरे
विषय में मै यह क्या सुन रहा हूँ? अपने प्रबन्ध का
लेखा जोखा दे क्योंकि अब आगे तू प्रबन्धक नहीं रह
सकता।' 3इस पर प्रबन्धक ने मन ही मन कहा, 'मेरा
स्वामी मुझसे मेरा प्रबन्धक का काम छीन रहा है, सो
अब मैं क्या करूँ? मुझमें अब इतनी शक्ति भी नहीं रही
कि मैं खेतों में खुदाई-गुड़ाई का काम तक कर सकूँ
और माँगने में मुझे लाज आती है। 4ठीक, मुझे समझ
आ गया कि मुझे क्या करना चाहिये जिससे जब मैं
प्रबन्धक के पद से हटा दिया जाऊँ तो लोग अपने घरों
में मेरा स्वागत सत्कार करें।' 5सो उसने स्वामी के हर
देनदार को बुलाया। पहले व्यक्ति से उसने पूछा, 'तुझे
मेरे स्वामी का कितना देना है?' 6उसने कहा, 'एक सौ
माप जैतून का तेल।' इस पर वह उससे बोला, 'यह ले
अपनी बही और बैठ कर जल्दी से इसे पचास कर दे।'
7फिर उसने दूसरे से कहा, 'और तुझ पर कितनी
देनदारी है?' उसने बताया, 'एक सौ भार गेहूँ।' वह उससे
बोला, 'यह ले अपनी बही और सौ का अस्सी कर दे।'
8इस पर उसके स्वामी ने उस बेईमान प्रबन्धक की
प्रशंसा की क्योंकि उसने चतुराई से काम लिया था।
सांसारिक व्यक्ति अपने जैसे व्यक्तियों से व्यवहार करने
में आध्यात्मिक व्यक्तियों से अधिक चतुर हैं।

9"मैं तुमसे कहता हूँ सांसारिक धन-सम्पत्ति से अपने
लिये मित्र बनाओ। क्योंकि जब धन-सम्पत्ति समाप्त हो
जायेगी, वे अनन्त निवास में तुम्हारा स्वागत करेंगे।
10वे लोग जिन पर थोड़े से के लिये विश्वास किया जा
सकता है, उन पर अधिक के लिये भी विश्वास किया
जायेगा और इसी तरह जो थोड़े से के लिए बेईमान हो
सकता है वह अधिक के लिए भी बेइमान होगा। 11इस
प्रकार यदि तुम सांसारिक सम्पत्ति के लिये ही भरोसे

योग्य नहीं रहे तो सच्चे धन के विषय में तुम पर कौन भरोसा करेगा? 12जो किसी दूसरे का है, यदि तुम उसके लिये विश्वास के पात्र नहीं रहे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा? 13कोई भी दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। वह या तो एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम या वह एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे को तिरस्कार करेगा। तुम धन और परमेश्वर दोनों की उपासना एकसाथ नहीं कर सकते।"

प्रभु की विधि अटल है
(मत्ती 11:12-13)

14अब जब पैसे के पुजारी फरीसियों ने यह सब सुना तो उन्होंने यीशु की बहुत खिल्ली उड़ाई। 15इस पर उसने उनसे कहा, "तुम वो हो जो लोगों को यह जताना चाहते हो कि तुम बहुत अच्छे हो किन्तु परमेश्वर तुम्हारे मनों को जानता है। लोग जिसे बहुत मूल्यवान समझते हैं, परमेश्वर के लिए वह तुच्छ है।

16"यूहन्ना तक व्यवस्था का विधि और नबियों की प्रमुखता रही। उसके बाद परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचारित किया जा रहा है और हर कोई बड़ी तीव्रता से इसकी ओर खिंचा चला आ रहा है। 17फिर भी स्वर्ग और धरती का डिग जाना तो सरल है किन्तु व्यवस्था के विधि के एक-एक बिंदु की शक्ति सदा अटल है।"

तलाक और पुर्नविवाह के बारे में परमेश्वर का नियम

18"वह हर कोई जो अपनी पत्नी को त्यागता है और दूसरी को ब्याहता है, व्यभिचार करता है। ऐसे ही जो अपने पति द्वारा त्यागी गयी, किसी स्त्री से ब्याह करता है, वह भी व्यभिचार करता है।"

धनी पुरुष और लाज़र

19"अब देखो, एक व्यक्ति था जो बहुत धनी था। वह बैंगनी रंग की उत्तम मलमल के वस्त्र पहनता था और हर दिन विलासिता के जीवन का आनन्द लेता था। 20वहीं लाजर नाम का एक दीन दुःखी उसके द्वार पर पड़ा रहता था। उसका शरीर घावों से भरा हुआ था। 21उस धनी पुरुष की जूठन से ही वह अपना पेट भरने को तरसता रहता था। यहाँ तक कि कुत्ते भी आते और उसके घावों को चाट जाते। 22और फिर ऐसा हुआ कि वह दीन-हीन व्यक्ति मर गया। सो स्वर्गदूतों ने ले जाकर उसे इब्राहीम की गोद में बैठा दिया। फिर वह धनी पुरुष भी मर गया और उसे दफ़ना दिया गया। 23नरक में तड़पते हुए उसने जब आँखें उठा कर देखा तो इब्राहीम उसे बहुत दूर दिखाई दिया किन्तु उसने लाज़र को उसकी गोद में देखा। 24तब उसने पुकार कर कहा, 'पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कर और लाजर को भेज कि वह पानी में अपनी उँगली डुबो कर मेरी जीभ ठंडी कर दे, क्योंकि मैं इस आग में तड़प रहा हूँ।' 25किन्तु इब्राहीम ने कहा, 'हे मेरे पुत्र, याद रख, तूने तेरे जीवन काल में अपनी अच्छी वस्तुएँ पा लीं जबकि लाज़र को बुरी वस्तुएँ ही मिली। सो अब वह यहाँ आनन्द भोग रहा है और तू यातना। 26और इस सब कुछ के अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई डाल दी गयी है ताकि यहाँ से यदि कोई तेरे पास जाना चाहे, वह जा न सके और वहाँ से कोई यहाँ आ न सके।' 27उस सेठ ने कहा, 'तो फिर हे पिता, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू लाज़र को मेरे पिता के घर भेज दे 28क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं, वह उन्हें चेतावनी देगा ताकि उन्हें तो इस यातना के स्थान पर न आना पड़े।' 29किन्तु इब्राहीम ने कहा, 'उनके पास मूसा है और नबी हैं। उन्हें उनकी सुनने दो।' 30सेठ ने कहा, 'नहीं, पिता इब्राहीम, यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाये तो वे मन फिराएंगे।' 31इब्राहीम ने उससे कहा, 'यदि वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो, यदि कोई मरे हुओं में से उठकर उनके पास जाये तो भी वे नहीं मानेंगे।'"

पाप और क्षमा

17 यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जिनसे लोग भटकते हैं, ऐसी बातें तो होंगी ही किन्तु धिक्कार है उस व्यक्ति को जिसके द्वारा वे बातें हों। 2उसके लिये अधिक अच्छा यह होता कि बजाय इसके कि वह इन छोटों में से किसी को पाप करने को प्रेरित कर सके, उसके गले में चक्की का पाट लटका कर उसे सागर में धकेल दिया जाता। 3सावधान रहो, यदि तुम्हारा भाई पाप करे तो उसे डाँटो और यदि वह अपने किये पर पछताये तो उसे क्षमा कर दो। 4यदि हर दिन वह तेरे विरुद्ध सात बार पाप करे और सातों बार लौटकर तुझसे कहे कि मुझे पछतावा है तो तू उसे क्षमा कर दे।"

तुम्हारा विश्वास कितना बड़ा है?

5इस पर शिष्यों ने प्रभु से कहा, "हमारे विश्वास की बढ़ोतरी कर।"

6प्रभु ने कहा, "यदि तुममें सरसों के दाने जितना भी विश्वास होता तो तुम इस शहतूत के पेड़ से कह सकते 'उखड़ जा और समुद्र में जा लग।' और वह तुम्हारी बात मान लेता।

उत्तम सेवक बनो

7"मान लो तुममें से किसी के पास एक दास है जो हल चलाता या भेड़ों को चराता है। वह जब खेत से लौट कर आये तो क्या उसका स्वामी उससे कहेगा, 'तुरन्त आ और खाना खाने को बैठ जा?' 8किन्तु बजाय इसके क्या वह उससे यह नहीं कहेगा, 'मेरा भोजन तैयार

कर, अपने वस्त्र पहन और जब तक मैं खा–पी न लूँ मेरी सेवा कर तब इसके बाद तू भी खा पी सकता है?' 9अपनी आज्ञा पूरी करने पर क्या वह उस सेवक का धन्यवाद करता है। 10तुम्हारे साथ भी ऐसा ही है। जो कुछ तुमसे करने को कहा गया है, उसे कर चुकने के बाद तुम्हें कहना चाहिये, 'हम दास हैं, हम किसी बड़ाई के अधिकारी नहीं हैं। हमने तो बस अपना कर्तव्य किया है।'"

आभारी रहो

11फिर जब यीशु यरूशलेम जा रहा था तो वह सामरिया और गलील के बीच की सीमा के पास से निकला। 12जब वह एक गाँव में जा रहा था तभी उसे दस कोढ़ी मिले। वे कुछ दूरी पर खड़े थे। 13वे ऊँचे स्वर में पुकार कर बोले, "हे यीशु! हे स्वामी! हम पर दया कर!"

14फिर जब उसने उन्हें देखा तो वह बोला, "जाओ और अपने आप को याजकों को दिखाओ।" वे अभी जा ही रहे थे कि वे कोढ़ से मुक्त हो गये। 15किन्तु उनमें से एक ने जब यह देखा कि वह शुद्ध हो गया है, तो वह वापस लौटा और ऊँचे स्वर में परमेश्वर की स्तुति करने लगा। 16वह मुँह के बल यीशु के चरणों में गिर पड़ा और उसका आभार व्यक्त किया। और देखो, वह एक सामरी था। 17यीशु ने उससे पूछा, "क्या सभी दस के दस कोढ़ से मुक्त नहीं हो गये? फिर वे नौ कहाँ हैं? 18क्या इस परदेसी को छोड़ कर उनमें से कोई भी परमेश्वर की स्तुति करने वापस नहीं लौटा" 19फिर यीशु ने उससे कहा, "खड़ा हो और चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा किया है।"

परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर ही है

(मत्ती 24:23-28; 37:41)

20एक बार जब फरीसियों ने यीशु से पूछा, "परमेश्वर का राज्य कब आयेगा?"

तो उसने उन्हें उत्तर दिया, "परमेश्वर का राज्य ऐसे प्रत्यक्ष रूप में नहीं आता। 21लोग यह नहीं कहेंगे, 'वह यहाँ है' या 'वह वहाँ है', क्योंकि परमेश्वर का राज्य तो तुम्हारे भीतर ही है।"

22किन्तु उसने शिष्यों को बताया, "ऐसा समय आयेगा जब तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को भी देखने को तरसोगे किन्तु, उसे देख नहीं पाओगे। 23और लोग तुमसे कहेंगे, 'देखो, 'यहाँ!' या देखो, 'वहाँ!' तुम वहाँ मत जाना या उनका अनुसरण मत करना।"

जब यीशु लौटेगा

24"वैसे ही जैसे बिजली कौंध कर एक छोर से दूसरे छोर तक आकाश को चमका देती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन होगा। 25किन्तु पहले उसे बहुत सी यातनाएँ भोगनी होंगी और इस पीढ़ी द्वारा वह निश्चय ही नकार दिया जायेगा। 26वैसे ही जैसे नूह के दिनों में हुआ था, मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। 27उस दिन तक जब नूह ने नौका में प्रवेश किया, लोग खाते–पीते रहे, ब्याह रचाते और विवाह में दिये जाते रहे। फिर जल प्रलय आया और उसने सबको नष्ट कर दिया। 28इसी प्रकार लूत के दिनों में भी ठीक ऐसे ही हुआ था। लोग खाते–पीते, मोल लेते, बेचते खेती करते और घर बनाते रहे। 29किन्तु उस दिन जब लूत सदोम से बाहर निकला तो आकाश से अग्नि और गंधक बरसने लगे और वे सब नष्ट हो गये। 30उस दिन भी जब मनुष्य का पुत्र प्रकट होगा, ठीक ऐसा ही होगा।

31"उस दिन यदि कोई व्यक्ति छत पर हो और उसका सामान घर के भीतर हो तो उसे लेने वह नीचे न उतरे। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति खेत में हो तो वह पीछे न लौटे। 32लूत की पत्नी को याद करो, 33जो कोई अपना जीवन बचाने का प्रयत्न करेगा, वह उसे खो देगा और जो अपना जीवन खोयेगा, वह उसे बचा लेगा। 34मैं तुम्हें बताता हूँ, उस रात एक चारपाई पर जो दो मनुष्य होंगे, उनमें से एक उठा लिया जायेगा और दूसरा छोड़ दिया जायेगा। 35दो स्त्रियाँ जो एक साथ चक्की पीसती होंगी, उनमें से एक उठा ली जायेगी और दूसरी छोड़ दी जायेगी।" 36*

37फिर यीशु के शिष्यों ने उससे पूछा, "हे प्रभु, ऐसा कहाँ होगा?" उसने उनसे कहा, "जहाँ लोथ पड़ी होगी, गिद्ध भी वहीं इकट्ठे होंगे।"

परमेश्वर अपने भक्त जनों की अवश्य सुनेगा

18 फिर उसने उन्हें यह बताने के लिए कि वे निरन्तर प्रार्थना करते रहें और निराश न हों, यह दृष्टान्त कथा सुनाई–2वह बोला: "किसी नगर में एक न्यायाधीश हुआ करता था। वह न तो परमेश्वर से डरता था और न ही मनुष्यों की परवाह करता था। 3उसी नगर में, एक विधवा भी रहा करती थी। और वह उसके पास बार बार आती और कहती, 'देख, मुझे मेरे प्रति किए गए अन्याय के विरुद्ध न्याय मिलना ही चाहिये।' 4सो एक लम्बे समय तक तो वह न्यायाधीश आनाकानी करता रहा पर आखिरकार उसने अपने मन में सोचा, 'चाहे मैं न तो परमेश्वर से डरता हूँ और न लोगों की परवाह करता हूँ। 5तो भी क्योंकि इस विधवा ने मेरे कान खा डाले हैं, सो मैं देखूँगा कि उसे न्याय मिल जाये ताकि यह मेरे पास बार–बार आकर कहीं मुझे ही न थका डाले।'"

6फिर प्रभु ने कहा, "देखो उस दुष्ट न्यायाधीश ने क्या कहा था। 7सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों

पद 36 लूका की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 36 जोड़ा गया है। 'दो पुरुष जो खेत में होंगे, उनमें से एक उठा लिया जायेगा और दूसरा छोड़ दिया जायेगा।'

पर ध्यान नहीं देगा कि उन्हें, जो उसे रात दिन पुकारते
रहते हैं, न्याय मिले? क्या वह उनकी सहायता करने में
देर लगायेगा? 8मैं तुमसे कहता हूँ कि वह देखेगा कि
उन्हें न्याय मिल चुका है और शीघ्र ही मिल चुका है।
फिर भी जब मनुष्य का पुत्र आयेगा तो क्या वह इस
धरती पर विश्वास को पायेगा?"

दीनता के साथ परमेश्वर की उपासना

9फिर यीशु ने उन लोगों के लिए भी जो अपने आप
को तो नेक मानते थे, और किसी को कुछ नहीं
समझते, यह दृष्टान्त कथा सुनाई: 10"मंदिर में दो व्यक्ति
प्रार्थना करने गये, एक फरीसी था और दूसरा कर
वसूलने वाला। 11वह फरीसी अलग खड़ा होकर यह
प्रार्थना करने लगा, 'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता
हूँ कि मैं दूसरे लोगों जैसा डाकू, ठग और व्यभिचारी
नहीं हूँ और न ही इस कर वसूलने वाले जैसा हूँ। 12मैं
सप्ताह में दो बार उपवास रखता हूँ और अपनी समूची
आय का दसवाँ भाग दान देता हूँ।'

13"किन्तु वह कर वसूलने वाला जो दूर खड़ा था
और यहाँ तक कि स्वर्ग की ओर अपनी आँखें तक
नहीं उठा रहा था, अपनी छाती पीटते हुए बोला, 'हे
परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।' 14मैं तुम्हें बताता हूँ,
यही मनुष्य नेक ठहराया जाकर अपने घर लौटा, न
कि वह दूसरा। क्योंकि हर वह व्यक्ति जो अपने आप
को बड़ा समझेगा, उसे छोटा बना दिया जायेगा और जो
अपने आप को दीन मानेगा, उसे बड़ा बना दिया जायेगा।"

बच्चे स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हैं

(मत्ती 19:13-15; मरकुस 10:13-16)

15लोग अपने बच्चों तक को यीशु के पास ला रहे थे
कि वह उन्हें बस छू भर दे। किन्तु जब उसके शिष्यों ने
यह देखा तो उन्हें झिड़क दिया। 16किन्तु यीशु ने बच्चों
को अपने पास बुलाया और शिष्यों से कहा, "इन छोटे
बच्चों को मेरे पास आने दो, इन्हें रोको मत, क्योंकि
परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है। 17मैं सच्चाई के
साथ तुमसे कहता हूँ कि ऐसा कोई भी जो परमेश्वर के
राज्य को एक अबोध बच्चे की तरह ग्रहण नहीं करता,
उसमें कभी प्रवेश नहीं पायेगा!"

एक धनिक का यीशु से प्रश्न

(मत्ती 19:16-30; मरकुस 10:17-31)

18फिर किसी यहूदी नेता ने यीशु से पूछा, "उत्तम गुरु,
अनन्त जीवन का अधिकार पाने के लिये मुझे क्या
करना चाहिये?"

19यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है?
केवल परमेश्वर को छोड़ कर और कोई भी उत्तम
नहीं है। 20तू व्यवस्था के आदेशों को तो जानता है:
'व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर,
झूठी गवाही मत दे, अपने पिता और माता का आदर
कर।'"*

21वह यहूदी नेता बोला, "मैं इन सब बातों को अपने
लड़कपन से ही मानता आया हूँ।"

22यीशु ने जब यह सुना तो वह उससे बोला, "अभी
भी एक बात है जिसकी तुझ में कमी है। तेरे पास जो
कुछ है, सब कुछ को बेच डाल और फिर जो मिले, उसे
गरीबों में बाँट दे। इससे तुझे स्वर्ग में भण्डार मिलेगा।
फिर आ और मेरे पीछे हो ले।" 23सो जब उस यहूदी
नेता ने यह सुना तो वह बहुत दु:खी हुआ, क्योंकि
उसके पास बहुत सारी सम्पत्ति थी।

24यीशु ने जब यह देखा कि वह बहुत दु:खी है तो
उसने कहा, "उन लोगों के लिये जिनके पास धन है,
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर पाना कितना कठिन
है! 25हाँ, किसी ऊँट के लिये सूई के नकुए से निकल
जाना तो सम्भव है पर किसी धनिक का परमेश्वर के
राज्य में प्रवेश कर पाना असंभव है!"

उद्धार किसका होगा

26वे लोग जिन्होंने यह सुना, बोले, "फिर भला उद्धार
किसका होगा?"

27यीशु ने कहा, "वे बातें जो मनुष्य के लिए असम्भव
हैं, परमेश्वर के लिए सम्भव हैं।"

28फिर पतरस ने कहा, "देख, हमारे पास जो कुछ
था, तेरे पीछे चलने के लिए हमने वह सब कुछ त्याग
दिया है।"

29तब यीशु उनसे बोला, "मैं सच्चाई के साथ तुमसे
कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं है जिसने परमेश्वर के राज्य
के लिये घर–बार या पत्नी या भाई–बंधु या माता–पिता
या संतान का त्याग कर दिया हो, 30और उसे इसी
वर्तमान युग में कई गुणा अधिक न मिले और आने
वाले काल में वह अनन्त जीवन को न पा जाये।"

यीशु मर कर जी उठेगा

(मत्ती 20:17-19; मरकुस 10:32-34)

31फिर यीशु उन बारहों को एक ओर ले जाकर
उनसे बोला, "सुनो, हम यरूशलेम जा रहे हैं। मनुष्य के
पुत्र के विषय में नबियों द्वारा जो कुछ लिखा गया है, वह
पूरा होगा। 32हाँ, वह विधर्मियों को सौंपा जायेगा, उसकी
हँसी उड़ाई जायेगी, उसे कोसा जायेगा और उस पर
थूका जायेगा। 33फिर वे उसे पीटेंगे और मार डालेंगे
और तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।" 34इनमें से कोई
भी बात वे नहीं समझ सके। यह कथन उनसे छिपा ही

"व्यभिचार मत ... आदर कर" निर्गमन 20:12–26; व्यवस्था. 5:16–20

रह गया। वे समझ नहीं सके कि वह किस विषय में बता रहा था।

अंधे को आँखें

(मत्ती 20:29-34; मरकुस 10:46-52)

35यीशु जब यरीहो के पास पहुँच रहा था तो भीख माँगता हुआ एक अंधा, वहीं राह किनारे बैठा था। 36जब अन्धे ने पास से लोगों के जाने की आवाज़ सुनी तो उसने पूछा, "क्या हो रहा है?"

37सो लोगों ने उससे कहा, "नासरी यीशु यहाँ से जा रहा है।"

38सो अंधा यह कहते हुए पुकार उठा, "दाऊद के बेटे यीशु! मुझ पर दया कर।"

39वे जो आगे चल रहे थे उन्होंने उससे चुप रहने को कहा। किन्तु वह और अधिक पुकारने लगा "दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर!"

40यीशु रुक गया और उसने आज्ञा दी कि नेत्रहीन को उसके पास लाया जाये। सो जब वह पास आया तो यीशु ने उससे पूछा, 41"तू क्या चाहता है? मैं तेरे लिये क्या करूँ?"

उसने कहा, "हे प्रभु, मैं फिर से देखना चाहता हूँ।"

42इस पर यीशु ने कहा, "तुझे ज्योति मिले, तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया है।"

43और तुरन्त ही उसे आँखें मिल गयीं। वह परमेश्वर की महिमा का बखान करते हुए यीशु के पीछे हो लिया। जब सब लोगों ने यह देखा तो वे परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

जक्कई

19 और फिर यीशु यरीहो में प्रवेश करके जब वहाँ से जा रहा था। 2तो वहाँ जक्कई नाम का एक व्यक्ति भी मौजूद था। वह कर वसूलने वालों का मुखिया था। सो वह बहुत धनी था। 3वह यह देखने का जतन कर रहा था कि यीशु कौन है, पर भीड़ के कारण वह देख नहीं पा रहा था क्योंकि उसका कद छोटा था। 4सो वह सब के आगे दौड़ता हुआ एक गूलर के पेड़ पर जा चढ़ा ताकि, वह उसे देख सके क्योंकि यीशु को उसी रास्ते से होकर निकलना था। 5फिर जब यीशु उस स्थान पर आया तो उसने ऊपर देखते हुए जक्कई से कहा, "जक्कई, जल्दी से नीचे उतर आ क्योंकि मुझे आज तेरे ही घर ठहरना है।"

6सो उसने झटपट नीचे उतर प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत किया। 7जब सब लोगों ने यह देखा तो वे बड़बड़ाने लगे और कहने लगे, "यह एक पापी के घर अतिथि बनने जा रहा है!"

8किन्तु जक्कई खड़ा हुआ और प्रभु से बोला, "हे प्रभु, देख, मैं अपनी सारी सम्पत्ति का आधा ग़रीबों को दे दूँगा और यदि मैंने किसी का छल से कुछ भी लिया है तो उसे चौगुना करके लौटा दूँगा!"

9यीशु ने उससे कहा, "इस घर पर आज उद्धार आया है, क्योंकि यह व्यक्ति भी इब्राहीम की ही एक सन्तान है। 10क्योंकि मनुष्य का पुत्र जो कोई खो गया है, उसे ढूँढने और उसकी रक्षा के लिए आया है।"

परमेश्वर जो देता है उसका उपयोग करो

(मत्ती 25:14-30)

11वे जब इन बातों को सुन रहे थे तो यीशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त–कथा सुनाई क्योंकि यीशु यरुशलेम के निकट था और वे सोचते थे कि परमेश्वर का राज्य तुरंत ही प्रकट होने जा रहा है। 12सो यीशु ने कहा, "एक उच्च कुलीन व्यक्ति राजा का पद प्राप्त करके आने को किसी दूर देश को गया। 13सो उसने अपने दस सेवकों को बुलाया और उनमें से हर एक को दस दस थैलियाँ दी और उनसे कहा 'जब तक मैं लौटूँ, इनसे कोई व्यापार करो।' 14किन्तु उसके नगर के दूसरे लोग उससे घृणा करते थे, इसलिये उन्होंने उसके पीछे यह कहने को एक प्रतिनिधि मंडल भेजा, 'हम नहीं चाहते कि यह व्यक्ति हम पर राज करे।'

15"किन्तु उसने राजा की पदवी पा ली। फिर जब वह वापस घर लौटा तो जिन सेवकों को उसने धन दिया था उनको यह जानने के लिए कि उन्होंने क्या लाभ कमाया है, उसने बुलावा भेजा। 16पहला आया और बोला, 'हे स्वामी, तेरी थैलियों से मैंने दस थैलियाँ और कमायी हैं।' 17इस पर उसके स्वामी ने उससे कहा, 'उत्तम सेवक, तूने अच्छा किया। क्योंकि तू इस छोटी सी बात पर विश्वास के योग्य रहा। तू दस नगरों का अधिकारी होगा।' 18फिर दूसरा सेवक आया और कहा, 'हे स्वामी, तेरी थैलियों से पाँच थैलियाँ* और कमाई हैं।' 19फिर उसने इससे कहा, 'तू पाँच नगरों के ऊपर होगा।' 20फिर वह अन्य सेवक आया और कहा, 'हे स्वामी, यह रही तेरी थैली जिसे मैंने गमछे में बाँध कर कहीं रख दिया था। 21मैं तुझ से डरता रहा हूँ, क्योंकि तू एक कठोर व्यक्ति है। तूने जो रखा नहीं है तू उसे भी ले लेता है और जो तूने बोया नहीं तू उसे काटता है।'

22"स्वामी ने उससे कहा, 'अरे दुष्ट सेवक, मैं तेरे अपने ही शब्दों के आधार पर तेरा न्याय करूँगा। तू तो जानता ही है कि मैं जो रखता नहीं हूँ, उसे भी ले लेने वाला और जो बोता नहीं हूँ, उसे भी काटने वाला एक कठोर व्यक्ति हूँ? 23तो तूने मेरा धन ब्याज पर क्यों नहीं लगाया ताकि जब मैं वापस आता तो ब्याज समेत उसे ले लेता।' 24फिर पास खड़े लोगों से उसने कहा, 'इसकी

थैलियाँ शाब्दिक मीना। एक मीना बराबर उन दिनों का तीन महीने का वेतन।

थैली इससे ले लो और जिसके पास दस थैलियाँ हैं उसे दे
दो।' 25इस पर उन्होंने उससे कहा, हे स्वामी, उसके
पास तो दस थैलियाँ है। 26स्वामी ने कहा, 'मैं तुमसे
कहता हूँ प्रत्येक उस व्यक्ति को जिसके पास है और
अधिक दिया जायेगा और जिसके पास नहीं है, उससे
जो उसके पास है, वह भी छीन लिया जायेगा। 27किन्तु
मेरे वे शत्रु जो नहीं चाहते कि मैं उन पर शासन करूँ
उनको यहाँ मेरे सामने लाओ और मार डालो।'"

यीशु का यरूशलेम में प्रवेश

(मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; यूहन्ना 12:12-19)

28ये बातें कह चुकने के बाद यीशु आगे चलता हुआ
यरूशलेम की ओर बढ़ने लगा। 29और फिर जब वह
बैतफगे और बैतनिय्याह में उस पहाड़ी के निकट पहुँचा
जो जैतून की पहाड़ी कहलाती थी तो उसने अपने दो
शिष्यों को यह कह कर भेजा, 30"यह जो गाँव तुम्हारे
सामने है वहाँ जाओ। जैसे ही तुम वहाँ जाओगे, तुम्हें
गदही का एक बच्चा वहाँ बँधा मिलेगा जिस पर किसी
ने कभी सवारी नहीं की होगी, उसे खोलकर यहाँ ले
आओ 31और यदि कोई तुमसे पूछे तुम इसे क्यों खोल
रहे हो, तो तुम्हें उससे यह कहना है, 'प्रभु को चाहिये।'"
32फिर जिन्हें भेजा गया था, वे गये और यीशु ने
उनको जैसा बताया था, उन्हें वैसा ही मिला। 33सो जब
वे उस गदही के बच्चे को खोल ही रहे थे, उसके
स्वामी ने उनसे पूछा, "तुम इस गदही के बच्चे को क्यों
खोल रहे हो?"
34उन्होंने कहा, "यह प्रभु को चाहिये।" 35फिर वे
गदही के बच्चे यीशु के पास ले आये। उन्होंने अपने
वस्त्र उस गदही के बच्चे पर डाल दिये और यीशु को
उस पर बिठा दिया। 36जब यीशु जा रहा था तो लोग
अपने वस्त्र सड़क पर बिछाते जा रहे थे।
37और फिर जब वह जैतून की पहाड़ी से तलहटी के
पास आया तो शिष्यों की समूची भीड़ उन सभी अद्भुत
कार्यों के लिये, जो उन्होंने देखे थे, ऊँचे स्वर में प्रसन्नता
के साथ परमेश्वर की स्तुति करने लगी। वे पुकार
उठे:

38"'धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम में आता है'
भजन संहिता 118:26

स्वर्ग में शान्ति हो, और आकाश में परम परमेश्वर
की महिमा हो!"
39भीड़ में खड़े हुए कुछ फरीसियों ने उससे कहा,
"गुरु, शिष्यों को मना कर।"
40सो उसने उत्तर दिया, "मैं तुमसे कहता हूँ यदि ये
चुप हो भी जायें तो ये पत्थर चिल्ला उठेंगे।"
41जब उसने पास आकर नगर को देखा तो वह उस
पर रो पड़ा।
42और बोला, "यदि तू बस आज यह जानता कि
शान्ति तुझे किस से मिलेगी किन्तु वह अभी तेरी आँखों
से ओझल है। 43वे दिन तुझ पर आयेंगे जब तेरे शत्रु
चारों ओर बाधाएँ खड़ी कर देंगे। वे तुझे घेर लेंगे और
सब ओर से तुझ पर दबाव डालेंगे। 44वे तुझे धूल में
मिला देंगे–तुझे और तेरे भीतर रहने वाले तेरे बच्चों
को। तेरी चारदीवारी के भीतर वे एक पत्थर पर दूसरा
पत्थर नहीं रहने देंगे। क्योंकि जब परमेश्वर तेरे पास
आया, तूने उस घड़ी को नहीं पहचाना।"

यीशु मंदिर में

(मत्ती 21:12-17; मरकुस 11:15-19; यूहन्ना 2:13-22)

45फिर यीशु ने मन्दिर में प्रवेश किया और जो वहाँ
दुकानदारी कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा।
46उसने उनसे कहा, "लिखा गया है, 'मेरा घर प्रार्थनागृह
होगा'।* किन्तु तुमने इसे 'डाकुओं का अड्डा बना
डाला है।'"
47सो अब तो वह हर दिन मन्दिर में उपदेश देने लगा।
प्रमुख याजक, यहूदी धर्मशास्त्री और मुखिया लोग उसे
मार डालने की ताक में रहने लगे। 48किन्तु उन्हें ऐसा
कर पाने का कोई अवसर न मिल पाया क्योंकि लोग
उसके वचनों को बहुत महत्त्व दिया करते थे।

यीशु से यहूदियों का एक प्रश्न

(मत्ती 21:23-27; मरकुस 11:27-33)

20 एक दिन जब यीशु मंदिर में लोगों को उपदेशदेते
हुए सुसमाचार सुना रहा था तो प्रमुख याजक
और यहूदी धर्मशास्त्री बुजुर्ग यहूदी नेताओं के साथ
उसके पास आये। 2उन्होंने उससे पूछा, "हमें बता तू यह
काम किस अधिकार से कर रहा है? वह कौन है
जिसने तुझे यह अधिकार दिया है?"
3यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं भी तुमसे एक प्रश्न
पूछता हूँ, तुम मुझे बताओ 4यूहन्ना को बपतिस्मा देने
का अधिकार स्वर्ग से मिला था या मनुष्य से?"
5इस पर आपस में विचार विमर्श करते हुए उन्होंने
कहा, "यदि हम कहते हैं 'स्वर्ग से' तो यह कहेगा 'तो
तुम ने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?' 6और यदि
हम कहें 'मनुष्य से' तो सभी लोग हम पर पत्थर बरसायेंगे।
क्योंकि वे यह मानते हैं कि यूहन्ना एक नबी था।" 7सो
उन्होंने उत्तर दिया कि वे नहीं जानते कि वह कहाँ से
मिला।
8फिर यीशु ने उनसे कहा, "तो मैं भी तुम्हें नहीं
बताऊँगा कि यह कार्य मैं किस अधिकार से करता
हूँ?"

"मेरा घर ... होगा" यशा. 56:7

परमेश्वर अपने पुत्र को भेजता है
(मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12)

9फिर यीशु लोगों से यह दृष्टान्त कथा कहने लगा:
"किसी व्यक्ति ने अंगूरों का एक बगीचा लगाकर उसे
कुछ किसानों को किराये पर चढ़ा दिया और वह एक
लम्बे समय के लिये कहीं चला गया। 10जब फसल
उतारने का समय आया, तो उसने एक सेवक को
किसानों के पास भेजा ताकि वे उसे अंगूरों के बगीचे
के कुछ फल दे दें। किन्तु किसानों ने उसे मार-पीट
कर खाली हाथों लौटा दिया। 11तब उसने एक दूसरा
सेवक वहाँ भेजा। किन्तु उन्होंने उसकी भी पिटाई कर
डाली। उन्होंने उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया
और उसे भी खाली हाथों लौटा दिया। 12इस पर उसने
एक तीसरा सेवक भेजा किन्तु उन्होंने इसको भी घायल
करके बाहर धकेल दिया। 13तब बगीचे का स्वामी
कहने लगा, 'मुझे क्या करना चाहिये? मैं अपने प्यारे
बेटे को भेजूँगा।' 14किन्तु किसानों ने जब उसके बेटे को
देखा तो आपस में सोच विचार करते हुए वे बोले 'यह तो
उत्तराधिकारी है, आओ हम इसे मार डालें ताकि
उत्तराधिकार हमारा हो जाये।' 15और उन्होंने उसे बगीचे
से बाहर खदेड़ कर मार डाला। "तो फिर बगीचे का
स्वामी उनके साथ क्या करेगा? 16वह आयेगा और उन
किसानों को मार डालेगा तथा अंगूरों का बगीचा औरों
को सौंप देगा।"

उन्होंने जब यह सुना तो वे बोले, "ऐसा कभी न हो।"
17तब यीशु ने उनकी ओर देखते हुए कहा, "तो फिर
यह जो लिखा है उसका अर्थ क्या है:

'जिस पत्थर को कारीगरों ने बेकार समझ लिया था
वही कोने का प्रमुख पत्थर बन गया?'

भजन संहिता 118:22

18हर कोई जो उस पत्थर पर गिरेगा टुकड़े-टुकड़े
हो जायेगा और जिस पर वह गिरेगा चकना चूर हो
जायेगा।"

19उसी क्षण यहूदी धर्मशास्त्री और प्रमुख याजक कोई
रास्ता ढूँढकर उसे पकड़ लेना चाहते थे क्योंकि वे जान
गये थे कि उसने यह दृष्टान्त कथा उनके विरोध में
कही है। किन्तु वे लोगों से डरते थे।

यहूदी नेताओं की चाल
(मत्ती 22:15-22; मरकुस 12:13-17)

20सो वे सावधानी से उस पर नज़र रखने लगे। उन्होंने
ऐसे गुप्तचर भेजे जो ईमानदार होने का स्वांग रचते थे।
ताकि वे उसे उसकी कही किसी बात में फँसा कर
राज्यपाल की शक्ति और अधिकार के अधीन कर दें।
21सो उन्होंने उससे पूछते हुए कहा, "गुरु, हम जानते हैं
कि तू जो उचित है वही कहता है और उसी का उपदेश
देता है और न ही तू किसी का पक्ष लेता है। बल्कि तू
तो सच्चाई से परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देता है। 22सो
बता कैसर को हमारा कर चुकाना उचित है या नहीं
चुकाना?"

23यीशु उनकी चाल को समझ गया था। सो उसने
उनसे कहा, 24"मुझे एक दीनारी दिखाओ, इस पर मूरत
और लिखावट किसके हैं?" उन्होंने कहा, "कैसर के।"

25इस पर उसने उनसे कहा, "तो फिर जो कैसर का
है, उसे कैसर को दो। और जो परमेश्वर का है उसे
परमेश्वर को।"

26वे उसके उत्तर पर चकित हो कर चुप रह गये
और उसने लोगों के सामने जो कुछ कहा था, उस पर
उसे पकड़ नहीं पाये।

यीशु को पकड़ने के लिये सदूकियों की चाल
(मत्ती 22:23-33; मरकुस 12:18-27)

27अब देखो कुछ सदूकी उसके पास आये। ये सदूकी
वे थे जो पुनरुत्थान को नहीं मानते। उन्होंने उससे पूछते
हुए कहा, 28'गुरु, मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि
किसी का भाई मर जाये और उसके कोई बच्चा न हो
और उसके पत्नी हो तो उसका भाई उस विधवा से
ब्याह करके अपने भाई के लिये, उससे संतान उत्पन्न
करे। 29अब देखो, सात भाई थे। पहले भाई ने किसी
स्त्री से विवाह किया और वह बिना किसी संतान के ही
मर गया। 30फिर दूसरे भाई ने उसे ब्याहा, 31और ऐसे
ही तीसरे भाई ने। सब के साथ एक जैसा ही हुआ। वे
बिना कोई संतान छोड़े मर गये। 32बाद में वह स्त्री भी
मर गयी। 33अब बताओ, पुनरुत्थान होने पर वह किसकी
पत्नी होगी क्योंकि उससे तो सातों ने ही ब्याह किया
था?"

34तब यीशु ने उनसे कहा, "इस युग के लोग ब्याह
करते हैं और ब्याह करके विदा होते हैं। 35किन्तु वे
लोग जो उस युग के किसी भाग के योग्य और मरे हुओं
में से जी उठने के लिए ठहराये गये हैं, वे न तो ब्याह
करेंगे और न ही ब्याह करके विदा किये जायेंगे।
36और वे फिर कभी मरेंगे भी नहीं, क्योंकि वे स्वर्गदूतों
के समान हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं क्योंकि वे
पुनरुत्थान के पुत्र हैं। 37किन्तु मूसा तक ने झाड़ी से
सम्बन्धित अनुच्छेद में दिखाया है कि मरे हुए जिलाए
गये हैं, जबकि उसने कहा था प्रभु, 'इब्राहीम का
परमेश्वर है, इसहाक का परमेश्वर है और याकूब का
परमेश्वर है'* 38वह मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों
का परमेश्वर है। वे सभी लोग जो उसके हैं, जीवित हैं।"

39कुछ यहूदी धर्मशास्त्रियों ने कहा, "गुरु, अच्छा
कहा।"

"इब्राहीम का ... याकूब का परमेश्वर है" निर्गमन 3:6

40क्योंकि फिर उससे कोई और प्रश्न पूछने का
साहस नहीं कर सका।

क्या मसीह दाऊद का पुत्र है?

(मत्ती 22:41-46; मरकुस 12:35-37)

41यीशु ने उनसे कहा, "वे कहते हैं कि मसीह दाऊद
का पुत्र है। यह कैसे हो सकता है? 42क्योंकि भजन
संहिता की पुस्तक में दाऊद स्वयं कहता है कि
'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु (मसीह) से कहा: मेरे
दाहिने हाथ बैठ,
43जब तक कि मैं तेरे विरोधियों को तेरे पैर रखने
की चौकी न बना दूँ।' *भजन संहिता 110:1*

44इस प्रकार जब दाऊद मसीह को 'प्रभु' कहता है तो
मसीह दाऊद का पुत्र कैसे हो सकता है?"

यहूदी धर्मशास्त्रियों के विरोध में यीशु की चेतावनी

(मत्ती 23:1-36; मरकुस 12:38-40; लूका 11:37-54)

45सभी लोगों के सुनते उसने अपने अनुयायिओं से
कहा, 46"यहूदी धर्मशास्त्रियों से सावधान रहो। वे लम्बे
चोगे पहन कर यहाँ–वहाँ घूमना चाहते हैं, हाट–बाजारों
में वे आदर के साथ स्वागत–सत्कार पाना चाहते हैं।
और यहूदी प्रार्थना सभाओं में उन्हें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण
आसन की लालसा रहती है। दावतों में वे आदरपूर्ण
स्थान चाहते हैं। 47वे विधवाओं के घर–बार लूट लेते
हैं। दिखावे के लिये वे लम्बी–लम्बी प्रार्थनाएँ करते हैं।
इन लोगों को कठिन से कठिन दण्ड भुगतना होगा।"

सच्चा दान

(मत्ती 12:41-44)

21 यीशु ने आँखें उठा कर देखा कि धनी लोग
दान पात्र में अपनी अपनी भेंट डाल रहे हैं।
2तभी उसने एक गरीब विधवा को उसमें ताँबे के दो
छोटे सिक्के डालते हुए देखा। 3उसने कहा, "मैं तुमसे
सत्य कहता हूँ कि दूसरे सभी लोगों से इस गरीब विधवा
ने अधिक दान दिया है। 4यह मैं इसलिये कहता हूँ
क्योंकि इन सब ही लोगों ने अपने उस धन में से
जिसकी उन्हें आवश्यकता नहीं थी, दान दिया था किन्तु
उसने गरीब होते हुए भी जीवित रहने के लिए जो कुछ
उसके पास था, सब कुछ दे डाला।"

मन्दिर का विनाश

(मत्ती 24:1-14; मरकुस 13:1-13)

5कुछ लोग मंदिर के विषय में चर्चा कर रहे थे कि
वह सुंदर पत्थरों और परमेश्वर को अर्पित की गयी
मनौती की भेंटों से कैसे सजाया गया है।
6तभी यीशु ने कहा, "ऐसा समय आयेगा जब, ये जो
कुछ तुम देख रहे हो, उसमें एक पत्थर दूसरे पत्थर पर
टिका नहीं रह पायेगा। वे सभी ढहा दिये जायेंगे।"
7वे उससे पूछते हुए बोले, "गुरु, ये बातें कब होंगी?
और ये बातें जो होने वाली हैं, उसके क्या संकेत होंगे?"
8यीशु ने कहा, "सावधान रहो, कहीं कोई तुम्हें छल
न ले। क्योंकि मेरे नाम से बहुत से लोग आयेंगे और
कहेंगे, 'वह मैं हूँ' और 'समय आ पहुँचा है।' उनके पीछे
मत जाना। 9परन्तु जब तुम युद्धों और दंगों की चर्चा
सुनो तो डरना मत क्योंकि ये बातें तो पहले घटेंगी ही।
और उनका अन्त तुरंत नहीं होगा।"
10उसने उनसे फिर कहा, "एक जाति दूसरी जाति के
विरोध में खड़ी होगी और एक राज्य दूसरे राज्य के
विरोध में। 11बड़े–बड़े भूचाल आयेंगे और अनेक स्थानों
पर अकाल पड़ेंगे और महामारियाँ होंगी। आकाश में
भयानक घटनाएँ घटेंगी और महान संकेत प्रकट होंगे।
12"किन्तु इन बातों के घटने से पहले वे तुम्हें बंदी
बना लेंगे और तुम्हें यातनाएँ देंगे। वे तुम पर अभियोग
चलाने के लिये तुम्हें यहूदी प्रार्थना सभागारों को सौंप
देंगे और फिर तुम्हें जेल भेज दिया जायेगा। और फिर
मेरे नाम के कारण वे तुम्हें राजाओं और राज्यपालों के
सामने ले जायेंगे। 13इससे तुम्हें मेरे विषय में साक्षी देने
का अवसर मिलेगा। 14इसलिये पहले से ही इसकी चिंता
न करने का निश्चय कर लो कि अपना बचाव तुम
कैसे करोगे। 15क्योंकि मैं तुम्हें ऐसी बुद्धि और ऐसे शब्द
दूँगा कि तुम्हारा कोई भी विरोधी तुम्हारा सामना और
तुम्हारा खण्डन नहीं कर सकेगा। 16किन्तु तुम्हारे
माता–पिता, भाई बन्धु, सम्बन्धी और मित्र ही तुम्हें
धोखे से पकड़वायेंगे और तुममें से कुछों को तो मरवा
ही डालेंगे। 17मेरे कारण सब तुमसे बैर करेंगे। 18किन्तु
तुम्हारे सिर का एक बाल तक बांका नहीं होगा। 19तुम्हारी
सहनशीलता, तुम्हारे प्राणों की रक्षा करेगी।"

यरूशलेम का नाश

(मत्ती 24:15-21; मरकुस 13:14-19)

20"अब देखो जब यरुशलेम को तुम सेनाओं से घिरा
देखो तब समझ लेना कि उसका तहस नहस हो जाना
निकट है। 21तब तो जो यहूदिया में हों, उन्हें चाहिये कि
वे पहाड़ों पर भाग जायें और वे जो नगर के भीतर हों,
बाहर निकल आयें और वे जो गांवों में हों उन्हें नगर में
नहीं जाना चाहिये 22क्योंकि वे दिन दण्ड देने के होंगे।
ताकि जो लिखी गयी हैं, वे सभी बातें पूरी हों। 23उन
स्त्रियों के लिये, जो गर्भवती होंगी और उनके लिये जो
दूध पिलाती होंगी, वे दिन कितने भयानक होंगे। क्योंकि
उन दिनों इस धरती पर बहुत बड़ी विपत्ति आयेगी और
इन लोगों पर परमेश्वर का क्रोध होगा। 24वे तलवार
की धार से गिरा दिये जायेंगे। और बंदी बना कर सब

देशों में पहुँचा दिये जायेंगे। और यरूशलेम ग़ैर यहूदियों के पैरों तले तब तक रौंदा जायेगा जब तक कि ग़ैर यहूदियों का समय पूरा नहीं हो जाता।"

डरो मत

(मत्ती 24:29-31; मरकुस 13:24-27)

25"सूरज, चाँद और तारों में संकेत प्रकट होंगे और धरती पर की सभी जातियों पर विपतियाँ आयेंगी और वे सागर की उथल-पुथल से घबरा उठेंगे। 26लोग डर और संसार पर आने वाली विपदाओं के डर से मूर्छित हो जायेंगे क्योंकि स्वर्गिक शक्तियाँ हिलाई जायेंगी। 27और तभी वे मनुष्य के पुत्र को अपनी शक्ति और महान् महिमा के साथ एक बादल में आते हुए देखेंगे। 28अब देखो, ये बातें जब घटने लगें तो तुम खड़े होकर अपने सिर ऊपर उठा लेना। क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट आ रहा होगा।"

मेरा वचन अमर है

(मत्ती 24:32-35; मरकुस 13:28-31)

29फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त-कथा कही: "और सभी पेड़ों तथा अंजीर के पेड़ को देखो। 30उन में जैसे ही कोंपलें फूटती हैं, तुम अपने आप जान जाते हो कि गर्मी की ऋतु बस आ ही पहुँची है। 31वैसे ही तुम जब इन बातों को घटते देखो तो जान लेना कि परमेश्वर का राज्य निकट है। 32मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें घट नहीं लेतीं, इस पीढ़ी का अंत नहीं होगा। 33धरती और आकाश नष्ट हो जाएँगे, पर मेरा वचन सदा अटल रहेगा।

सदा तैयार रहो

34"अपना ध्यान रखो, ताकि तुम्हारे मन कहीं डट कर पीने पिलाने और सांसारिक चिंताओं से जड़ न हो जायें। और वह दिन एक फंदे की तरह तुम पर अचानक न आ पड़े। 35निश्चय ही वह इस समूची धरती पर रहने वालों पर ऐसे ही आ गिरेगा। 36हर क्षण सतर्क रहो, और प्रार्थना करो कि तुम्हें उन सभी बातों से, जो घटने वाली हैं, बचने की शक्ति प्राप्त हो। और आत्म-विश्वास के साथ मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े हो सको।"

37प्रतिदिन वह मंदिर में उपदेश दिया करता था किन्तु, रात बिताने के लिए वह हर साँझ जैतून नामक पहाड़ी पर चला जाता था। 38सभी लोग भोर के तड़के उठते ताकि मंदिर में उसके पास जाकर, उसे सुनें।

यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

(मत्ती 26:1-5; 14:16; मरकुस 14:1-2; 10-11; यूहन्ना 11:45-53)

22 अब फ़सह नाम का बिना ख़मीर की रोटी का पर्व आने को था। 2उधर प्रमुख याजक तथा यहूदी धर्मशास्त्री, क्योंकि लोगों से डरते थे इसलिये किसी ऐसे रास्ते की ताक में थे जिससे वे यीशु को मार डालें।

यहूदा का षड़यन्त्र

3फिर इस्करियोती कहलाने वाले उस यहूदा में, जो उन बारहों में से एक था, शैतान आ समाया। 4वह प्रमुख याजकों और अधिकारियों के पास गया और उनसे यीशु को वह कैसे पकड़वा सकता है, इस बारे में बातचीत की। 5वे बहुत प्रसन्न हुए और इसके लिये उसे धन देने को सहमत हो गये। 6वह भी राज़ी हो गया और वह ऐसे अवसर की ताक में रहने लगा जब भीड़-भाड़ न हो और वह उसे उनके हाथों सौंप दे।

फ़सह की तैयारी

(मत्ती 26:17-25; मरकुस 14:12-21; यूहन्ना 13:21-30)

7फिर बिना ख़मीर की रोटी का वह दिन आया जब फ़सह के मेमने की बली देनी होती है। 8सो उसने यह कहते हुए पतरस और यूहन्ना को भेजा कि "जाओ और हमारे लिये फ़सह का भोज तैयार करो ताकि हम उसे खा सकें।"

9उन्होंने उससे पूछा, "तू हमसे उसकी तैयारी कहाँ चाहता है?" 10उसने उनसे कहा, "तुम जैसे ही नगर में प्रवेश करोगे तुम्हें पानी का घड़ा ले जाते हुए एक व्यक्ति मिलेगा, उसके पीछे हो लेना और जिस घर में वह जाये तुम भी चले जाना। 11और घर के स्वामी से कहना गुरु ने तुझसे पूछा है कि वह अतिथि-कक्ष कहाँ है जहाँ मैं अपने शिष्यों के साथ फ़सह पर्व का भोजन कर सकूँ। 12फिर वह व्यक्ति तुम्हें सीढ़ियों के ऊपर सजा-सजाया एक बड़ा कमरा दिखायेगा, वहीं तैयारी करना।"

13वे चल पड़े और वैसा ही पाया जैसा उसने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह भोज तैयार किया।

प्रभु का अन्तिम भोज

(मत्ती 26:26-30; मरकुस 14:22-26; 1 कुरिन्थियो 11:23-25)

14फिर वह घड़ी आयी तब यीशु अपने शिष्यों के साथ भोजन पर बैठा। 15उसने उनसे कहा, "यातना उठाने से पहले यह फ़सह का भोजन तुम्हारे साथ करने की मेरी प्रबल इच्छा थी। 16क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक परमेश्वर के राज्य में यह पूरा नहीं हो लेता तब तक मैं इसे दुबारा नहीं खाऊँगा।" 17फिर उसने कटोरा उठाकर धन्यवाद दिया और कहा, "लो इसे आपस में बाँट लो। 18क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ आज के बाद जब तक परमेश्वर का राज्य नहीं आ जाता मैं कैसा भी दाखरस कभी नहीं पिऊँगा।"

19फिर उसने थोड़ी रोटी ली और धन्यवाद दिया।
उसने उसे तोड़ा और उन्हें देते हुए कहा, "यह मेरी देह
है जो तुम्हारे लिये दी गयी है। मेरी याद में ऐसा ही
करना।" 20ऐसे ही जब वे भोजन कर चुके तो उसने
कटोरा उठाया और कहा, "यह प्याला मेरे उस रक्त
के रूप में एक नए वाचा का प्रतीक है जिसे तुम्हारे
लिए उँडेला गया है।"

यीशु का विरोधी कौन होगा?

21"किन्तु देखो, मुझे जो धोखे से पकड़वायेगा, उसका
हाथ यहीं मेज़ पर मेरे साथ है। 22क्योंकि मनुष्य का पुत्र
तो मारा ही जायेगा जैसा कि सुनिश्चित है किन्तु धिक्कार
है उस व्यक्ति को जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाएगा।"
23इस पर वे आपस में एक दूसरे से प्रश्न करने लगे,
"उनमें से वह कौन हो सकता है जो ऐसा करने जा
रहा है?"

सेवक बनो

24फिर उनमें यह बात भी उठी कि उनमें से सबसे
बड़ा किसे समझा जाये। 25किन्तु यीशु ने उनसे कहा,
"ग़ैर यहूदियों के राजा उन पर प्रभुत्व रखते हैं और वे
जो उन पर अधिकार का प्रयोग करते हैं, स्वयं को
लोगों का उपकारक कहलवाना चाहते हैं। 26किन्तु तुम
वैसे नहीं हो बल्कि तुममें तो सबसे बड़ा सबसे छोटे जैसा
होना चाहिये और जो शासक है उसे सेवक के समान
होना चाहिए। 27क्योंकि बड़ा कौन है: वह जो खाने की
मेज़ पर बैठा है या वह जो उसे परोसता है? क्या वही
नहीं जो मेज पर है किन्तु तुम्हारे बीच मैं वैसा हूँ जो
परोसता है।
28"किन्तु तुम वे हो जिन्होंने मेरी परीक्षाओं में मेरासाथ
दिया है। 29और मैं तुम्हें वैसे ही एक राज्य दे रहा हूँ जैसे
मेरे परम पिता ने इसे मुझे दिया था। 30ताकि मेरे राज्य
में तुम मेरी मेज़ पर खाओ और पिओ और इस्राएल की
बारहों जनजातियों का न्याय करते हुए सिंहासनों परबैठो।"

विश्वास बनाये रखो

(मत्ती 26:31-35;मरकुस 14:27-31;यूहन्ना 13:36 38)

31"शमौन, हे शमौन, सुन, तुम सब को गेहूँ की तरह
फटकने के लिए शैतान ने चुन लिया है। 32किन्तु मैंने
तुम्हारे लिये प्रार्थना की है कि तुम्हारा विश्वास न
डगमगाये और जब तू वापस आये तो तेरे बंधुओं की
शक्ति बढ़े।"
33किन्तु शमौन ने उससे कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे साथ
जेल जाने और मरने तक को तैयार हूँ।" 34फिर यीशु
ने कहा, "पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि आज तब तक
मुर्गा बाँग नहीं देगा जब तक तू तीन बार मना नहीं कर
लेगा कि तू मुझे जानता है।"

यातना झेलने को तैयार रहो

35फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैंने तुम्हें जब
बिना बटुए, बिना थैले या बिना चप्पलों के भेजा था तो
क्या तुम्हें किसी वस्तु की कमी रही थी?" उन्होंने
कहा, "किसी वस्तु की नहीं।" 36उसने उनसे कहा,
"किन्तु अब जिस किसी के पास भी कोई बटुआ है, वह
उसे ले ले और वह थैला भी ले चले। और जिसके पास
भी तलवार न हो, वह अपना चोगा तक बेच कर उसे
मोल ले ले। 37क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि शास्त्र का
यह लिखा मुझ पर निश्चय ही पूरा होगा:

'वह एक अपराधी समझा गया था' *यशायाह 53:12*

हाँ मेरे सम्बन्ध में लिखी गयी यह बात पूरी होने पर
आ रही है।" 38वे बोले, "हे प्रभु, देख, यहाँ दो तलवारें
हैं।" इस पर उसने उनसे कहा, "बस बहुत हैं।"

प्रेरितों को प्रार्थना का आदेश

(मत्ती 26:36-46; मरकुस 14:32-42)

39फिर वह वहाँ से उठ कर नित्य प्रति की तरह
जैतून–पर्वत चला गया। और उसके शिष्य भी उसके
पीछे पीछे हो लिये। 40वह जब उस स्थान पर पहुँचा तो
उसने उनसे कहा, "प्रार्थना करो कि तुम्हें परीक्षा में न
पड़ना पड़े।" 41फिर वह किसी पत्थर को जितनी दूर
तक फेंका जा सकता है, लगभग उनसे उतनी दूर
अलग चला गया। फिर वह घुटनों के बल झुका और
प्रार्थना करने लगा, 42"हे परम पिता, यदि तेरी इच्छा हो
तो इस प्याले को मुझसे दूर हटा किन्तु फिर भी मेरी
नहीं, बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो।" 43तभी एक स्वर्गदूत
वहाँ प्रकट हुआ और उसे शक्ति प्रदान करने लगा।
44उधर यीशु बड़ी बेचैनी के साथ और अधिक तीव्रता
से प्रार्थना करने लगा। उसका पसीना रक्त की बूँदों के
समान धरती पर गिर रहा था। 45और जब वह प्रार्थना
से उठकर अपने शिष्यों के पास आया तो उसने उन्हें
शोक में थक कर सोते हुए पाया। 46सो उसने उनसे
कहा, "तुम सो क्यों रहे हो? उठो और प्रार्थना करो कि
तुम किसी परीक्षा में न पड़ो।"

यीशु को बंदी बनाना

(मत्ती 26:47-56; मरकुस 14:43-50;
यूहन्ना 18:3-11)

47वह अभी बोल ही रहा था कि एक भीड़ आ जुटी।
यहूदा नाम का एक व्यक्ति जो बारह शिष्यों में से एक
था, उनकी अगुआई कर रहा था। वह यीशु को चूमने
के लिये उसके पास आया।
48पर यीशु ने उससे कहा, "हे यहूदा, क्या तू एक
चुम्बन के द्वारा मनुष्य के पुत्र को धोखे से पकड़वाने
जा रहा है"

49जो घटने जा रहा था, उसे देखकर उसके आसपास
के लोगों ने कहा, "हे प्रभु, क्या हम तलवार से वार
करें?" 50और उनमें से एक ने तो प्रमुख याजक के
दास पर वार करके उसका दाहिना कान काट ही
डाला।
51किन्तु यीशु ने तुरंत कहा, "उन्हें यह भी करने
दो।" फिर यीशु ने उसके कान को छू कर चंगा कर
दिया। 52फिर यीशु ने उस पर चढ़ाई करने आये प्रमुख
याजकों, मन्दिर के अधिकारियों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं
से कहा, "क्या तुम तलवारें और लाठियाँ ले कर किसी
डाकू का सामना करने निकले हो? 53मंदिर में मैं हर
दिन तुम्हारे ही साथ था, किन्तु तुमने मुझ पर हाथ नहीं
डाला। पर यह समय तुम्हारा है। अंधकार के शासन
का काल।"

पतरस का इन्कार

(मत्ती 26:57-58; मरकुस 14:53-54; 66-72; यूहन्ना 18:12-18; 25-27)

54उन्होंने उसे बंदी बना लिया और वहाँ से ले गये।
फिर वे उसे प्रमुख याजक के घर ले गये। पतरस कुछ
दूरी पर उसके पीछे पीछे आ रहा था। 55आँगन के बीच
उन्होंने आग सुलगाई और एक साथ नीचे बैठ गये।
पतरस भी वहीं उन्हीं में बैठा था। 56आग के प्रकाश में
एक दासी ने उसे वहाँ बैठे देखा। उसने उस पर दृष्टि
गढ़ाते हुए कहा, "यह आदमी तो उसके साथ भी था।"
57किन्तु पतरस ने इन्कार करते हुए कहा, "हे स्त्री,
मैं उसे नहीं जानता।" 58थोड़ी देर बाद एक दूसरे व्यक्ति
ने उसे देखा और कहा, "तू भी उन्हीं में से एक है।"
किन्तु पतरस बोला, "भले आदमी, मैं वह नहीं हूँ।"
59कोई लगभग एक घड़ी बीती होगी कि कोई और
भी बलपूर्वक कहने लगा, "निश्चय ही यह व्यक्ति उसके
साथ था। क्योंकि देखो यह गलील वासी भी है।"
60किन्तु पतरस बोला, "भले आदमी, मैं नहीं जानता
तू किसके बारे में बात कर रहा है।"
उसी घड़ी, वह अभी बातें कर ही रहा था कि एक
मुर्गे ने बाँग दी। 61और प्रभु ने मुड़ कर पतरस पर दृष्टि
डाली। तभी पतरस को प्रभु का वह वचन याद आया जो
उसने उससे कहा था: "आज मुर्गे के बाँग देने से पहले
तू मुझे तीन बार नकार चुकेगा।" 62तब वह बाहर चला
आया और फूट–फूट कर रो पड़ा।

यीशु का उपहास

(मत्ती 26:67-68; मरकुस 14:65)

63जिन व्यक्तियों ने यीशु को पकड़ रखा था वे उसका
उपहास करने और उसे पीटने लगे। 64उसकी आँखों
पर पट्टी बाँध दी और उससे यह कहते हुए पूछने लगे
कि "बता वह कौन है जिसने तुझे मारा?"
65उन्होंने उसका अपमान करने के लिए उससे और
भी बहुत सी बातें कहीं।

यीशु यहूदी नेताओं के सामने

(मत्ती 26:59-66; मरकुस 14:55-64; यूहन्ना 18:19-24)

66जब दिन हुआ तो प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों
समेत लोगों के बुज़ुर्ग नेताओं की एक सभा हुई। फिर वे
लोग उसे अपनी महा सभा में ले गये। 67उन्होंने पूछा,
"हमें बता क्या तू मसीह है?"
यीशु ने उनसे कहा, "यदि मैं तुमसे कहूँ तो तुम मेरा
विश्वास नहीं करोगे। 68और यदि मैं पूछूँ तो तुम उत्तर
नहीं दोगे। 69किन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान
परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठाया जायेगा।"
70वे सब बोले, "तब तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?"
71फिर उन्होंने कहा, "अब हमें किसी और प्रमाण
की आवश्यकता क्यों है? हमने स्वयं इसके अपने मुँह
से यह सुन तो लिया है।"

पिलातुस द्वारा यीशु से पूछताछ

(मत्ती 27:1-2; 11-14; मरकुस 15:1-5; यूहन्ना 18:28-38)

23 फिर उनकी सारी पंचायत उठ खड़ी हुई और
वे उसे पिलातुस के सामने ले गये। 2वे उस पर
अभियोग लगाने लगे। उन्होंने कहा, "हमने हमारे लोगों
को बहकाते हुए इस व्यक्ति को पकड़ा है। यह कैसर
को कर चुकाने का विरोध करता है और कहता है
यह स्वयं मसीह है, एक राजा।"
3इस पर पिलातुस ने यीशु से पूछा, "क्या तू यहूदियों
का राजा है?"
यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू ही तो कह रहा है, मैं
वही हूँ।"
4इस पर पिलातुस ने प्रमुख याजकों और भीड़ से
कहा, "मुझे इस व्यक्ति पर किसी आरोप का कोई
आधार दिखाई नहीं देता।"
5पर वे यह कहते हुए दबाव डालते रहे, "इसने समूचे
यहूदिया में लोगों को अपने उपदेशों से भड़काया है। यह
इसने गलील में आरंभ किया था और अब समूचा मार्ग
पार करके यहाँ तक आ पहुँचा है।"

यीशु का हेरोदेस के पास भेजा जाना

6पिलातुस ने यह सुनकर पूछा, "क्या यह व्यक्ति गलील
का है?" 7फिर जब उसको यह पता चला कि वह
हेरोदेस के अधिकार क्षेत्र के अधीन है तो उसने उसे
हेरोदेस के पास भेज दिया जो उन दिनों यरुशलेम में ही
था। 8सो हेरोदेस ने जब यीशु को देखा तो वह बहुत
प्रसन्न हुआ क्योंकि बरसों से वह उसे देखना चाह रहा

था। क्योंकि वह उसके विषय में सुन चुका था और
उसे कोई अद्भुत कर्म करते हुए देखने की आशा
रखता था। 9उसने यीशु से अनेक प्रश्न पूछे किन्तु यीशु
ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। 10प्रमुख याजक और
यहूदी धर्म शास्त्री वहीं खड़े थे और वे उस पर तीखे ढँग
के साथ दोष लगा रहे थे। 11हेरोदेस ने भी अपने सैनिकों
समेत उसके साथ अपमानपूर्ण व्यवहार किया और
उसकी हँसी उड़ाई। फिर उन्होंने उसे एक उत्तम चोगा
पहना कर पिलातुस के पास वापस भेज दिया। 12उस
दिन हेरोदेस और पिलातुस एक दूसरे के मित्र बन गये।
इससे पहले तो वे एक दूसरे के शत्रु थे।

यीशु को मरना होगा

(मत्ती 27:15-26; मरकुस 15:6-15;
यूहन्ना 18:39; 19:16)

13फिर पिलातुस ने प्रमुख याजकों, यहूदी नेताओं
और लोगों को एकसाथ बुलाया। 14उसने उनसे कहा,
"तुम इसे लोगों को भटकाने वाले एक व्यक्ति के रूप
में मेरे पास लाये हो। और मैंने यहाँ अब तुम्हारे सामने
ही इसकी जाँच पड़ताल की है और तुमने इस पर जो
दोष लगाये हैं उनका न तो मुझे कोई आधार मिला है
और 15न ही हेरोदेस को क्योंकि उसने इसे वापस हमारे
पास भेज दिया है। जैसा कि तुम देख सकते हो इसने
ऐसा कुछ नहीं किया है कि यह मौत का भागी बने।
16इसलिये मैं इसे कोड़े मरवा कर छोड़ दूँगा।" 17*

18किन्तु वे सब एक साथ चिल्लाये "इस आदमी को
ले जाओ। हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दो।" 19(बरअब्बा
को शहर में मार धाड़ और हत्या करने के जुर्म में जेल
में डाला हुआ था।)

20पिलातुस यीशु को छोड़ देना चाहता था, सो उसने
उन्हें फिर समझाया। 21पर वे नारा लगाते रहे, "इसे
क्रूस पर चढ़ा दो, इसे क्रूस पर चढ़ा दो।"

22पिलातुस ने उनसे तीसरी बार पूछा, "किन्तु इस
व्यक्ति ने क्या अपराध किया है? मुझे इसके विरोध में
कुछ नहीं मिला है जो इसे मृत्यु दण्ड का भागी बनाये।
इसलिए मैं कोड़े लगवाकर इसे छोड़ दूँगा।"

23पर वे ऊँचे स्वर में नारे लगा लगा कर माँग कर
रहे थे कि उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जाये। और उनके
नारों का कोलाहल इतना बढ़ गया कि 24पिलातुस ने
निर्णय दे दिया कि उनकी माँग मान ली जाये। 25पिलातुस
ने उस व्यक्ति को छोड़ दिया जिसे मार धाड़ और हत्या
करने के जुर्म में जेल में डाला गया था (यह वही था
जिसके छोड़ देने की वे माँग कर रहे थे।) और यीशु
को उनके हाथों में सौंप दिया कि वे जैसा चाहें, करें।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

(मत्ती 27:32-44; मरकुस 15:21-32;
यूहन्ना 19:17-27)

26जब वे यीशु को ले जा रहे थे तो उन्होंने कुरैन के
रहने वाले शमौन नाम के एक व्यक्ति को, जो अपने
खेतों से आ रहा था, पकड़ लिया और उस पर क्रूस
लाद कर उसे यीशु के पीछे पीछे चलने को विवश
किया। 27लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे चल रही
थी। इसमें कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी थी जो उसके लिये रो
रही थीं और विलाप कर रही थीं। 28यीशु उनकी तरफ
मुड़ा और बोला, "यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिये मत
बिलखो बल्कि स्वयं अपने लिये और अपनी संतान के
लिये विलाप करो। 29क्योंकि ऐसे दिन आ रहे हैं जब
लोग कहेंगे, 'वे स्त्रियाँ धन्य हैं, जो बाँझ हैं और धन्य हैं,
वे कोख जिन्होंने किसी को कभी जन्म ही नहीं दिया। वे
स्तन धन्य हैं जिन्होंने कभी दूध नहीं पिलाया।' 30फिर वे
पर्वतों से कहेंगे 'हम पर गिर पड़ो' और पहाड़ियों से
कहेंगे 'हमें ढक लो' 31क्योंकि लोग जब पेड़ हरा है,
उसके साथ तब ऐसा करते हैं तो जब पेड़ सूख जायेगा
तब क्या होगा?"

32दो और व्यक्ति, जो दोनों ही अपराधी थे, उसके
साथ मृत्यु–दण्ड के लिये बाहर ले जाये जा रहे थे।
33फिर जब वे उस स्थान पर आये जो खोपड़ी कहलाता
है तो उन्होंने उन दोनों अपराधियों के साथ उसे क्रूस
पर चढ़ा दिया। एक अपराधी को उसके दाहिनी ओर,
दूसरे को बाँई ओर। 34इस पर यीशु बोला, "हे परम
पिता, इन्हें क्षमा करना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये
क्या कर रहे हैं।" फिर उन्होंने पासा फेंक कर उसके
कपड़ों का बटवारा कर लिया।

35वहाँ खड़े लोग देख रहे थे। यहूदी नेता उसका
उपहास करते हुए बोले, 'इसने दूसरों का उद्धार किया
है। यदि यह परमेश्वर का चुना हुआ मसीह है तो इसे
अपने आप अपनी रक्षा करने दो।"

36सैनिकों ने भी आकर उसका उपहास किया। उन्होंने
उसे सिरका पीने को दिया 37और कहा, "यदि तू यहूदियों
का राजा है तो अपने आपको बचा ले।" 38उसके ऊपर यह
सूचना अंकित कर दी गई थी "यह यहूदियों का राजा
है।"

39वहाँ लटकाये गये अपराधियों में से एक ने उसका
अपमान करते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? हमें
और अपने आप को बचा ले।"

40किन्तु दूसरे ने उस पहले अपराधी को फटकारते
हुए कहा, "क्या तू परमेश्वर से नहीं डरता? तुझे भी
वही दण्ड मिल रहा है 41किन्तु हमारा दण्ड तो न्याय पूर्ण
है क्योंकि हमने जो कुछ किया, उसके लिये जो हमें
मिलना चाहिये था, वही मिल रहा है पर इस व्यक्ति ने
तो कुछ भी बुरा नहीं किया है!"

पद 17 लूका की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 17 जोड़ा गया है। "पिलातुस को फ़सह पर्व पर हर साल जनता के लिये कोई एक बंदी छोड़ना पड़ता था।"

42फिर वह बोला, "यीशु जब तू अपने राज्य में आये
तो मुझे याद रखना।"
43यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य कहता हूँ,
आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

यीशु का देहान्त

(मत्ती 27:45-56; मरकुस 15:33-41; यूहन्ना 19:28-30)

44उस समय दिन के बारह बजे होंगे तभी तीन बजे
तक समूची धरती पर गहरा अंधकार छा गया। 45सूरज
भी नहीं चमक रहा था। उधर मंदिर में परदे के फट
कर दो टुकड़े हो गये। 46यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा,
"हे परम पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों सौंपता हूँ।"
यह कहकर उसने प्राण छोड़ दिये।
47जब रोमी सेना नायक ने, जो कुछ घटा था, उसे
देखा तो परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए उसने कहा,
"यह निश्चय ही एक अच्छा मनुष्य था!"
48जब वहाँ देखने आये एकत्र लोगों ने, जो कुछ हुआ
था, उसे देखा तो वे अपनी छाती पीटते लौट गये। 49किन्तु
वे सभी जो उसे जानते थे, उन स्त्रियों समेत, जो गलील
से उसके पीछे पीछे आ रहीं थीं, इन बातों को देखने
कुछ दूरी पर खड़े थे।

अरमतियाह का यूसुफ़

(मत्ती 27:57-61; मरकुस 15:42-47; यूहन्ना 19:38-42)

50अब वहीं यूसुफ नाम का एक पुरुष था जो यहूदी
महासभा का एक सदस्य था। वह एक अच्छा धर्मी पुरुष
था। 51वह उनके निर्णय और उसे काम में लाने के
लिये सहमत नहीं था। वह यहूदियों के एक नगर
अरमतियाह का निवासी था। वह परमेश्वर के राज्य
की बाट जोहा करता था। 52यह व्यक्ति पिलातुस के पास
गया और यीशु के शव की याचना की। 53उसने शव
को क्रूस पर से नीचे उतारा और सन के उत्तम रेशों के
बने कपड़े में उसे लपेट दिया। फिर उसने उसे चट्टान
में काटी गयी एक कब्र में रख दिया, जिसमें पहले कभी
किसी को नहीं रखा गया था। 54वह शुक्रवार का दिन
था और सब्त का प्रारम्भ होने को था।
55वे स्त्रियाँ जो गलील से यीशु के साथ आई थी,
यूसुफ के पीछे हो लीं। उन्होंने वह कब्र देखी, और देखा
कि उसका शव कब्र में कैसे रखा गया। 56फिर उन्होंने
घर लौट कर सुंगधित सामग्री और लेप तैयार किये।
सब्त के दिन व्यवस्था के विधि के अनुसार उन्होंने
आराम किया।

यीशु का फिर से जी उठना

(मत्ती 28:1-10; मरकुस 16:1-8; यूहन्ना 20:1-10)

24 सप्ताह के पहले दिन बहुत सवेरे ही वे स्त्रियाँ
कब्र पर उस सुगंधित सामग्री को, जिसे उन्होंने
तैयार किया था, लेकर आयीं। 2उन्हें कब्र पर से पत्थर
लुढ़का हुआ मिला। 3सो वे भीतर चली गयीं किन्तु उन्हें
वहाँ प्रभु यीशु का शव नहीं मिला। 4जब वे इस पर
अभी उलझन में ही पड़ी थीं कि, उनके पास चमचमाते
वस्त्र पहने दो व्यक्ति आ खड़े हुए। 5डर के मारे उन्होंने
धरती की तरफ अपने मुँह लटकाये हुए थे। उन दो
व्यक्तियों ने उनसे कहा "जो जीवित है, उसे तुम मुर्दो के
बीच क्यों ढूँढ रही हो? 6वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा
है। याद करो जब वह अभी गलील में ही था, उसने
तुमसे क्या कहा था। 7उसने कहा था कि 'मनुष्य के
पुत्र का पापियों के हाथों सौंपा जाना निश्चित है। फिर
वह क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा और तीसरे दिन उसको
फिर से जीवित कर देना निश्चित है।" 8तब उन स्त्रियों
को उसके शब्द याद हो आये।
9वे कब्र से लौट आयीं और उन्होने ये सब बातें
उन ग्यारहों और अन्य सभी को बतायीं। 10ये स्त्रियाँ
थीं मरियम–मगदलीनी, योअन्ना और याकूब की
माता, मरियम। वे तथा उनके साथ की दूसरी स्त्रियाँ
इन बातों को प्रेरितों से कह रहीं थीं 11पर उनके शब्द
प्रेरितों को व्यर्थ से जान पड़े। सो उन्होंने उनका
विश्वास नहीं किया। 12किन्तु पतरस खड़ा हुआ और
कब्र की तरफ़ दौड़ आया। उसने नीचे झुक कर देखा
पर उसे सन के उत्तम रेशों से बने कफन के
अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई दिया था। फिर अपने मन
ही मन जो कुछ हुआ था, उस पर अचरज करता हुआ
वह चला गया।

इम्माऊस के मार्ग पर

(मरकुस 16:12-13)

13उसी दिन उसके शिष्यों में से दो, यरूशलेम से कोई
सात मील दूर बसे इम्माऊस नाम के गाँव को जा रहे
थे। 14जो घटनाएँ घटीं थीं, उन सब पर वे आपस में
बातचीत कर रहे थे। 15जब वे उन बातों पर चर्चा और
सोच विचार कर रहे थे तभी स्वयं यीशु वहाँ आ
उपस्थित हुआ और उनके साथ–साथ चलने लगा।
16किन्तु उन्हें उसे पहचानने नहीं दिया गया। 17यीशु ने
उनसे कहा, "चलते चलते एक दूसरे से ये तुम किन
बातों की चर्चा कर रहे हो?"
वे चलते हुए रुक गये। वे बड़े दुखी दिखाई दे रहे थे।
18उनमें से किलयुपास नाम के एक व्यक्ति ने उससे
कहा, "यरूशलेम में रहने वाला तू अकेला ही ऐसा
व्यक्ति होगा जो पिछले दिनों जो बातें घटी हैं, उन्हें नहीं
जानता।"
19यीशु ने उनसे पूछा, "कौन सी बातें?" उन्होंने उससे
कहा, "सब नासरी यीशु के बारे में हैं।
यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने जो किया और कहा
उससे परमेश्वर और सभी लोगों के सामने यह दिखा

दिया कि वह एक महान् नबी था। 20और हम इस बारे में बातें कर रहे थे कि हमारे प्रमुख याजकों और शासकों ने उसे कैसे मृत्यु दण्ड देने के लिए सौंप दिया। और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। 21हम आशा रखते थे कि यही वह था जो इस्राएल को मुक्त कराता। और इस सब कुछ के अतिरिक्त इस घटना को घटे यह तीसरा दिन है। 22और हमारी टोली की कुछ स्त्रियों ने हमें अचम्भे में डाल दिया है। आज भोर के तड़के वे कब्र पर गयीं। 23किन्तु उन्हें उसका शव नहीं मिला। वे लौटीं और हमें बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया है जिन्होंने कहा था कि वह जीवित है। 24फिर हम में से कुछ कब्र पर गये और जैसा स्त्रियों ने बताया था, उन्होंने वहाँ वैसा ही पाया। उन्होंने उसे नहीं देखा।"

25तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम कितने मूर्ख हो और नबियों ने जो कुछ कहा, उस पर विश्वास करने में कितने मंद हो। 26क्या मसीह के लिये यह आवश्यक नहीं था कि वह इन यातनाओं को भोगे और इस प्रकार अपनी महिमा में प्रवेश करे?" 27और इस तरह मूसा से प्रारम्भ करके सब नबियों तक और समूचे शास्त्रों में उसके बारे में जो कहा गया था, उसने उसकी व्याख्या करके उन्हें समझाया।

28वे जब उस गाँव के पास आये, जहाँ जा रहे थे, यीशु ने ऐसे बर्ताव किया, जैसे उसे आगे जाना हो। 29किन्तु उन्होंने उससे बलपूर्वक आग्रह करते हुए कहा, "हमारे साथ रुक जा क्योंकि लगभग साँझ हो चुकी है और अब दिन ढल चुका है।" सो वह उनके साथ ठहरने भीतर आ गया।

30जब उनके साथ वह खाने की मेज पर था तभी उसने रोटी उठाई और धन्यवाद किया। फिर उसे तोड़ कर जब वह उन्हें दे रहा था 31तभी उनकी आँखें खोल दी गयी और उन्होंने उसे पहचान लिया। किन्तु वह उनके सामने से अदृश्य हो गया। 32फिर वे आपस में बोले, "राह में जब वह हमसे बातें कर रहा था और हमें शास्त्रों को समझा रहा था तो क्या हमारे हृदय के भीतर आग सी नहीं भड़क उठी थी?"

33फिर वे तुरंत खड़े हुए और वापस यरूशलेम को चल दिये। वहाँ उन्हें ग्यारहों प्रेरित और दूसरे लोग उनके साथ इकट्ठे मिले, 34जो कह रहे थे, "हे प्रभु, वास्तव में जी उठा है। उसने शमौन को दर्शन दिया है।"

35फिर उन दोनों ने राह में जो घटा था, उसका ब्योरा दिया और बताया कि जब उसने रोटी के टुकड़े लिये थे, तब उन्होंने यीशु को कैसे पहचान लिया था।"

यीशु का अपने शिष्यों के सामने प्रकट होना

(मत्ती 28:16-20; मरकुस 16:14-18; यूहन्ना 20:19-23; प्रेरितों के काम 1:6-8)

36अभी वे उन्हें ये बातें बता ही रहे थे कि वह स्वयं उनके बीच आ खड़ा हुआ और उनसे बोला, "तुम्हें शान्ति मिले।" 37किन्तु वे चौंक कर भयभीत हो उठे। उन्होंने सोचा जैसे वे कोई भूत देख रहे हों।

38किन्तु वह उनसे बोला, "तुम ऐसे घबराये हुए क्यों हो? तुम्हारे मनों में संदेह क्यों उठ रहे हैं? 39मेरे हाथों और मेरे पैरों को देखो। मुझे छुओ, और देखो कि किसी भूत के माँस और हड्डियाँ नहीं होतीं और जैसा कि तुम देख रहे हो कि, मेरे वे हैं।"

40यह कहते हुए उसने हाथ और पैर उन्हें दिखाये। 41किन्तु अपने आनन्द के कारण वे अब भी इस पर विश्वास नहीं कर सके। वे भौंचक्के थे सो यीशु ने उनसे कहा, "यहाँ तुम्हारे पास कुछ खाने को है" 42उन्होंने पकाई हुई मछली का एक टुकड़ा उसे दिया। 43और उसने उसे लेकर उनके सामने ही खाया।

44फिर उसने उनसे कहा, "ये बातें वे हैं जो मैंने तुमसे तब कहीं थीं, जब मैं अभी तुम्हारे साथ था। हर वह बात जो मेरे विषय में मूसा की व्यवस्था में, नबियों की पुस्तकों तथा भजनावलियों में लिखी हैं, पूरी होनी ही है। 45फिर पवित्र शास्त्रों को समझने के लिये उसने उनकी बुद्धि के द्वार खोल दिये। 46और उसने उनसे कहा, "यह वही है, जो लिखा है कि मसीह यातना भोगेगा और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। 47और पापों की क्षमा के लिए मनफिराव का यह संदेश यरूशलेम से आरंभ होकर सब देशों में प्रचारित किया जाएगा। 48तुम इन बातों के साक्षी हो। 49और अब मेरे परम पिता ने मुझसे जो प्रतिज्ञा की है, उसे मैं तुम्हारे लिये भेजूँगा। किन्तु तुम्हें इस नगर में उस समय तक ठहरे रहना होगा, जब तक तुम स्वर्ग की शक्ति से युक्त न हो जाओ।"

यीशु की स्वर्ग को वापसी

(मरकुस 16:19-20; प्रेरितों के काम 1:9-11)

50यीशु फिर उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया। और उसने हाथ उठा कर उन्हें आशीर्वाद दिया। 51उन्हें आशीर्वाद देते देते ही उसने उन्हें छोड़ दिया और फिर उसे स्वर्ग में उठा लिया गया। 52तब उन्होंने उसकी आराधना की और असीम आनन्द के साथ वे यरूशलेम लौट आये। 53और मन्दिर में परमेश्वर की स्तुति करते हुए वे अपना समय बिताने लगे।

Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at www.bibleleague.org/donate or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.

Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)
© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

> Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.

Bible League International
1 Bible League Plaza
Crete, IL 60417, USA
Phone: 866–825–4636
Email: permissions@bibleleague.org
Web: www.bibleleague.org

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0 **B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2**
B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6 **B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8**

Free downloads: www.bibleleague.org/downloads